Aloka Kapoor

ॐ

दो शब्द

मेरे भगवन श्री गोदावरी भगवान को,

सभी भक्तों का कोटि कोटि प्रणाम,

सब धरती कागज करूँ, लेखनी सब बनराय।
सात समुद्र मसी करूँ, गुरू गुण लिखा न जाय।।
प्रेम सुराही सो पिये जो शीश दक्षिणा देय।
लोभी सीस न दे सके क्या नाम प्रेम का लेय।।
सब साधन का मूल है, दुर्लभ सत्गुरू प्रेम।
प्रेम बिना थोथे सभी, जप-तप, व्रत-नेम।।

भजन प्रभु की कृपा से भक्तों
के जीवन के अनुभवों में हृदय से निकले हुए उद्गार हैं।
समस्त भक्तों की ओर से प्रभु के चरणो में
भजन पुष्प समर्पित हैं।

आनन्द ही आनन्द

गुरू दीदी एवम्
समस्त भक्त गण

गुरू स्तुतिः

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु, गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परंब्रह्म, तस्मैः श्री गुरुवे नमः ।।1।।
ध्यान मूलं गुरोः मूर्ती, पूजा मूलं गुरोः पदम्।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरोः कृपा ।।2।।
चैतन्य शाश्वतं शान्तं, व्योमातीतं निरंजनम्।
नाद बिन्दु कलातीतं, तस्मैः श्री गुरूवे नमः ।।3।।
अखण्ड मण्डला कारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्तिर्शत येन, तस्मैः श्री गुरूवे नमः ।।4।।
अज्ञान तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन शलाकयाः।
चक्षु रून्मीलितं येन, तस्मैः श्री गुरूवे नमः ।।5।।
बन्दे बोध मयं नित्यं, गुरूं शंकर रूपिणम्।
यमाश्रितो हिं वक्रोऽपि, चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ।।6।।
अखण्डानन्द वोधाय, शिष्य सन्ताप हारिणे।
सच्चिदानन्द रूपाय, रामाय गुरूवे नमः ।।7।।
ब्रह्मानन्दं परम सुखदं, केवलं ज्ञान मूर्तिम्,
द्वन्दातीतं गगन सदृशं तत्व मस्यादि लक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमल मचलं, सर्वधी साक्षि भूतम्,
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरूं तन्नमामि ।।8।।
अज्ञान मूल हरणं, जन्म कर्म निवारणम्।
ज्ञान वैराग्य सिद्धयर्थं, गुरोर्पादोदकं पिवेत् ।।9।।

अनुक्रमणिका

भजन	पेज नं0
अ	
अब किसी महफिल में जाने की हमें फुरसत नहीं............	1
अपनी हस्ती जो तेरे कदमों में............................	1
अमर आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ............................	2
अब सौंप दिया इस जीवन का	3
अब मोहे राम भरोसा तेरा..................................	4
अब दे दो गीता ज्ञान..	5
अरे ओ शोख कलियाँ मुस्कुरा देना........................	5
अगर है शौक मिलने का....................................	6
अन्दर सत्य गुराँदा डेरा अन्दर ज्योति जलदी...............	7
अरे लोंगो तुम्हें क्या है या वो जाने........................	7
आ	
आरती सत्गुरू प्यारे की...................................	8
आपकी इनायतें आपके करम................................	9
आत्मरस को पीने वाले रस तो पिला दे.....................	10
आनन्द-स्त्रोत बह रहा......................................	10
आवाज देकर प्रभु न बुलाओ................................	11
आता है इस जहान में रहबर कभी-कभी....................	12
आया जो तेरे दर पे भगवन दीदार को.....................	13
आँखें बंद करूँ या खोलूँ...................................	13
आज दिन आया है जो खुशियाँ लाया है....................	14
आत्मा के आनन्द का कोई रूप नहीं है.....................	14

आपकी हम पर दया भगवन अगर हो जायेगी.............. 15
आखिर उस दर पर आ पहुँचे.................................. 16
आए है शरण तेरी गुरूदेव कृपा कर दो....................... 16
आओ गुरू जी हमारे आँगनवा............................... 17

इ

इसे दुनियावालों कहानी न समझो........................... 18
इस माटी में सुन मेहरबाँ....................................... 19
इस दुनिया में सबसे ऊँचा ये दरबार......................... 20
इन्सान होके तूने कुछ भी समझ न पाया.................... 21
इक प्रेम की गंगा बहती है.................................... 22

ई

ईश्वर जो कुछ करता है, अच्छा करता है.................. 22

उ

उठ जाग-जाग बन्दे गुरू का भजन तू कर ले............... 23

ए

एक राम के दो-दो रूप मिले.................................. 24
एक तुम्हीं आधार.. 25

ऐ

ऐसी करी गुरूदेव दया मेरा मोह.............................. 25

ओ

ओ रे मनवा तोहे चिन्ता क्यों सताती है...................... 26

क

कहे किससे सुनाएँ क्या चखा जिसने वही जाने............ 27
कुछ न बिगड़ेगा तेरा सत्गुरू शरण.......................... 27
क्या अनोखी शान है.. 28
कोई जगह न तुमसे खाली है................................ 29
कर बन्दे विश्वास रे.. 29
कोई कहे गोविन्द कोई गोपाला............................. 30
कर ले गुरू से प्यार अमृत बरसेगा......................... 31
कहीं भी चैन जो लेने न दे.................................. 32
क्यों दिल को फँसाये तू.. 32
कुछ लेना न देना मगन रहना............................... 33
कुछ गिनती की श्वाँसे हैं...................................... 33
कोई ऐसी आग लगा दे रे.................................... 34
कोई जानेगा जाननहारा...................................... 35

ख

खुश-खुश बैठे हो जरूर कोई बात है........................ 36
खिल गया, खिल गया.. 36
खोना कभी नहीं खोना... 37
खुशबू बिखेरता हुआ किरदार आप का...................... 38
खुश है तेरी कृपा से हम आज................................ 39

ग

गुरूवर की जो याद आये.. 39
गुरू जी मेरे मन को बना दो शिवाला.......................... 40
गुरू नाम में रहता मस्त सदा....................................41
गुरू ने जहाँ-जहाँ ज्योति जगाई है..............................42
गुरू शरण में आओगे तो समझोगे............................ 43
गुरू की कृपा है सब पे समान.....................................44
गुरूदेव कृपा जब करते हैं...45
गुरू वचनों को रखना.. 45
गुरूदेव के सद्ज्ञान ने दीवाना.................................. 46
गाफिल विचार मन में हरिनाम क्यों बिसारा................... 47
गुरू ब्रह्मज्ञान वाले तीन मार.................................... 48
गुरूवर तेरे उपकार घनेरे..49
गुरू ऐसो जियो में समाय गयो रे............................. 49
गुरूद्वारे में जादू हमारे सजनी.....................................50
गुरू जी मेरी लगी लगन मन तोड़ना..............................51
गाए जा गाए जा भगवान की महिमा........................... 51
गुरूदेव मुझको देना सहारा..................................... 52
गुरू के दर पर आते रहे... 53
गुरू हर मोड़ पे रहमत को लुटा देते है....................... 54
गुरू दर्शन को हम चले आयें.................................. 55
गुरू पार करो मेरी नइया....................................... 55
गुरूदवे दियना बार रे.. 56
गुरू पइयाँ पड़ूँ नाम का लखाय दियो रे.................... 56

घ

घनश्याम तेरी मुरली.. 57
घट-घट में बसे भगवान...................................... 57
घनश्याम तुम्हें ढूँढने जायें कहाँ-कहाँ....................... 58

च

चलो गुरू ज्ञान मार्ग में.. 59
चाहे पास हो चाहे दूर हो....................................... 60
चरणों में तेरे जीना मरना...................................... 60
चाहे सुख दो चाहे दुःख दो..................................... 61

ज

जुगल सरकार हैं सिर पर...................................... 62
जो ज्ञान रूप अमरित बरसाये.................................. 62
जो अर्जी लगे गुरूद्वार.. 63
जो शरण गुरू की आये.. 63
जय-जय गुरू की मनाते चलो................................. 64
जो भी आया बिक गया मोहन................................. 65
जीवन की डोर अब तो कर दी................................ 66
जरा जीव विचारों मन में...................................... 67
जाग रे मुसाफिर तेरा वक्त.................................... 68
जिसके हृदय में हरि सुमिरन होगा.......................... 68
जहाँ तक जाती दृष्टि है...................................... 69
जीवन की घड़ियाँ... 70
जर्रे-जर्रे में है झाँकी भगवान की............................. 71

जागो रे जिन जागना अब जागन की बार.................. 72
जिसने जीवन दिया उसने सब कुछ दिया.................. 73
जब से मिले मेरे सत्गुरू जी................................ 74
जग असार में सार रसना हरि-हरि बोल................. 74
जग सपना है नहीं अपना है................................ 75
जरा तो इतना बता दो भगवन............................. 75
(आरती) ज्योति से ज्योति जगाओं मेरे सत्गुरू......... 77
जुग-जुग जिये रे.. 78
जो है वो भुलाने के काबिल नहीं है......................... 79
जो मिलना है भगवान से तो............................... 79
जिन्होंने तैरना सींखा वही भव पार.......................... 80
जिन्दगी प्यार का गीत है................................... 80
जब अपने घर में खुदा ही है 81
जग का करतार है.. 82

झ

झींनी रे झींनी.. 82

ड

डूबतों को बचा लेने वाले...................................... 83

त

तेरी महफिल के दीवाने.. 84
तूने खोला न दर तो बता साँवरे............................ 84
तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार.................................. 85
तुम्हारा प्यार मिल जाए... 86
तुझे कैसे भूल जाऊँ... 87
तुम अपने हो तो जमाना अपना है.......................... 87
तेरे हाथ मे है जीवन बनाना.................................. 88
तेरी भोली भाली सूरत को.................................... 89
तेरा हाथ जिसने पकड़ा.. 90-91
तू तो बेमिसाल है सत्गुरू..................................... 92
तेरी साधना ही मेरी जिन्दगी हो............................ 92
तेरी चौखट पर सर रख दिया है............................ 93
तेरा दर्श पाने को जी चाहता है............................. 94
तेरे नाम का आसरा.. 94
तू अपने घर में जरूर आ जा................................ 95
तेरी शरण में जो आ गया..................................... 96
तेरा नाम सत्गुरू जी है सुखकारी........................... 97
तू-तू न रहे मैं-मैं न रहूँ.. 98
तेरे नाम की लौ कुछ ऐसी लागी............................ 98
तेरे फूलों से भी प्यार, तेरे काँटों से प्यार............... 99
तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना............................ 100
तेरा मेरा प्यार अमर फिर क्यों मुझको.................... 101
तुम मेरे जीवन के धन हो..................................... 102
तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है........................... 102
तेरे चरणां विच रहां मैं.. 103
तेरे करम से हे दयालु कौन-सी शय मिली नही.......... 103
तेरी इको ही झलक मेरे....................................... 104
तुमने मुझको प्यार किया है, इतना कौन.................. 105

तेरा प्यार खींचकर लाया ओ साँवरिया.................. 105
तू ही सागर तू ही किनारा................................ 106
तू जहाँ-जहाँ रहेगा.. 107
तेरी हीरा जैसी श्वाँसा.................................... 107

द

दूर कर दे जो दीन और ईमान से........................ 108
देखा दुनिया का झूठा झमेला............................ 109
दरबार में सच्चे सत्गुरू के............................. 110
दस्तूरे मोहब्बत बस है यहीं............................. 111
दुःखों से अगर चोट खाई न होतीं....................... 112
दानी मेरे गुरू जैसा दानी कहाँ पाओगे.................... 112-113
दाता तेरा नाम अमर फिर क्यों मुझको दुनिया का डर....... 114
दिया है तूने आतम चोला.................................. 115
दुनिया में आके बन्दे भूला तू अपना करार है.................. 115
देखों सन्तों दिन सुहाना आ गया............................ 116
दाता तेरे चरणों की गर धूल................................ 116
दिल में गुरू के ज्ञान का.................................. 117

न

ना मिलता सुख मेरे दर पे................................. 118
ना कर तू अब तेरा मेरा.................................. 119
ना मैं मन ही रहा, न मैं तन ही रहा....................... 120
नदिया न पिये कभीं अपना जल.......................... 121
निगाहों में तुम हो ख्यालों में तुम हो....................... 122
निंदिया वाही के घर जइयो................................ 122
न जाने इन्हें हम क्या समझे.............................. 123
नूर देखा है जब से तेरा सत्गुरू............................ 124

प

प्रेम प्याला गुरू दिया रे साधो............................. 124
प्यासा कोई मुसाफिर भूले से दर पे आया.................. 125
पूरा सत्गुरू मिला... 126
पी लेने दो सत्गुरू स्वामी जी.............................. 127
पायो जी मैंने राम रतन धन.............................. 129
पिला दे ओ शाकी.. 129
पीती-पीती-पीती अज मैं पीती ऐ.......................... 130
प्रभु-प्रेम-रस को पिये जा पिये जा........................ 131
प्रेमी तू गुरू संग प्रीत लगाना............................. 132
प्रभु तेरा-मेरा कभी भी न................................ 132
पियो रे राम रस है कोई प्यासा........................... 133
पितु-मातु सहायक स्वामी सखा.......................... 134
पाया आतम का दीदार................................... 135
पूरन माही रहना साधो.................................. 135
प्रेम जब अनन्त हो गया................................. 136

फ

फिक्र से वहीं खाली होता है.............................. 137

ब

बेला अमरित भया आलसी से रहा........................ 137
बड़ा ही कठिन है मनुष्य जन्म पाना........................ 138
बहुत है प्रभु हम पे तुम्हारा करम........................ 139
बड़ी शिद्दत से सत्गुरू जी........................ 140
बनवारी रे जीने का सहारा तेरा नाम रे........................ 141
बार-बार वन्दना हजार बार वन्दना........................ 142
बड़े भाग्य तेरे जो नर तन पाया........................ 142
बदला तेरी रहमतों का दे ना पायें हम........................ 143

भ

भगत भगवान के संकट........................ 144
भीतर है सखा तेरा सखा........................ 144
भगवान मेरी नैय्या उस पार लगा देना........................ 145
भला कैसा सुहावन दिन........................ 146
भला करो भगवान सबका भला करो........................ 147
भागों से मिला है संतों का मेला........................ 147
भरोसा जिसी का भगवान में........................ 148
भव सागर से तारे गुरू तेरो वचना........................ 149

म

मेरी जिन्दगी में अंधेरा भरा था........................ 149
मैंने ऐसा सत्गुरू पाया........................ 150
मेरे मन लगन लगा श्री सत्गुरू........................ 151
मेरी आत्मा हो परमात्मा हो........................ 152
मेरा सत्गुरू प्यारा मीत है........................ 153
मन की तरंग मोड़ लो बस........................ 154
मिलें हैं सत्गुरू जबसे आता न दुःख........................ 155
मैं आप ब्रह्मानंद मैनूँ वेद........................ 155
मेरी रसना से प्रभु तेरा नाम निकले........................ 156
मेरा सत्चित्त आनन्द रूप........................ 157
मेरे सत्गुरू तेरी नौकरी........................ 158
मैं दुनिया के तापों से बच गयो रे........................ 159
मन मस्त हुआ........................ 160
मुझे मेरी मस्ती........................ 160
मेरी आत्मा तुझको किसी का न डर........................ 161
मेरे बाँके बिहारी लाल........................ 162
मुझे मेरी मस्ती कहाँ लेकर आई........................ 162
मन का अंधेरा मिटाता वो है........................ 163
मोहन बन गए नर से नारी........................ 164
मेरे शाकिया बता दे........................ 165
मेरे सत्गुरू रमइया........................ 165
मेरे सत्गुरू प्यारे ने........................ 166
मैं ढूँढू साँई का द्वारा........................ 167
मेरी नइया के सत्गुरू खिवइयाँ........................ 167
मन लागो मेरो यार फकीरी में........................ 168
मुझे ऐसा बना दे मेरे प्रभु........................ 169
तेरे गुरूवर तुम ही हो सहारा........................ 170
मुझे मिल गया मन का मीत........................ 170
मेरे प्रभु जानते है बात........................ 171

मन काहे तू न धीर धरे........ 172
मालिक की मर्जी के आगे........ 172
मैं तो बसूँ तेरे मन में........ 173
मेरे मोहन तेरा मुस्कुराना भूल जाने के........ 173
मैं तो आई फकत तेरे दीदार को........ 174
मेरी सूरत की डोर सदा........ 175
मोहन तुम्हारा ये धन्धा है पुराना........ 176
मिलता है बड़े भाग्य से नर-तन........ 176
मुझे भगवान वह दिल दो कि 177
मेरा प्यार भी तू है........ 177
मजा है जो फकीरी में........ 178
मेरे सत्गुरू पकड़ी बाँह........ 178
मैं तो उन संतन का दास........ 179
मेरे मोहन मेरे कर्मो की तुम........ 179
मेरे तो ऐसे सत्गुरू है जो मंजिल........ 180
मिल गया मुझकों गुरू अवतार रे........ 180
मिले सत्गुरू जी दिल बहार........ 181
मिलता है सच्चा सुख केवल........ 181
मैंने आसरा तेरा ले लिया........ 182
मत भूलो श्री गुरू नाम को........ 183

य

ये दुनिया बनाना और........ 184
यह गर्व भरा मस्तक........ 185
ये मती कहाँ से पाई साधो........ 186
ये तन-मन-जीवन सुलग उठे........ 186
यहाँ-वहाँ सारे जहाँ में........ 187
ये अवसर बार-बार नहीं आये........ 188
ये मस्तों की महफिल में........ 189
यूँ भला आप मोहन........ 190
ये भेंद सनम मुझे आज मिला........ 190
ये दर है ऐसे दाता का........ 191
ये जग दिवानों की बस्ती........ 191
ये मोहब्बत की बातें है........ 192

र

राम का नाम लेकर जो मर जायेंगे........ 193
रोम-रोम मे गुरू बसा लो........ 194
राम-रस बरसे रे मनवा........ 194
राम-रस बरसों रे आज........ 195
राम-नाम की नइया लेकर........ 196
रमता राम रमो मोरे जिया........ 196
रामा-रामा रटते-रटते........ 197
रामधुन में हो जा मतवाला........ 198
रंग देना रंग देना........ 199
राम नाम के साबुन........ 199
रहमत से सत्गुरू जी गुजारा है........ 200
रिमझिम बरसे अमृत धारा........ 201

ल

लगन सत्गुरू से लगा बैठे.............................. 202
लोभी तुम तो फँस गये.............................. 202
लुट रहा, लुट रहा.............................. 203
ले लो राम-नाम संसारी.............................. 203
लगी वृन्दावन में एक दिन अदालत.................... 204
लीला लगी है राम भजन.............................. 204

व

वेदों के मीठे वाक्य है.............................. 205
वो जुबाँ कहाँ से लाऊँ.............................. 206
व्यर्थ चिन्तित हो रहे हो.............................. 207
वैसे तो नशे अनेक है.............................. 208

श

शुकराना मेरे सत्गुरू.............................. 209
शमा जलती है परवाने.............................. 210
श्याम तुम होगे शमा.............................. 211
शुक्रिया है प्यार तेरा शुक्रिया.............................. 211
शरण सत्गुरू की ले.............................. 212
शुकराना, शुकराना.............................. 212

स

सत्गुरू तुम हो मेरे कुम्हार.............................. 213
सारे जहाँ के मालिक तेरा ही.............................. 214
सत्गुरू को पाते हैं वही.............................. 215
सत्गुरू से नेह लगा दे.............................. 215
सत्गुरू का दरबार है.............................. 216
सत्गुरू कमाल हो.............................. 217
सुख भी मुझे प्यारे है.............................. 218
सुरता चढ़ गई रे अटरिया.............................. 218
सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिए................ 219
सत्गुरू से लगन मेरी लागी.............................. 220
साए में तुम्हारे हैं.............................. 221
संसार के जीवों पर आशा.............................. 222
सत्गुरू बिन जो हरि मिल जायें.............................. 223
साधो चुप का है संसार.............................. 223
सत्गुरू है प्रेम वाला.............................. 224
सत्गुरू मिले मेरे सारे.............................. 225
संत जगत में आते हैं.............................. 226
सत्य यथार्थ बात न मनियो.............................. 227
सारे नामों में गुरू नाम 227
सोई बड़े भाग्य जो सत्गुरू.............................. 228
सत्गुरू पूरे देव मिले.............................. 229
सफल हुआ है उन्हीं का जीवन.............................. 229
सूरज की गर्मी से जलते हुए.............................. 230
सत्गुरू हो तोरी तिरछी नजरिया.............................. 231
सत्गुरू रहतें है सब घट अन्दर.............................. 231-232
सुख सम्पत्ति सब दीन्हा.............................. 233
सत्गुरू प्यारे ने हमको बचाया है.............................. 233

सच्चिदानन्द है तू ब्रह्मानन्द है.......................... 234
सुमिरन कर ले रे मना................................ 235
सवाली सबके आगे हाथ.............................. 236

ह

हे जगतपिता! हे जगदाता!............................ 236
हर घड़ी ये करामात होती नही........................ 237–238
हर हाल में प्रभु का शुकराना........................ 239
हम निज आनन्द में मस्त............................. 240
हरी को बिसारों न हरी............................... 241
हैं धन्य जगत में वो प्रेमी.......................... 241
हम सब मिलके आए दाता तेरे दरबार............... 242
हरी नाम के हीरे मोती.............................. 243
होवे सच्चा प्यार क्यों.............................. 244
हर वक्त हँसी... 245
हम प्रेम नगर में रहते है............................ 245
हे गुरू! हे दयालु! मेरे स्वामी....................... 246
होंगे किसी के लाखो................................ 247
हे जगदाता विश्वविधाता............................ 248
हर श्वाँस में हो सुमिरन............................ 248
हम अपनी धुन में गाते.............................. 249
हमारे गुरू मिले ब्रह्मज्ञानी.......................... 250
हुआ तेरी उलफत में मन मतवाला.................. 251
हे मेरे प्यारे गुरूजी................................ 252
हमारे गुरू ऐसा गहना दिया........................ 252
हृदय में बारम्बार मिले हर पल........................ 253
हम लाये है ब्रह्माकार वृति............................ 254
हम अपनी झाँकी देख चुके है........................ 254
हे गोविन्द्र राखो शरण अब तो....................... 255
हम आये है शरण में गुरूदेव आपकी.............. 256
हे प्रभु! हे प्रभु! हम को तेरी कसम................ 256–257
हम तेरी अदा पर फिदा हो गयें.................... 258
हमसा जहाँ में कहाँ किसका नसीब है........... 259

ज्ञ

ज्ञान मिला भगवान मिला........................... 259
ज्ञान मिल गया है.................................. 260

श्र

श्री लखनऊ धाम की धरती पर..................... 261

卐 जय सतगुरू की 卐

1

अब किसी महफिल में जाने की हमें फुर्सत नहीं।
दुनिया वालों को मनाने की हमें फुर्सत नहीं।।
एक दिल है जिसमें मेरा बस गया है साँवरा।
अब कहीं दिल को लगाने की हमें फुर्सत नहीं।।
दुनिया वालों को मनाने ....
ये जो आँखें हैं हमारी मिल गई हैं श्याम से।
अब कहीं आँखें मिलाने की हमें फुर्सत नहीं।।
दुनिया वालों को मनाने ....
एक सर है झुक गया जो आपके दरबार में।
अब कहीं सर को झुकाने की हमें फुर्सत नहीं।।
दुनिया वालों की मनाने................................
बेवफा दुनिंया ये हमसे पूछती है क्या हुआ।
अब किसी को कुछ बताने की हमें फुर्सत नहीं।।
दुनिया वालों को मनाने................................
अब किसी महफिल जाने ....

2

अपनी हस्ती जो तेरे कदमों में मिटा देते हैं।
तुमको हर तौर अदाओं से मना लेंते हैं।।
ऐसी आवाज में कहते हैं कि तुम आ जाओ।
तुमको आने को मजबूर बना देते हैं।।

अपनी हस्ती ....
बड़े होशियार हैं ये भक्त तेरे क्या कहिये।
जब ये रोते हैं तो तुमको भी रूला देते हैं।।
अपनी हस्ती ....
कोई रंजो गम या मुसीबत आ जाए इन पर।
तेरी सौगात समझ सर पे उठा लेते हैं।।
उपनी हस्ती ....

3

अमर आत्मा सच्चिदानंद मैं हूँ।
शिवोहम, शिवोहम, शिवोहम, शिवोहम।।
अखिल विश्व का जो परमात्मा है,
सभी प्राणियों में वही आत्मा है।
वही आत्मा सच्चिदानंद मैं हूँ।।
शिवोहम ----------------
2) जिसे शस्त्र काटे न अग्नि जलाए,
गलाए न पानी मृत्यु मिटाए।
वही आत्मा सच्चिदानंद मैं हूँ।।
शिवोहम ----------------
3) अजर अमर जिसको वेदों ने गाया,
यही ज्ञान अर्जुन को हरि ने सुनाया।

वही आत्मा सच्चिदानंद मैं हूँ।।

शिवोहम -------------

4) अमर आत्मा है मरणशील काया,

सभी प्राणियों के हृदय में समाया।

वही आत्मा सच्चिदानंद मैं हूँ।।

शिवोहम -----------

5) जो व्यापक है कण-2 में है वास जिसका,

नहीं तीन कालों में है नाश जिसका।

वही आत्मा सच्चिदानंद मैं हूँ।।

शिवोहम ----------------

6) है तारों सितारों में आभास जिसका,

है सूरज और चन्दा में प्रकाश जिसका।

वही आत्मा सच्चिदानंद मैं हूँ।।

शिवोहम -------------

4

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।

है जीत तुम्हारे हाथों मे और हार तुम्हारे हाथो में।।

मेरा निश्चय बस एक यही एक बार तुम्हें मैं पा जाऊँ,

अर्पण कर दूँ दुनिया भर का सब भार तुम्हारे हाथो में।

जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ जैसे जल में कमल का फूल रहे,

अपने गुण दोष समर्पित हो, भगवान तुम्हारे हाथों में।

यदि मानुष का मुझे जन्म मिले तो निज चरणों का पुजारी बनूँ,

इस पूजक के एक रग-रग का हो तार तुम्हारे हाथों में।

जब-जब संसार का कैदी बनूँ निष्काम भाव से कर्म करूँ,

फिर अन्त समय में प्राण तजूँ भगवान तुम्हारे हाथों में।

हममें तुममे बस भेद यही मैं नर हूँ तुम नारायण हो,

हम है संसार के हाथों में संसार तुम्हारे हाथों में।

5

अब मोहे राम भरोसा तेरा,

अब मोहे मालिक भरोसा तेरा।

अब मोहे सत्गुरू भरोसा तेरा।।

अमर महा रस नाम पान कर,

मस्त हुआ मन मेरा।

अब मोहे..................................

दीपक ज्ञान जला जब भीतर,

मिटा अज्ञान अँधेरा।

अब मोहे राम...........................

निशा निराशा दूर हुई जब,

आई शान्ति सबेरा।

अब मोहे राम..............................

6

अब दे दो गीता ज्ञान मिटे अज्ञान गुरू जी हमारे।
हम आये शरण तिहारे।।
बालकपन खेलन में बीता यौवन निद्रा मे तू सोया,
भय वृद्ध तो हो गये जर्जर दाँत हमारे, हम आये ....
सुत, मात, पिता, बान्धव दारा नश्वर सम्बन्ध है ये सारा,
जायेगें शुभाशुभ कर्म हमारे, हम आये शरण ....
फंस कर मैं जग की माया में दुख पाता था इस काया में,
निज ज्योति से ज्योति जगाओ गुरू जी हमारे, हम ....
सेवक पर स्वामी दया करों भव भय सब संकट आप हरो,
कर्मों के दोष न देखो गुरू जी आप हमारे।
हम आये ....
गुरू चरणों में ये अर्जी है आगे प्रभु आपकी मर्जी है,
गुरू कृपा मिले तो जागे भाग्य हमारे, हम आये ....

7

अरे ओ शोख कलियाँ मुस्कुरा देना वो जब आये।
सुनो फूलों महक अपनी सजा देना वो जब आये।।
वो जब आये अदब से डालियाँ फूलों की झुक जाये।
वो जब गुजरे चमन में काफिलें भँवरों के रूक जाये।।

बहारों तुम गले उनको लगा लेना वो जब आये।
बड़ी तारीफ करती हैं ये कलियां बार-बार उनकी।।
तमन्ना है कि मैं भी देख लूँ रंगीन बहार उनकी।
उठाओ तुम नकाब उनकी उठा देना वो जब आये।।
बगैर उनकी मोहब्बत के मैं जिन्दा रह न पाऊँगी।
मगर ये हाल दिल में है किसी से कह नहीं पाऊँगी।।
निगाहें हाल दिल उनको सुना देना वो जब आये।

8

अगर है शौक मिलने का, तो हर दम लौ लगाता जा।
जलाकर खुदनुमाई को, भस्म तन पर लगाता जा।।
पकड़ कर इश्क की झाड़ू साफ कर हिजरये दिल को,
दुई की धूल को लेकर मुस्सरह पर उड़ाता जा।
मुसल्ला फाड़ तस्वीर तोड़ किताबें डाल पानी में,
पकड़ तू हस्त फरिश्तों का, गुलाम उनका कहाता जा।
न मर भूखों न रख रोज़ा, न जा मस्जिद न कर सिजदा,
वजू का तोड़ दे कूज़ा, शराबे-शौक पीता जा।
हमेशा खा हमेशा जी न गफलत से रहो एक दम,
नशा में सैर कर अपनी, खुदी को तू जलाता जा।
न हो मुल्ला न हो ब्राहमन दुई की छोड़कर पूजा,
हुकुम है शाह गुरूवर का, अनलहक तू कहता जा।
कहे गुरूदेव मस्ताना मैंने हक दिल में पहचाना,

वहीं मस्तों का मैखाना, उसी के बीच आता जा।

9

अन्दर सत्य गुँरादा डेरा अन्दर ज्योति जलदी।
अन्दर ज्योति जलदी, निर्मल ज्योति जलदी।।
जेरा ज्योति नू जगावे, पहले मन अपना समझावे,
पीछे भेद गुँरादा पावे अन्दर ज्योति जलदी।
अन्दर ज्योति जे लसकारे, सूरज चमके कई हजारे,
जिसका अन्त न पारावार अन्दर ज्योति जलदी।
नीतू अन्दर पाले झाँकी ज्योति जगे ये दिन और राती,
अन्दर बैठे सत्गुच आप अन्दर ज्योति जगदी।
तेरे अन्दर माल खजाना न जाए ढूँढन देश बेगाना,
अन्दर अब तू पा ले झांकी अन्दर ज्योति जगदी।
नी तू प्रभु से कर ले प्यार तेरा हो जाये बेड़ा पार,
ये तो झूठा है संसार अन्दर ज्योत जगदी।

10

अरे लोगों तुम्हें क्या है या वो जाने या मै जानू।
वो दिल माँगे तो हाजिर है वो सिर माँगे तो बेसिर हों।।
जो मुँह तोडू तो काफिर हों या वो ....
वो तेरे खून का प्यासा मैं उनके दरद का मारा।
दोनों का पन्थ है न्यारा या वो ....

मुआ आशिक द्वारे पर नही वाकिफ है दिलबर।
अरे मुल्लाह सिपारा पढ़ या वो ....
बगल में मेरे छुप रहता है मैं उसके नाज को सहना।
वो जो बात मुझे कहता या वो ....

11

आरती सत्गुरू प्यारे की, कि जग के तारन हारे की।
गगन से फूल बहुत बरसे, देवता दर्शन को तरसे।।
केसर का तिलक, चाँद-सी झलक, छवि है सत्गुरू प्यारे की।
कि जग..........................
आरती सत्गुरू प्यारे की, कि जग के तारन हारे की।।
प्रीत मेरे मन में बसी ऐसी, कि मिश्री बीच मिठत जैसी।
दया जब होय पाप सब धोय, लाज रखो दास बेचारे की।।
कि जग...............................
आरती सत्गुरू प्यारे की, कि जग के तारन हारे की।।
अंग पर साड़ी है सोहे, छवि पर मन मेरा मोहे।
शीश पर मुकुट गले में हार जाऊँ चरणन बलि हारी जी।।
कि जग ....
आरती सत्गुरू ....
प्रभु जी तुम ईशन के ईशा अनाथों के हो जगदीशा,
हम भूलन हार तुम भक्षनहार। खड़े हैं द्वार तिहारे जी,
कि जग.................................

आरती सत्‌गुरू प्यारे की, कि जग के तारन हारे की।।

प्रभुजी तेरी महिमा है न्यारी,

कि सत्‌संग होए रहा भारी।

सिहांसन छोड़ आऐ है, दौड़,

मग्न भऐ भक्त है सारे जी।

कि जग.........................

आरती सत्‌गुरू प्यारे की, कि जग के तारन हारे की।।

12

आपकी इनायतें आपके करम।

आप ही बताएँ कैसे भूलेंगे हम।।

1. इक बुझी शमा की तरह था जो दिल मेरा।

देवता की आरती का बन गया दिया।।

आपकी इनायतें....................

2. विनती यही हैं दिले बेकरार की।

तोड़ना न डोर कभी मेरे प्यार की।।

आपकी इनायतें....................

3. आपने ही जिन्दगी मे रंग भर दिया है।

आप ही की कृपा से सब सँवर गया।।

आपकी इनायतें....................

13

आत्म रस के पीने वाले रस तो पिला दे,

ब्रह्म ज्ञान से मस्त बना दे।

1) ब्रह्म ज्ञान ही ब्रह्म हर जगह समाया,

तिस बिन कोई नजर न आया।

ऐसा कोई शुद्ध रूप मोहे बना दे।।

ब्रह्म ज्ञान से --------------

2) भेद–भरम मेरा रहे न कोई,

सुख–दु:ख दुनिया का व्यापे न मोहे।

ऐसी कोई जुगति बता दे।।

ब्रह्म ज्ञान से ----------------

3) कौन हूँ मैं और कहाँ से आया,

कौन ये सृष्टि किस उपजाया।

ऐसा कोई भ्रम मिटा दे।।

ब्रह्म ज्ञान से ----------------

14

आनन्द स्त्रोत बह रहा पर तू उदास है,

अचरज है ये जल में रहकर मछली को प्यास है।

फूलों में जो सुवास–मधु में मिठास है,

भगवान का तो विश्व के कण–कण में वास है।
अचरज है ....
कुछ तो समय निकाल आत्म शुद्धि के लिए,
मनुष जनम का उद्देश्य न केवल विलास है।
अचरज है ....
खुद ज्ञान चक्षु खोल के तू देख तो सही,
जिसको तू ढूँढता वो सदा तेरे पास है।
अचरज है ....
आनन्द स्त्रोत को न पा सकेगा तब तलक,
जब तलक तू मन व इन्द्रियों का दास है।
अचरज है ....

15

आवाज़ देकर प्रभु न बुलाओ,
है नजदीक नजरों से परदा हठाओ।
है जर्रे जर्रे में वही समाया,
मगर वो किसी की नजर में न आया।
अगर मिलना चाहो तो गुरू शरण आओं।
है नजदीक ....
है अपने ही अन्दर कहाँ ढूँढते हो
जमीं पर है क्यों आसमाँ देखते हो
यहाँ ही मिलेगा कहीं दूर न जाओ

है नजदीक.....................................
नहीं वो किसी के है बंधन में आता
नहीं जन्म लेता नहीं कष्ट उठाता
है आनन्ददाता आनन्द मनाओ
है नजदीक.....................................

16

आता है इस जहान में रहबर कभी–कभी।
मिलता है ऐसा ब्रंदा परवर कभी–कभी।।
फैला के झोलियां खड़े थे द्वार पर।
खुलता है रहमतो का ये द्वार कभी–कभी।।
खोजे पहाड़ हमने देखा जमीं जहान।
मुश्किल से हाथ आता है हीरा कभी–कभी।।
लाखो पुकारते है आजा आजा।
मीरा के लिए आता है गिरधर कभी–कभी।।
जिस–जिस ने पुकारा है सच्चे दिल और जान से।
उसके लिए ही आता है भगवान कभी–कभी।।
प्रेमी की इल्तजा से नारायण आ गया।
कावे में घूमता है कलंदर कभी–कभी।।

17

आया जो तेरे दर पे भगवन दीदार को।
भगवन दीदार को।।
ये हो नहीं सकता कि वो भव से न पार हो।
ठुकरा दिया जगत को जिसने तेरे लिये।।
तेरा हीं नाम जपता वो बारम्बार हो।
ये हो नही सकता.......................
सपने में भी न भूले जिसे तेरा ख्याल।।
दिल में हो लगन तेरी और तुमसे ही हो प्यार।
ये हो नहीं सकता.........................
उस भाग्यशाली नर को दुनिया से क्या गरज।
जिस दिल में लगी तेरे वचनो की तार हो।।
ये हो नहीं सकता............................

18

ऑखे बंद करूँ या खोलू मुझको दर्शन दे देना।
दर्शन दे देना गुरू जी दर्शन दे देना।।
मै नाचीज हूँ बंदा तेरा तू सबका दाता है।
तेरे हाथ मे सारी दुनिया मेरे हाथ मे क्या है।।
तुझको देखू सबमें ऐसा दर्पण दे देना।
मेरे अंदर तेरी लहरे रिश्ता है सदियों का।।
जैसे इक नाता होता है सागर से नदियों का।

करूँ साधना ऐसी मुझको साधन दे देना।।
हम सब है बालक प्रभु तेरे तुम हो राम हमारे।
तेरी कथा सुनाते जाये सत्गुरू तेरे सहारे।।
चलते-चलते इस जगल में राह दिखा देना।

19

आज दिन आया है, जो खुशियाँ लाया है,
सदगुरू जी प्यारे आये हमारे लेके बहारे जी।
पंथ निहारा हमने जाने कितना ओ दाता,
खुशियाँ लेकर आये हैं देखो ये भाग्य विधाता।
इनके आ जाने से मौसम ने रंग बदला है,
तन नाचे मन झूमे लगता है, जन्म सफल है।
दीन दयालु हैं ये सबको खुशियाँ देते हैं,
किस्मत वाला बन्दा बढ़के खुशियाँ लेता है।
भक्त दुआयें मांगे एक मेहर नजर तुम कर दो,
खाली है मेरी झोली खुशियों से दामन भर दो।
आज दिन..

20

आत्मा के आनन्द का कोई रूप नहीं है।
सम दृष्टि से देखो तो प्रभु दूर नहीं है।।
1. वो देह में नहीं विदेह में रहता है।

वो दिन में नहीं सदा दिनेश में रहता है।।
रोम-रोम में व्यापक का सन्देश नहीं है।
2. चलता नहीं फिरता नहीं रहता है सदा-पास।
सारे जगत के जीवों को रहता उसी का आस।।
मन है बड़ा दुश्मन प्रभु से दूर किया है।
3. है प्रेम की माला बना के गले का हार।
आसार वस्तु वहीं नहीं रहता सदा ही पास।।
उद्धार तो करता है तारन हार नहीं है।
4. आत्मा के आनन्द को पाना बड़ा मुश्किल है।
मन रूपी माया को हटाना बड़ा मुश्किल है।।
सत्गुरू के सिवा और कोई समर्थ नहीं है।

21

आपकी हम पर दया भगवान अगर हो जायेगी।
तो जिन्दगी मेरी आराम से कट जायेगी।।
सुना है प्रभु ने ही तारे है ।
गीध गणिका व्याध को।।
कर दो चितवन का इशारा।
बिगड़ी मेरी बन जायेगी।।
सामने आकर गुरू जी ज्ञान सुना दो जरा।
डूबती नइया भंवर से पार हो जायेगी।।

22

आखिर उस दर पर आ पहुँचे।
जिस दर के सभी है दीवाने।।
अजब मुहब्बत लुटता है।
वह दर के खुले है मैखाने।।
1. यहाँ जज्बाएं शौक शरारत है।
हर रंग यहाँ पे इनायत है।।
ये सर अमानत सत्गुरू की।
ले आये सभी है नजराने।।
2. न जग के हम तमन्नाई हैं।
न हुस्न के हम सौदाई है।
जिस दीद से हमें दीदे खुदा।।
उस दीद के हम दीवाने है।
3. दुनिया से हमें सरोकार नहीं।।
वचनों से तेरे है प्यार हमें।
गुरूदेव तेरे चरणों की कसम।।
आबाद करेगें वीराने।

23

आए है शरण तेरी गुरूदेव कृपा कर दो,
इस दीन-दुःखी मन में आनन्द सुधा भर दो।
दुनिया से हार करके द्वार तेरे आया।

श्रद्धा के सुमन चुनकर सदभाव से हूँ लाया।।
करूणा का हाथ सर पे है नाथ मेरे रख दो।
अनजानी मंजिल है चारो दिशा है अंधियारा
करूणा–निधान अब तो बस है तेरा ही सहारा।
टूटी मन की वीणा में मेरी भक्ति कर स्वर भर दो।।
किस भॉति करूँ पूजा कोई विधि नही जानूँ।
तेरा स्वरूप भगवन् किस आँख से पहचानूँ।।
इस दास अकिंचन को निज परमधाम दे दो..................

24

आओ गुरूजी हमारे आँगनवा,
सावन की परत फुहार रे।
तुम संग आनन्द का ले लूँ,
रिम–झिम परत फुहार रे।।
तुम तो गुरू जी छिपे हो कहाँ,
क्यों आने का न लेते नाम रे।
आ जाओ जल्दी करो मत देरी,
सावन के दिन कुल चार रे।।
आओ गुरू जी...................
तुम्हरे लिये मैंने मेंहदी मँगायो,
पिसी बड़े ही चाव से।
मेंहदी रचाओं मेरा मन रचाओ,

आई सावन की बहार रे।।
आओ गुरू जी.....................
बेले की कलियाँ मैं चुन–चुन लाई,
करने को तुम्हारा श्रृंगार रे।
आ जाओ अब न विलम्ब लगाओ,
कर दू तुम्हारा श्रृंगार रे।।
आओ गुरू जी ....
अमवा तले प्रभु डला है, हिंडोलना,
रेशम की लागी है डोर रे।
आओ पिया प्यारे गुरूवर हमारे,
झूला झुलाऊँ मैं आज रे।।
आओ गुरू जी....................
सब सखियाँ मिल झूला झुलायें,
झूले गुरू जी हमार रे।
हमको भी झूला झुलाओ कन्हैया,
पाऊँ आनन्द अपार रे।
आओ गुरू जी..................

25

इसे दुनिया वालों कहानी न समझो।
अमर ज्योति दिल में जलाई गई है।।
यहाँ पर तुम्हारा तो कोई नही है।

भजों नाम प्रभु का सहारा वही है।।
जो मंजिल है अपनी पहुँचना वही है।
वही राह मुझको दिखाइ गई है।।
किसी को नशा है जहाँ में खुशी का।
किसी को नशा है गमें जिन्दगी का।।
है दरिया नशे का गुरू की मोहब्बत।
यही बात मुझको सुनाई गई है।।
पिया जिसने प्याला वही झूमता है।
प्रभु नाम मोती वही लूटता है।।
है लगते यहाँ पर सभी खोये-खोये।
शराबे मोहब्बत पिलाई गई है।।
तुम्हारी मुसीबत वही जानता है।
तुम्हारी मोहब्बत वो पहचानता है।।
डगर में जो आए मुसीबत तुम्हारी।
वही एंक पल में हटाई गई है।।

26

इस माटी में सुन मेहरबाँ जब तक कि एक भी श्वाँस हो।
तेरी प्रीत ना विसराऊँ मैं यहीं होठों पे अरदास हो।।
इस माटी में----------
1. ऋतु आए भी ऋतु जाए भी पर विनती है मेरे साहिबा,
बरसात तेरे मेहर की जीवन में बारह मास हो।

इस माटी में----------
2. सत्संग हो मेरा आईना रूह को सँवारूँ मैं प्रीत से,
तेरा वचन मेरा हुकुम हो तेरा बोल मेरा लिबास हो।
इस माटी में---------
3. सब को मिले तेरी रहमतें, सबको मिले तेरी बख्शीशें,
हर चेहरे पे रहे रौनकें दाता न कोई उदास हो।
इस माटी में--------,
4. तेरे भक्तों के चरणों में हैं जन्नत से ज्यादा सुख कहीं,
सर भी झुका रहे हर घड़ी अंदर से दिल भी पास हो।
इस माटी में--------------
5. दुनिया है मेला रंग भरा कहीं खो न जाऊँ मैं भीड़ में,
तेरी उंगली न छोड़ूँ कभी तू हर जगह मेरे साथ हो।
इस माटी में---------

27

इस दुनिया में सबसे ऊँचा ये दरबार हमारा है।
त्रिलोकी से न्यारा है।।
1. जीवों के उद्धार हेतु तूने दरबार लगाया है।
सच्ची प्रेमी भक्ति का अमृत जन जन को पिलाया है।।
जग जीवों पर ऐ मेरे मालिक किया उपकार ये भारी है।

जाने ये जग सारा है।।

2. श्री दरबार में राम भक्ति की गंगा यमुना बहती है।
इस नगरी के कण-कण में सदा खुशियाँ रहती हैं।।
गम चिन्ता का नाम नहीं सुख शान्ति की बहती धारा है।
लगता सबको प्यारा है।।

3. उनकी किस्मत का क्या कहना जिनको ये दरबार मिला।
महाघोर कलयुग में सच्ची खुशियों का भण्डार मिला।।
धन्य-धन्य भाग मनाते है सब मिला जो तेरा द्वारा है।
हृदय हुआ उजारा है।।

4. यही तमन्ना है इस दिल में अमर रहे दरबार तेरा।
दासन दास कहाऊँ सदा और मिलता रहे दुलार तेरा।।
युग-युग तक तेरे दर आऊँ जो मुझे प्राणों से प्यारा है।
जीवन का सहारा है।।

28

इन्सान होके तूने कुछ भी समझ न पाया,
दुनिया नहीं किसी की यह है मकान पराया।
मेहमान बनके आये तुम इस जहान में क्यों थे,
रोता गया वो जिसने दुनिया से दिल लगाया।
यह चार दिन का मेला आखिर लगा दी क्यों है,
वापस बुलाने वाले फिर भेजता ही क्यों है।
दुनिया ने हर किसी को बस खाक में मिलाया।

जीवन के इस चमन में रंगीन बहार देखी,
दुनिया भली लगी थी बस बार-बार देखी।
जब आँख बंद कर लीं कुछ भी नजर न आया।।

29

इक प्रेम की गंगा बहती है, गुरूदेव तुम्हारे चरणों में
फल मिलता है सब तीर्थो का गुरूदेव तुम्हारे चरणों में।
मैं जन्म-जन्म का भूला हूँ, अब शरण तुम्हारी आया हूँ
हम भूले-भटके जीवों का कल्याण तुम्हारे चरणों में।
दुखियों के कष्ट मिटाते हो, दुःख लेकर सुख पहुँचाते हो,
मिले जन्म मरण से छुटकारा, जो आये तुम्हारे चरणों में।
इक बार जो दर्शन पाता है, दिल तुमको ही दे जाता है,
क्या गुप्त भेंट है भक्ति की भगवान तुम्हारे चरणों में।
जन्मों का बिछड़ा शरण पड़ा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़ा,
चौरासी का काटा चक्कर है, दास तुम्हारे चरणों में।

30

ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा करता है।
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।।
जब से दुनिया बनी है, तब से रोज बदलती है।
जो शै आज यहाँ है कल वो आगे बढ़ती है।।
देख के अदला-बदली तू आहे क्यों मरता है।

मानव तू ....

दु:ख–सुख आते जाते रहते सबके जीवन में।
पतझड़ और बहारे दोनों जैसे गुलशन में।।
चढ़ता है तूफ़ान कभी, और कभी उतरता है।
मानव तू ....
कितनी लम्बी रात हो फिर भी दिन तो आयेगा।
जल में कमल खिलेगा फिर वो मुस्कायेगा।।
देता है जो कष्ट वहजी कष्टों को हरता है।
मानव तू ....
वो ही दाना फलता है जो खाक में मिल जाये।
सहे पथिक जो काँटे वो ही मंजिल अपनी पाये।।
भट्टी में पड़कर सोने का रंग निखरता है।
मानव तू ....

31

उठ जाग जाग बन्दे गुरू का भजन तू कर ले।
जीवन है चार दिन का गुरू का भजन तू कर ले।।
माया है आनी जानी टिकती नही कही पर।
माया मे तू है भूला गुरू नाम प्यारा प्यारा।।
आया था लेके तू क्या जायेगा लेके तू क्या।
चुक जायेगा यहाँ पर तेरे करमों का लेखा।।
इस जग असार में बस गुरू नाम ही पसारा।

गुरू की कृपा जो पाये गोविन्द घट में आये।।
गफलत में तू है प्यारे क्यों गहरी नींद में सोये।
कर होश तू सफर का सामान साथ लेले।।

32

एक राम के दो–दो रूप मिले,
एक राम गुरू एक रामइया।
जिसे देख के मन का कमल खिला,
एक राम गुरू एक रामइया।।
एक सदियों से चुपचाप खड़ा,
एक मीठे बोल सुनाता है।
सत्गुरू बिन उसकी कदर नहीं,
सत्गुरू बिन नजर न आता है।
अवतार मेरा एक दीपक है,
सत्गुरू मेरा एक ज्योति है।
दोनों के बिना न काम चले,
दोनों की जरूरत होती हैं।
ये राम नजर तब आता है,
जब नजर गुरू से मिलती है।
जो नजर के परदे खोल सके,
इस दर पे वो दवाई मिलती है।

33

एक तुम्हीं आधार सत्गुरू, एक तुम्हीं आधार।।

जब तक मिलो न तुम जीवन में,

शांति कहाँ मिल सकती मन में।

खोज फिरा संसार सत्गुरू...............

कैसा भी हो खेवनहारा,

मिले न जब तक परम् सहारा।

हो न सका भव पार सत्गुरू...........

छा जाता जग में अंधियारा,

तब देने प्रकाश की धारा।

आये तेरे द्वार सत्गुरू..............

हे प्रभु तुम ही विविध रूपों में,

हमें बचाते भव कूपों से।

ऐसे परम् उदार सत्गुरू..............

34

ऐसी करी गुरू देव दया मेरा मोह का बंधन तोड़ दिया।।

1. दौड़ रहा दिन रात–सदा जग के सब कार्य बिहारों में,

सपने सम विश्व दिखाया मुझे, मेरे चंचल चित्त को मोड़ दिया।

ऐसी करी ----------------

2. कोई शिव, गणेश, महेश रटे, कोई पूजत पीर पैंगम्बर को,

सब पंथन ग्रन्थ छुड़ा करके एक आत्मा में मन जोड़ दिया।

ऐसी करी --------------------

3. कोई ढूँढत है मथुरा नगरी कोई जाये बनारस वास करे,

जब व्यापक वस्तु पहचान लिया सब भ्रम का भांडा फोड़ दिया।

ऐसी करी ------------------

4. क्या करूँ गुरू देव की भेंट कोई वस्तु नाहीं,

लेकिन ब्रहमानंद समान न होय कभी धन मालिक लाख करोड़ दिया।

ऐसी करी ----------------

35

ओह रे मनवा तोहे चिन्ता क्यों सताती हैं।

प्रभु तो अपना साथी, गुरूतो अपना साथी।।

1 कोई न साथ देता कभी, मतलब से खड़े हैं सभी,

तेरा कोई न अपना, तू फिकर न कर।

गुरू तो अपना साथी...................

2 लेता जो प्रभु का सहारा है, वो न कभी बेसहारा है,

प्रभु जिसको अपना बनाता है, वो जग का प्यारा होता है।

जब सौंपी कस्ती उसको फिर डरता काहे हैं।।

गुरू तो अपना साथी है.................

3 रिश्ता प्रभु संग ऐसा है, स्वार्थ न प्रेम रहता है,

बस प्रेम ही प्रेम संग में।

जग के नाते सब झूठे गुरू का सच्चा नाता है।।

गुरू तो अपना साथी....................

36

कहे किससे सुनाये क्या चखा जिसने वहीं जाने,

चाहे कोई कहे ज्ञानी या पागल ही भले माने।

ये चकमक यो न जलती है न यो ज्योती चमकती है,

बहुत दिन की पड़ी आदत न बातों से बदलती है।

जो सर रखता हथेली पर वो गाता जंग के गाने,

मेरे गुरूदेव ने मुझको पिलाया जाम इस रस का।

भरा भंडार था जिसमें दिखाया मार्ग उस घर का,

महक उसकी नशा उसका पिया जिसने वहीं जाने।

इन्हीं लोगो को जमाने की बहारों मे मजा आता,

मुझे तो दिल की दरगाह में दिखता है वही प्यारा।

कि जिसकी रोशनी हरदम लगी इस जग को चमकाने।।

37

कुछ न बिगड़ेगा तेरा सतगुरू शरण जाने के बाद।

हर खुशी मिल जायेगी चरणों में झुक जाने के बाद।।

जब तलक है भेद मन में कुछ नही बन पायेगा।

रंग लायेगी ये भक्ति भेद मिटजाने के बाद।।

प्रेम के मंजिल के राही कष्ट पाते है जरूर।

बीज फलता है सदा मिट्टी में मिल जाने के बाद।।

फूल से जाकर ये पूछो कैसी छायी है हार।

कब तलक कांटो पे सोया डाल पर आने के बाद।।

देख के काली निशा को ऐ भंवर मत हो उदास।

बंद कलिया फिर खिलेगी रात ढल जाने के बाद।।

प्यार से निष्काम निर्मल नाम लो गुरू देव का।

सूखी बगिया फिर खिलेगी ऋतु बदल जाने के बाद।।

38

क्या अनोखी शान है गुरूदेव के दरबार मे,

खुले हाँथो ही दया का दान है इस द्वार में।

तर रहे कितने पतित सेठ ज्ञान सुन सुधर रहे,

मर रहे शुचि शान्ति से गुरू ज्ञान के आधार में।

जिसने देखा है वहीं बस जानता इस बात को,

कह नही सकते कि क्या जादू है इनके प्यार में।

कीर्ति, मति, गति, वृद्धि, वैभव जिसको जो कुछ है मिला,

गुरू कृपा से ही सुलभ सब कुछ हुआ संसार में।

ज्ञान, मूर्ती, मलान, दया निधान प्रभु की लो शरण,

रीझ जाते है करूणा के तिनके से उदगार में।

39

कोई जगह न तुझसे खाली है
तू व्यापक डाली-डाली है
सब पंक्षी तुझको ध्याय रहे
और तेरी महिमा गाये रहे।
तेरे चरणो मे चित्त लाय रहे।।
प्रभु तू सबका रखवाली है।
प्रभु तू सबजग का हरता है।।
और सबका पालन कर्ता है।
क्या राजा है क्या प्रजा है।।
तेरे दरबार सवाली है।
तेरी अद्भुत माया है।।
क्या तूने जगत बनाया है।
तेरी सब पर भगवन छाया है।।
सब जग बाग तेरा तू सबका माली है।

40

कर बन्दे विश्वास से प्रभु है तेरे पास रे।
मथुरा काशी भटक रहा क्यों प्रभु है तेरे पास में।।
1. हिरण की नाभी में कस्तूरी।
समझ न पाये है मजबूरी।।
कर न सके कुछ कयास रे।

2. बैठ के गंगा जल के किनारे।।
क्यों नहीं पीता गंगा जल प्यारे।
कैसे मिटेगी प्यास रे।।
3. ज्ञान की आँखे खोल जरा तू।
फिर प्रीतम का दर्शन पा तू।।
मन मन्दिर में निवास रे।
4. मोह का परदा दूर हटाके।।
तनिक प्रभु का ध्यान लगा कर।
रख मिलने की आस रे।।

41

कोई कहे गोविन्द कोई गोपाला,
मैं तो कहूँ सांवरिया बांसुरी वाला।
गोविन्दा गोपाला, गोविन्दा गोपाला।।
राधा ने श्याम कहा मीरा ने गिरधर,
कृष्णा ने कृष्ण कहा कुबजा ने नटवर।
ग्वालो ने पुकारा कह कर के ग्वाला।।
मैं तो कहूँ ....
मैं या तो कहती थी तुझको कन्हैया,
धनश्याम कहते थे बलराम भइया।
सूरा की आंखों के तुम थे उजाला,
मैं तो कहूँ.........................

भीष्म के बनवारी अर्जुन के मोहन,
छलिया जो कह कर पुकारा दुर्योधन।
कंसा जो कहता था जल-जल के काला,
मै तो कहूँ.....................................
अर्जुन, युधिष्ठिर और ऊधव के माधव,
भक्तों के भगवान सन्तों के केशव।
मानव सब भजते है कह कर कृपाला,
मै तो कहूँ ....

42

कर ले गुरू से प्यार अमृत बरसेगा।।
गुरू भगवान की सेवा है यही जगत का सार।।
अमृत बरसेगा.......................................
मेरे गुरू है अन्तर्यामी वो जानत सबकी बात,
दया तब बरसेगा, कर ले गुरू..........................
जब गुरू दर्शन को आयें और मन में गुरू ही बसायें,
नूर तब छलकेगा कर ले गुरू............................
ये दुनिया है दो दिन का मेला मोह माया का झूठा झमेला,
छोड़ दे सोच विचार अमृत बरसेगा............................

43

कहीं भी चैन जो लेने न दे वह चाह सच्ची है,
रहे उनकी फिकर हरदम यही परवाह सच्ची है।
1. इसी को हम असर समझे कसर बिल्कुल न रह जाये,
विरह का दर्द भड़काती रहे, वह आह सच्ची है।
बहुत कुछ पाठ पूजा और तप व्रत करके यह समझे,
विकल हो करके रोना ही मिलन की राह सच्ची है।
यहाँ जीते हुए ही मुक्ति मिलती मौत मरती है,
ये पहुँचे प्रेमियों का ही कहीं अफवाह सच्ची है।
कहीं बाहर न भटको खोजो उनको अपने में,
पद यह देह मन्दिर और दिल दरगाह सच्ची है।।

44

क्यों दिल को फँसाये तू ये देश बेगाना,
सपनों की है सब रचना धोखा न कभी खाना।
1. जीवन है तेरा जैसे एक बुलबुला पानी का,
नहीं कुछ भी भरोसा है तेरी जिन्दगानी का।
2. कोई न समझ पाया कुदरत का ये अफसाना,
नश्वर है ये प्राणी सारे सुमिरन यहाँ,
आया है फकत तू तो बनके मेहमान यहाँ।
बेशक प्रयोग में ला पर दिल नहीं अटकाना।।
3. जो रिश्ते बनायें है वो तुझे अन्त रूलायेंगे,

पड़े संकट बड़े जब भी सभी वो नज़र चुरायेंगे।
गुरू नाम हीं आखिर है काम तेरे आना।।
4. यहाँ काल और माया ने कैसा खेल रचाया है,
गुरू कृपा बिना प्राणी कोई छूट न पाया है।
माया–जाल काटने को गुरू शरण में आना है।।

45

कुछ लेना न देना मगन रहना।
1. पाँच तत्व की बनी ये काया,
उसमें बोले मेरी मैना।
2. गहरी नदिया नाव पुरानी,
खेवटिया से मिले रहना।
3. तेरा साँई है घटमाहीं,
मन के पट खोले रहना।
4. कहत कबीर सुनो भई साधो,
गुरू के चरण से लिपट रहना।

46

कुछ गिनती की श्वाँसें हैं, दो पल का सहारा है,
बिन तेरे कुछ भी नहीं, सब झूठा पसारा है।
तू एक खिलाड़ी है, इन्सान खिलौना है,
सब एक तमाशा है, हँसना या रोना है।

ढलती हुई परछाई, देती यह इशारा है,....................
बचपन है जवानी है मजबूर बुढ़ापा हैं
जीवन जिसे कहतें हैं कई रंग बदलता है
देता है जो हरपल सब एक नजारा है......................
जब तक वो नचायेगा, नाचेगी कठपुतली,
सब खेल खत्म होगा, टूटेगी जब डोरी,
लहरों की तरह पानी जीवन की धारा है।

47

कोई ऐसी आग लगा दे रे ये तन मन जीवन सुलग उठे।
दिन दूनी हो विरह वेदना पल भर चैन न आये रे।।
ऐसी लिव हरी नाम से लागी रह न जाये मेरा नाम।
मन वाणी से प्रभु पुकारूँ, तन से हो हरि भक्ति का काम।
हरी का हो सो रह जाये और मेरा सब जल जाये रे।।
मुझे पर्वत बनना पसन्द नहीं अभिमान मान हर लो मेरा।
मै प्रेम नगर का वासी हूँ गुण ज्ञान ध्यान हर लो मेरा।।
धरती के आँचल पर मेरी राख विखेरी जाये रे।
जीवन पथ पर थका है राही मार्ग चला नी जाता।।
एक तरफ जग एक तरफ प्रभु मुझसे चुना नहीं जाता।
बाँह पकड़ के मुझ अन्धे को प्रभु की ओर लगाये रे।।
जीवन के इस कठिन डगर में तुझे पुकारूँ दीना नाथ।
बड़े कठिन साधन से पाया अब न छोडूँ तेरा हाथ।।

चाहे दुनिया दो रंगी हो निर्दोष पे दोष लगाये रे।

48

कोई जानेगा जानन हारा,
साधो गुरू बिन जग अँधियारा-4
हो................साधो.................
ये घट भीतर काशी मथुरा,
ये घट भीतर तो तीन लोक है।
सोधो...............................
कोई.................................
ये घट भीतर सोना-चाँदी,
ये घट भीतर हीरा-मोती।
ये हीं में जगत पसारा।।
साधो.............................
कोई..............................
कहत कबीर सुनो भई साधो,
यहीं मैं गुरू हमारा।
साधो ....
कोई...........................

49

खुश-खुश बैठे हो जरूर कोई बात है,
पूरा गुरू साथ है जी पूरा गुरू साथ है।
1. दुनिया की झंझटो में बात ऐसी हो गई,
सुध बुध खो गई मैं सुध बुध खो गई।
गुरू ने ललकार दिया शेर तेरी जात है,
पूरा गुरू-------
2. गुरू शरण जाके मैं ब्रह ही हो गई,
सारे दुःख खो गई मैं सारे दुःख खो गई।
जन्म-मरण, नरक-स्वर्ग नहीं भय की बात है,
पूरा गुरू--------

50

खिल गया खिल गया आज मेरे दिल का कमल,
मैं सुनाऊँ किसे ये है दिल की लगन।
मिल गया मिल गया जिसको ढूँढ़ते थे हम,
अब मुझको नहीं रहा कोई गम।
जिसकी तिरछी नजर ने है घायल किया,
उसकी अदाओं ने है मुझपे जादू किया।
जिसने लगाया है मेरे दिल में उमंग,

खिल गया----------

जगा दिल में तूफान जो मैंने दिल दे दिया,
तूने अपना कहा दिल मेरा खो गया।
कैसे हो ही गया तेरा मेरा मिलन,
मैं सुनाउँ किसे ये दिल----------
दिल की धड़कन का मुझको ख्याल न रहा,
अपने ही अरमानों को मैं छू न सकी।
इस आशा मे चाहे जले मेरा तन,
पर मुझको नहीं है रहा कोई गम।
ज्ञान का तीर जब मेरे दिल में लगा,
मुझको मेरे स्वरूप का पता मिल गया।
शुकराना करती रहती मैं उनका दिन ब दिन,
जिसने उड़ाया मेरे दिल का सब गम।

51

खोना कभी नहीं खोना मनुष्य जनम को कभी नहीं खोना।
पाना मंजिल को पाना पाके उसी में तुम खो जाना।।
जीवन के हर मोड़ पर जिसको सच का साथ है,
सुख -दु:ख में जो समान है मंजिल उसके पास है।
दुनिया के मीठे सपनों में तुम समय कभी नहीं खोना।।

प्रेम जहाँ भगवान वहाँ, ये तो सच्ची बात है,
अपने प्रियतम के बिना, जीना तो बेकार है।
हर दम हर पल प्रभू प्रेम में तुम नैनों को भिगोना।।
सच में छुपा एक राज हैं, चाबी गुरू के पास है,
श्रद्धा से जो आयेगा, आनन्द वो ही पायेगा।
जब तक न हुआ तेरा प्रभु से मिलन, सुख से कभी नहीं सोना।।

52

खुशबू बिखेरता हुआ किरदार आपका।
महक रहा है सारा दरबार आपका।।
मैं दो टके का होके भी लाखों का हो गया।
जो सच्चे दिल से हो गया सरकार आपका।।
सौ साल की इबादत से देता है फल अधिक।
जी जान से किया हुआ दीदार आपका।।
दुनियां में अमन होने की खुश खबरी दे रहा।
बढ़ता हुआ ये दिन ब दिन परिवार आपका।।
भक्तों की पूरी कर रहा हर कामना मुराद।
अलादीन का चिराग है दरबार आपका।।
तूफान में भी बहता है उसका सफीना खूब।
जिसने लिया है सिद्दत से आधार आपका।।
कागज महकने लग गया मिसले गुले गुलाल।
जब उसमें नाम लिख दिया दातार आपका।।
खुशबू...........................

53

खुश हैं तेरी कृपा से हम आज इस जहाँ में,
तुमने हमारे खातिर क्या कुछ नहीं किया है।
मंजूर है ये हमको जो कुछ भी हो रहा है।।
विषयों की आग में हम जन्मों से जल रहें थें,
तेरी शरण में आके नाजों से पल रहें है।
गम की ये दलदलों से तुमने बचा लिया है,
खुश हैं.......................................
मुश्ताक हो गये हम तेरी अजब कला पे,
है खेल तेरे न्यारे सत्गुरू दिल के प्यारे।
मुरझाया हु ये जीवन तुमने खिला दिया है,
खुश है................................
अशको की बरखा बरसी जब याद तेरी आई,
दुनिया के रिश्ते टूटे सच में ही चलते-चलते।
एक तेरा ही सहारा मंजिल तलक मिला है,
खुश हैं..................................

54

गुरूवर की जो याद आये अश्कों को बहाने दो।
जिस दिल में बसाना हो उस दिल को सजाने दो।।
गुरूवर की जो याद आये...............................
मुश्किल हो अगर मेरा संदेश पहुँचाना।

मुझको न सही मेरी आहों को तो जाने दो।।
गुरूवर ....
सुनते हैं कि तुम गुरूवर अँखियों से पिलाते हो।
इक बार तो नजरों को नजरों से मिलाने दो।।
गुरूवर...............................
जिन राहों से आना हो,
वो राहें सजाने दो।
गुरूवर ....

55

गुरूजी मेरे मन को बना दो शिवाला।-2
जपूँ नाम हरदम-2 हो मन में उजाला।।
बाहर कहीं ढूँढन मैं तुझको न जाऊँ,
प्रभु अपने भीतर मैं तुझको ही पाऊँ।
रहूँ मस्त हरदम-2 हो भीतर उजाला,
ये मन का शिवाला है सबसे निराला।।
तेरी भक्ति में है यूँ विश्वास मझको,
श्रृद्धा की डोरी से बाँध लाऊँ तुझको।
मैं तुझसे कभी भी-2 नहीं जुदा होने वाला।।
दर्शन की तेरी लगी प्यास मुझको,
कभी तो बनाओगे तुम दास मुझको।
है चारों दिशाओं में-2 तेरा बोल बाला।।

गुरू नाम में रहता मस्त सदा,
जिसे गुरू से मोहब्बत होती है
नहीं दोनों जहानो की रहती खबर
कुछ अजब सी हालत होती है
गुरू चरण सहारा पाके रहे
कभी ख्वाहिश न हो किसी ख्वाहिश की
तेरे दम से जिसका जीवन है
उसे तेरी जरूरत होती ह – गुरू ....
गुरू नाम में ऐसा जादू है
जो बदल के रखदे तकदीरें
किसी खुशकिस्मत को हासिल ये
गुरू नाम की दौलत होती है–गुरू......................
नहीं गुरू बिन कोई अपना है
सब मतलबी मतलब के देखे
क्यो फिर भी धोखा खाने की
इस दिल को आदत होती है–गुरू......................
सतगुरू से लगाकर प्रेमी दिल
सब होश हवाश गवा बैठे
उनकी रहमत की मैं के सिवा
कोई और न हसरत होती है–गुरू........................
गुरू फिकर में कितनी बेफिक्री,

कोई पूछे गुरू के प्रेमी से।
गुरू दर पर सजदा करना ही,
कहे दास इबादत होती है।।
गुरू नाम ....

57

गुरू ने जहाँ–जहाँ ज्योत जगाई है।
काली–काली रात में भी रौशनी सी आई है।।
अंखियों को खोल जरा ज्ञान के उजाले में ।
रख विश्वास पूरा जग रख वाले में ।।
गुरू रखवाला तेरा गुरू ही सच्चाई।
गुरू नाम ही तेरी असली कमाई।।
द्वार–द्वार भटकेगा दुःख बढ़ जायेगा।
एक दर पकड़ेंगा नशा चढ़ जायेगा।।
एक दर पकड़ेगा नशा चढ़ जायेगा।
कितनी ही बार यह बात समझाई है।।
गुरू के सिवाय हर चीज पराई है।।
गुरू ओर देख अपनी दुनिया संवार ले।
कितना सस्ता सौदा है प्यार दे के प्यार ले।।
जिसने भी सच्चे दिल से आस लगाई है।
गुरू के कर्म ने उसकी आस बंधाई है।।
भक्ति के बंधनों को बाँध पक्के डोर से।

आंधियाँ चलेगी इस सफर में बड़े जोर से।।
माना इन रास्तों में घोर कठिनाई है।
लेकिन इन ठोकरों में बड़ी गहराई है।।

58

गुरू शरण में आओगे तो समझोगे यह बात।
रात के पीछे दिन आये और दिन के पीछे रात।।
कौन खिलाये फूल चमन में है।
क्यों मुरझाये फूल की पाती।।
क्यों चमके बन में दीपक।
कौन बरसाये जल।।
गुरू शरण ....
कौन बिछाये सुख का बिस्तर।
कौन उठाये दुःख की चादर।।
क्यों होवे पत्थर की पूजा।
कौन करे पत्थर को कंकड़।।
गुरू शरण ....
क्यों तूफान से निकाले कश्ती।
क्यों मझधार में डूबे नइया।।
क्यों साहिल आने से पहले।
टूटे है तकदीर का पहिया।।
गुरू शरण ....

कौन करे झोली को खाली।
कौन भरे सीपी में मोती।।
क्यों दिन-रात जलाये रखे।
आँधी में विश्वास की ज्योति।।
गुरू शरण ....

59

गुरू की कृपा है सब पे समान,
जितना भजोगे बढ़ेगी पहचान।
कौन जाने कितना प्रभुवर है भाया।।
ये तो वो जाने जिसके दिल में प्रभु आया,
भक्ति से पाले पाले प्रभु की पहचान।
जितना भजोगे.......................
वो सदा अपने भक्त संग रहता,
उनको वो अपने रंग में रंग लेता।
प्रेम से पाले पाले प्रभु का तू मान।।
जितना भजोगे........................
भक्तों को अपने नाम में रखता,
भूल से भी उनको भूलने न देता।
ऐसा प्रभु है मेरा भगवान।।
जितना भजोगे...................

60

गुरूदेव कृपा जब करते हैं उर के कपाट खुल जाते हैं।
चरणों की रज लेते ही जीवन के अध खुल जाते हैं।।
जो गुरू चरणामृत पीते हैं सदा मस्ती में वो जीते हैं,
मिलते हैं सभी सुमीत यहाँ काँटें भी गुल बन जाते हैं।
गुरू देव कृपा जब करते हैं उर के कपाट खुल जाते हैं।।
यहाँ शीश चढ़ातें हैं सदा हम भी शीश झुकाते हैं,
गुरू ध्यान में चित्त लगाते हैं मन में अतिशय सुख पाते हैं।
गुरू देव कृपा जब करते हैं उर के कपाट खुल जाते हैं।।
यह रजअमृत की बूटी है सचमुच जीवन की घूटी है,
यह औषधि प्रेम अनूठी है इसमें रोग सभी नशाते हैं।
गुरूदेव कृपा जब करते हैं उर के कपाट खुल जाते हैं।।
जब ध्यान हृदय में करते हैं सुख का अनुभव तब करते हैं,
जब ऊँ हृदय में रखते हैं तब सुख का अनुभव करते हैं।
गुरूदेव कृपा जब करते हैं उर के कपाट खुल जाते हैं।।

61

गुरू वचनों को रखना सम्भाल के,
एक – एक वचनों में बड़ा राज है।
जिसने जानी है महिमा गुरू की,

उसका डूबा कभी न जहाज है।।
ज्ञान सुने और विवेक न जागे, ऐसा कभी न हो सकता,
दीप जले और तम न भागे ऐसा कभी न हो सकता।
उसकी ज्योति से रौशन जहान है वो फरिश्ता बड़ा ही महान है,
जिसने ....
बीज पड़े अंकुर न फूटे ऐसा कभी न हो सकता,
कर्म करे और फल न भोगे ऐसा कभी न हो सकता।
कर्म करने में तू आजाद है फल भोगने में तू लाचार है,
जिसने ....
मैं का दिया तू जब तक जलाये तब तक प्रभु न मिल सकता,
अंतः करण जो शुद्ध न हो तो ज्ञान कभी न हो सकता।
जिसने ....
गुरू पर पूरा सर्मपण हो तो धोखा कभी न हो सकता,
लक्ष्मण रेखा सत्संग हो तो रावण कभी न हर सकता।
अब तो हर पल में होता आभास है गुरू रहता हर पल पास है,
जिसने ....

62

गुरूदेव के सद्ज्ञान ने दीवाना कर दिया,
हाय मस्ताना कर दिया।
हमने जो अपना माना था बेगाना कर दिया,
हाय मस्ताना कर दिया।

जकड़े थे हम जगत में मोह की जंजीरों से,
दुःखों की पीड़ों से।
जग को जला ज्ञान अग्नि में परवाना कर दिया,
हाय मस्ताना कर दिया।
जन्मों की देह अध्यास की जो धुनी रमाई थी,
शांति न पाई थी।
ममता मिटा निज रूप में मस्ताना कर दिया,
हाय मस्ताना कर दिया।
रग-रग में सभी जन के नाम रूप में फँसें थे,
माया में फँसे थे।
हर ताल में अब सोहम् का तराना भर दिया,
हाय मस्ताना कर दिया।
ऐसा दिया उपदेश गुरू ने तुम निज आनन्द हो,
भक्त तुम सर्वानन्द हो।
जग में सदा को बंद आना जाना कर दिया,
हाय मस्ताना कर दिया।

63

गाफिल विचार मन मे हरि नाम क्यों बिसारा।
सुनता नही बजे है सर काल का नगाड़ा।।
सुन्दर ये देह तेरी होवे भस्म की ढ़ेरी,
पल की लगे न देरी सब झूठ है पसारा।

यौवन भरी ये नारी दिल को लगी है प्यारी,
जब मौत की तैयारी तुझसे करे किनारा।
धन माल ये खजाना संग मे कोई न जाना,
तुम देख के लुभाना विरथा किया विचारा।
माया के जाल माही मूरख रहा भुलाई,
ब्रहमनन्द मोक्ष पाई गुरू चरण का सहारा।

64

गुरू ब्रह्म ज्ञान वाले तीर मार दी नि सइयो सचमुच।
जिना लगन उना दे मन नही डोल दे नी सइयो सचमुच।।
गुरू अचरज युक्ति बताउँदा नि बताउँदा,
विच ग्रहस्थ दे मस्त बनाउँदा नि बनाँउदा।-2
वो तो जड़ ग्रन्थि खूब खोलदे नि सइयो सचमुच,
ये दुनिया एक तमाशा नि तमाशा।
जिसका अन्त न पाया ऋषि मुनिया,-2
ज्ञानी इस गहराई विच मोती रोलदे नि सइयो सचमुच।
ब्रह्म विद्या दा गहना पालो नी पालो,
राग द्वेष को मार निकालो नि निकालो।
फिर तो ऐसे बोले जैसे बन्ना बिच शेर बोलदे,
नि सइयो सचमुच.................................

65

गुरूवर तेरे उपकार धनेरे पल-पल महिमा गान करूँ।
तेरी दया का तेरी कृपा का नित नित मैं गुणगान करूँ।।
जब से गुरू जी तुम मिले ये दिल हर्षाया।
ये बगिया भी खिल गई हर गुल मुस्काया।।
तुम्हीं से प्रीत है ये कैसी रीत है।
इसी को निभाते निभाते जीवन यूँ गुजर जाये।।
तुमतो ज्ञान के सागर हो सबको तराते हो।
नम्रता और प्रेम से सबको रिझाते हो।
ये जिन्दगी बन गई वचन को मान के।।
इन्हीं चरणों में झुककर के मंजिल अपनी पा जाये।
जब तेरे दर लखनऊ आये ये हीं हम मनाये।।
युग-युग तक तुम जियो हम तुम पर बलि बलि जाये।
तुम्हारा ही मान हो तुम्हारा सत्कार हो।।
सारी दुनिया में तुम्हारा पंचम लहराये।

66

गुरू ऐसो जिया मे समाय गयो रे।
कि मै तन मन की सुध बुध गवां बैठी।।
हर आहट पे समझी वो आय गयो रे।
झट राहो में पलके बिछा बैठी।।
गुरू ज्ञान की जब पुरवइया चली।

तो विवेक की खुल गई केवड़िया।।
ऐसा अनुभव हुआ गुरू हृदय बसे।
झट बाहो के हार चढ़ा बैठी।।
मैने गुरू रज से मांग अपनी भरी।
श्रद्धा भक्ति से तन मन संजोया।।
इस डर से कि माया की नजर न लगे।
झट ज्ञान का कजरा लगा बैठी।।

67

गुरू द्वारे में जादू हमारे सजनी।
सबसे कह दो हमे न पुकारे सजनी।।
जो भूले से इत आता है पल में पागल बन जाता है।
ज्योहीं सतगुरू इधर को निहारे सजनी गुरू..........
यहाँ बाहर पूजा पाठ नही, यहाँ शब्दो की आवाज नहीं।
घट में आनन्द ज्योति जले री सजनी गुरू..............
गुरू कृपा के तिरछे बाण चले पाखण्ड दम्भ अभिमान भगे।
घट में आनन्द ज्योत जले री सजनी गुरू...............
आओ जग वालो आ जाओ नर जीवन सफल बना जाओ।
बाँटे अमृत गुरू जी हमारे सजनी गुरू ....
गुरू प्रेम मै दीवानी हूँ एहसान से पानी पानी हूँ।
भरे झोली जो हाथ पसारे सजनी गुरू...................

68

गुरू जी मेरी लागी लगन मत तोड़ना।।-2

खेती बुआई मैने तेरे नाम की,

मेरे हवाले मत छोड़ना।

गुरू जी ....

तुम्हीं मेरे सेठ हो तुम्हीं साहूकार हो,

ब्याज पे ब्याज मत जोड़ना।

गुरू जी ....

गहरी नदिया नाव पुरानी,

बीच भँवर मत छोड़ना।

गुरू जी ....

मीरा के प्रभु गिरधर नागर,

हाथ पकड़ मत छोड़ना।

गुरू जी ....

मेरे गुरूजी की ऊँची अटरिया,

हाथ पकड़ के खींचना।

गुरू जी ....

69

गाए जा गाए जा भगवान की महिमा गायेजा।

सुबह शाम इस मन मन्दिर मे झाड़ू रोज लगाए जा।।

तरह तरह के खेल है इसमें दुनिया एक तमाशा है।

कही खुशी है कही गमी है आशा है और निराशा है।।

वो चाहे हसाये चाहे रूलाए अपना फर्ज निभाए जा।

चिन्ता और चिता इस जग में दोनो समान कहानी है।।

इक जिन्दे को इक मुर्दे को दोनों समान जलाती है।

जो दुःख को दिखादे वही दुखड़े मिटाये चिन्ता दूर भगाये।।

कौन यहाँ रहा जगत में किसका यहाँ ठिकाना।

बांध ले अपना बिस्तर बाबा ये तो देश बेगाना है।।

ये जग है सराय कोई आये कोई जाये।

पथिक यही समझाये जा।।

70

गुरू देव मुझको देना सहारा,

कहीं छूट जाये न दामन तुम्हारा।

इशारे से मुझको बुलाती है दुनिया,

तेरे रास्ते से हटाती है दुनिया।

मैं क्या समझूँ ये झूठा इशारा,

कहीं छूट.............................

स्वार्थ की दुनिया में कोई न हमारा,

सिवा तेरे मेरा कोई न सहारा।

तुम्हीं मेरी नईया तुम्हीं हो किनारा,

कहीं छूट.............................

बराबर न तेरे कोई और दूजा,

तुम्हीं मेरे देवा करूँ जिसकी पूजा।
तुम्हीं पर ही सर्वस्व हमने है तारा,
कहीं छूट ....

निराशा सभी भागने को खड़ी है,
प्रभु तेरे चरणों में आकर पड़ी है।
लगालो चरण में मैं हूँ तुम्हारा,
कहीं छूट...............................

तुम्हारे सिवा दिल में समाये न कोई,
लगन की ये दीपक बुझाये न कोई।
तुम्हीं मेरी नईया तुम्हीं हो किनारा,
कहीं छूट...............................

71

गुरू के दर पर आते रहे, चरणों में सिर को झुकाते रहे।
दर पे आके सर को झुका के, भाग्य अपना बनाते रहें।।
गुरू...

जो भी दर पर आया सोया भाग्य जगाया,
भाग्य बना दिया जीना सिखा दिया।
बंदगी करके पा लिया साहिब,–2
गुरू के दर...

जिसने भी वचन को माना,
प्रेम से आ गया जीना।

वचनों को मान के, खुद को सुधार के,
बन्दगी करके पा लिया साहिब।–2
गुरू के दर...

जिसने भी महिमा गाई,
बिगड़ी तकदीर बनाई।
महिमा गुणगान कर गुरू का ध्यान कर,
बन्दगी करके पा लिया साहिब।
गुरू के दर...

हम तो करेंगे गुलामी,
गुरू को देंगे सलामी।
चरणों में शीश धरू,
गुरू से प्रीत करूँ।
बन्दगी करके पा लिया साहिब,
गुरू के दर...

72

गुरू हर मोड़ पे रहमत को लुटा देते है।
गुरू समरथ है जो चाहे बना देते है।।
1. सारी दुनिया में गुरू जैसा कोई दाता नहीं।
इसके बिना तो सुखों कोई पाता नहीं।।
बिखरे हर फूल को गुलशन में सजा देते हैं।
2. इक इशारे में रब का दीदार तो मिला।

मिली राहत जब सत्गुरू का दीदार मिला।।
भूले भटके को ये मंजिल का पता देते हैं।
3. काया के पिंजरे से तो पक्षी को उड़ जाना है।
साथ आखिर तलक सत्गुरू को निभाना है।।
गुरू लंगड़े को भी पर्वत पे चढ़ा देते हैं।

73

गुरू दर्शन को हम चले आए।
1. बे इरादा कदम चले आए।
दिल में उठी आग चले आए।।
2. कैसी झाँकी अनोखी गुरू की।
राम कृष्ण भी मात खा जाएं।।
3. तेरे प्रेम का ऐसा है जादू।
जितना बाँटे कभी न कमी आएं।।
4. तेरी महिमा कहाँ तक बखानूँ।
मेरी वाणी भी हार खा जाएं।।

74

गुरू पार करो मेरी नइया
तुम हो स्वामी अन्तरयामी, तुम्ही पार लगइया।
1. मेरा पुरूषारथ सब हारा,मिलता नहीं फिर भी किनारा,
मेरी नइया तेरे हवाले, तुम ही इसके खेवय्या।।

2. इस दुनिया में कोई न अपना, ये दुनिया खुद ही एक,
सपने को बस जाँनू सपना, ऐसा करो तुम रचइय्या।।
3. ये नहीं जाँनू आये कहाँ से जाना होगा कहाँ यहाँ सें,
जहाँ रहूँ मैं तुम्हें न भूलूँ, कृपा करो हे कन्हैया।

75

गुरूदेव दियना बार रे, यहाँ अन्ध कूप संसार रे।
1. माया के रंग में रंगी सारी दुनिया, नहीं सूझ पड़त करतार रे।
2. वेद पुराण बसे घट भीतर, तनिक ओर प्रहार रे।
3. मृग की नाभि बसे कस्तूरी, सूघँत भ्रमर उजार रे।
4. कहत कबीर सुनो भई साधो, छूट जात भ्रम जाल रे।

76

गुरू पइयाँ पडूँ नाम का लखाय दियो रे,
जन्म-जन्म का सोवत मनुष्य,
भजन की विरिया जगाय, दियो रे।।
गुरू..............................
घट अधियारी बाहर नहीं सूझत,
जग-मग ज्योति जलाय दियोरे।
विष की लहर उठे घट भीतर,
अमृत बूँद चुवाय दियो रे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो,

सुरति में मुरति मिलाय दियो रे।

गुरू...

77

घनश्याम तेरी मुरली पागल कर जाती है।
मीठी मुस्कान तेरी पागल कर जाती है।।
रोते को हसाती है सोते को जगाती है,
रूठे को मनाने की कला इसको आती है।
जो गोरे होते तो क्या करते मन मोहन,
इस साँवरे रंग पे तो दुनिया लुट जाती है।
सोने की होती तो क्या करती ये मुरली,
ये बाँस की होकर के कितना तड़पाती है।
गीता को सुनाते हो गऊओं को चराते हो,
सत्संग में आकर के तुम रास रचाते हो।
गुरू पर्व मनाते हो हर साल बुलाते हो,
गुरू पर्व में बुलाकर के सोया भाग जगाते हो।

78

घट–घट में बसे भगवान।
पहिचान सके तो पहिचान।।
सूरज की रौशनी में, चन्दा की चाँदनी,
तारों की झिलमिल छाया में।

पर्वत गुफाओं में, नदियों में तालों में,
सबमें उसी की छाया है।।
मिला सृष्टि का यह है वरदान,
पहचान सके.............................
गर्भ के अन्दर जीव में, सबका पालन हारा,
हाड़ माँस और रूधिर बींच में, शुद्ध दूध की धारा।
दिया दाता ने जीवन दान है,
पहचान सके तो......................................
भटका रहा है भूल भूलैया में देखो ये इन्सान,
मृग की नाभि में कस्तूरी फिर भी नहीं पहचान।
बिना गुरू नहीं कल्याण,
पहचान सके...
जग की अद्‌भुत लीला देखकर होता नहीं विश्वास,
बिन आधार खड़ी है धरती बिन खम्भे आकाश।
देखो लीला है उसकी महान,
पहचान सके..

79

घनश्याम तुम्हें ढूंढने जाये कहाँ कहाँ।
अपने विरह की याद दिलाये कहाँ कहाँ।।
तेरी नजर में जुल्फ में मुस्कान मधुर में,
उलझा सबमें दिल तो छुड़ाये कहाँ कहाँ।

चरणों की खाक सारी में खुद खाक बन गये,
अब खाक पे खाक रमाये कहाँ कहाँ।
जिनकी नब्ज देखके खुद बन गये मरीज,
ऐसे मरीज मर्ज दिखाये कहाँ कहाँ।
दिन रात अश्रु बिंदु बरसते तो है मगर,
सब तन में लगी आग बुझाये कहाँ कहाँ।

80

चलो गुरू ज्ञान मारग में जहाँ सत्संग जारी है।
विवेकी संतजन बैठें होत प्रकाश भारी है।।
चलो गुरू ------------------
1. तजो प्रपंच दुनिया के बसाओ शांति उर में,
तभी परिचय मिले तुमको कौन-सी खान खाली है।
चलो गुरू ----------------------
2. भरम के टाट को टारा हुआ मैदान अंदर में,
उजाला हो गया मन में अंधेरा नाशकारी है।
चलो गुरू ----------------
3. तभी मन में विषय आया मिटाया मान माया का,
कल्पना मिट गई सारी श्री रघुवंश धारी हैं।
चलो गुरू -------------------

81

चाहे पास हो, चाहे दूर हो,
तेरे वचनों से मेरी प्रीत हो।।
जनम-जनम से रटन लगाई,
अब तो सतगुरू करो सुनाई।
चरन कमल से दूर न कीजे,
बार-बार देता हूँ दुहाई।।
चाहे पास हो..............................
किस्मत में क्या फेर नहीं है?
जीवन में क्या सबेर नहीं है?
देर भले ही तेरे घर में,
मेरे लिये अन्धेर नहीं है।।
चाहे पास हो..............................
प्रेमी को प्रीतम तेरा सहारा,
तू ही है मेरा प्राण अधारा।
तूने ही जब फेरी आँखे,
जग में है और कौन हमारा।।
चाहे पास..............................

82

चरणों में तेरे जीना मरना अब और यहाँ से जाना क्या,
इक बार जहाँ सिर झुक जायें फिर सिर को वहाँ से उठाना क्या।

1. दिल भी है तेरा और जाँ भी तेरी, हर श्वाँस अमानत है तेरी,
तेरे चरणों में ऐ सत्गुरू जी, फिर पेश करें नजराना क्या।
2. किसी और दुआ की खातिर अब ये हाथ मेरे उठते ही नहीं,
तेरे चरणों की भक्ति के सिवा दर पे दामन फैलाना क्या।
3. जो प्रेम में तेरे मिल जाए, वे काँटे फूलों से बेहतर है,
तेरा प्रेम सदा मेरे साथ रहे, फिर गुलशन क्या वीराना क्या।
4. सत्गुरू की पावन आज्ञा में ऐ दासनदास मिला खुद को,
जब चरणों में सब कुछ सौंप दिया फिर अपना ख्याल उठाना क्या।

83

चाहे सुख दो, चाहे दु:ख दो मुझे सब कुछ तेरा मंजूर है।
आ मीत मेरे गाऊँ मै गीत तेरे मुझे सब कुछ तेरा मंजूर है।।
राजी रहूँ मै तेरी रजा में लगाके अपनी जान की बाजी
चलती रहूँ मै तेरे इशारे पे लगा के अपनी जान की बाजी।
सतकर मानू तेरा माणा, तेरे हुकुम के आगे रहूँ मैं निमाणा,
भलाई मैं समझ हर हालत में, प्रभु तेरे आगे करू कोई न माणा।
राटा कराओ प्रभु तेरी बड़ाई, भीख मँगाओ तो भी चिन्ता नहीं है,
मान कराओ अपमान कराओ, रहुगा हर हाल में राजी।

84

जुगल सरकार है सिर पर तसल्ली दिल में रहती है।
किसी की नाव पानी में मेरी बालू में चलती है।।
सदा से पल रहा हूँ मैं उन्हीं की छत्र-छाया में।
मुसीबत की घड़ी इनकी कृपा से यूँ ही टलती है।।
किसी.................जुगल सरकार......................
कभी तो प्यार कर लेतीं तुझे अपना बनाने में।
विरह की रात दासी की तेरी इमदात रहती है।।
किसी.................जुगल सरकार......................
सदा रथ सिन्धु में डूबी रहूँ दिन-रात मैं यूँ ही।
मिली है ऐसी मस्ती जो बड़ी मुश्किल से मिलती है।।
किसी..................जुगल सरकार...........

85

जो सत्गुरू प्यार की नजर देखे आतम ज्ञान कराए,
जो राग द्वेष को खतम कराके सबमें ब्रह्म दिखाए।
ज्योत से ज्योत मिलाकर हटाता सबके मन का अंधेरा।।
वो प्यारा ....
सत्गुरू मेरा दीपक है जिसने मिटाया अज्ञान अंधेरा,
जो कमल फूल की तरह जगत में रहता सबसे न्यारा।
ऐसे गुरू के गुण गाऊँ मैं नित-नित साँझ-सबेरा।।
वो प्यारा ....

86

जो अर्जी लगे गुरू द्वार बिगड़ी क्यों न बने

जब बैठा मेरा भगवान तो बिगड़ी क्यों न बने

1. दुःख में भी सुख में भी साथ हो मेरे,

बताये क्या तुमको सब जानो प्रभु मेरे।

मेरी सुन लो प्रभु अरदास।।

बिगड़ी क्यों....................

2. बिगड़ी न बने तो जल्दी आना,

कहीं न जाना मेरे गुरू दर आना।

वो सुन लेंगे तेरी फरियाद।।

बिगड़ी क्यों....................

3. इतनी जल्दी कोई न सुनेगा,

मेरा गुरू पल में जादू करेगा।

वो करता भक्तों से बड़ा प्यार।।

बिगड़ी क्यों....................

87

जो शरण गुरू की आये, तेरा लोक सुखी परलोक सुखी।

जिन्होंने ज्ञान पचाया, तेरा लोक सुखी परलोक सुखी।।

हरि ऊँ, हरि ऊँ, हरि ऊँ, हरि ऊँ।।

रामायण में शिव जी कहते भागवत में सुखदेव जी कहते।

गुरूवाणी में नानक जी कहते जपो संत अब राम।।

सासों में हो राम का सिमरन मन में हो गुरूदेव का चिंतन।

चमके भाग्य सितारा तेरा लोक सुखी परलोक सुखी।।

चिंता बैर सभी टल जाए, अवगुण-दोष सभी मिट जाये।

जिन्होंने ये अपनाया, तेरा लोक सुखी परलोक सुखी।।

ब्रह्मज्ञानी का पारब्रह्म है न कोई इनका बंधन नाहीं।

सबको करे महान, तेरा लोक सुखी परलोक सुखी।।

जो संतो की निंदा करते, अपना वो वंश मिटाते।

जो संत शरण में आये तेरा लोक सुखी परलोक सुखी।।

88

जै जै गुरू की मनाते चलो,

सत्गुरू की महिमा को गाते चलो।

स्वामी हमारे पूरे सत्गुरू हृदय में उनको बिठाते चलो।।

सत्गुरू हमारे परम सनेही और न कोई रख वाला,

युग-युग से अपने भक्तों का सत्गुरू है रखवाला।

सत्गुरू से नेह लगाते चलो।।

सत्गुरू की.........................

नाता हमारा सत्गुरू से है आदि जुगादि पुराना,

परम पुरूष परमातम सत्गुरू अंत किसी ने न पाया।
उनका ही ध्यान लगाते चलो।।
सत्गुरू की.......................
प्रेमी सेवक के मन में ही है सत्गुरू का डेरा,
सेवक के मन की सब मैल को धोये सत्गुरू मेरा।
चरणों का तीरथ नहाते चलो।।
सत्गुरू की..............................
शीश पे गुरू की आज्ञा धारे मन में गुरू बसाये,
और सभी से तोड़ के नाता, गुरू से नेह लगाये ।
प्रेम की गंगा बहाते, चलो।।
सत्गुरू की..............................

89

जो भी आया बिक गया मोहन तेरे दरबार में।
भेंद कुछ न रह गया बिकने और खरीदार में।।
एक नजरे कर्म नटवर जिस पे तेरी हो गई।
उसको अब चिंता रही न बाकी इस संसार की।।
जिसके दिल और आँखों में मस्ती तुम्हारी छा गई।
वो ही सोहरत पा गया इस प्रेम के बाजार में।।
कैसा मीठा फल मिला हमको तुम्हारी याद में।
दुनिया के सब नाते टूटे है तेरे इस प्यार में।

गुणों को ठुकराया करते अवगुणों से प्यार है।।
ये ही तो आदत भली है मेरे कृष्ण मुरार में।
उनको अब ....
उन्हें गरज अब क्या रही वैरानी और उस चमन की,
दुई का परदा हट गया तो मिल गया करतार से।

90

जीवन की डोर अब तो कर दी तेरे हवाले।
जग को बनाने वाले अपना मुझे बना ले।।
जप, जोग, ध्यान, पूजा तुझको रिझा न पाये,
लेकिन तुझे रिझाये, मन को भुलाने वाले। जीवन...............
कोई सगुण बताये कोई निर्गुण बताये,
खुद ही भटक रहे हैं मार्ग बताने वाले। जीवन................
जीवन की कश्ती सत्गुरू मझदार में पड़ी है,
चाहे उसे डुबा दे चाहे उसे बचाले। जीवन...................
माया की डालियों में संसार का हिन्डोला,
उसमें जन्म–मरण के झूले तेरे निराले। जीवन.............
भटके थे हम जगत में सत्गुरू मिला न कोई,
ऐसे मिले हैं सत्गुरू मार्ग दिखाने वालें। जीवन............
जीवन की कश्ती सत्गुरू अब तो बदल गई है,
मिल गया मुझको सत्गुरू पार लगाने वाले। जीवन............

91

जरा जीव विचारों मन में, तेरी आत्मा का कैसा स्वरूप है।
ये देह नहीं है तेरी आत्मा, तू तो सत्चिद् आनन्द रूप है।।
घट-घट का दृष्टा घट घट में जैसे,
जगत में है सबसे न्यारा,
तीन देह का दृष्टा तू है, तीन देह से न्यारा।
तू तो साक्षी चेतन ब्रहम रूप है,
तू तो अजर अमर विभु रूप है।
घट उपाधि से महाकाश, जो घट आकाश है कहलाता,
अन्तःकरण उपाधि से ही ब्रह्म जीव है कहलाता।
तज देह उपाधि ब्रह्म रूप है
जैसे बिन्दु भी तो सिन्धु का ही रूप है।
हस्ति, भाँति, प्रिय, नाम, रूप, ये पाँच अंश जग में दिखते,
इनमें तीन ही ब्रह्म रूप हैं, और जगत रूप दो बचते।
नाम रूप सब जगत का ही रूप है,
तू तो हस्ति, भाँति, प्रिय, रूप है।
राजा का लड़का सपने में जैसे, अपने को निर्धन माने,
राजेश्वर तू मोह नशा में, अपने को दुःखिया माने।
तू तो जगत के भी जगत का भूप है,
अज्ञान से भरा भव कूप है।

92

जाग रे मुसाफिर तेरा वक्त हो गया।
अभी तो जगाया अभी फिर सो गया।।
सभी परदेशियों की यही है निशानी,
आये और चले गये खतम कहानी,
कोई गया हँस के, कोई रो गया।
अभी तो जगाया..............................
अपना समान सब ले लो सम्भाल के।
कुछ खो गया कुछ खो देते हो जाने के।।
पीछे मत कहना मेरा माल खो गया,
अभी तो जगाया..............................
पीछे मत कहना मुझे किसी ने जगाया नहीं।
कोई भी मुसाफिर यहाँ टिक कर रहा नहीं।।
पागल मनुवा देख तेरा साथी हो गया,
अभी तो जगाया..............................

93

जिसके ह्रदय में हरि सुमिरन होगा,
उसका सफल क्यों न जीवन होगा।।
सच्चे धारण से प्रहलाद जी ने ध्याया था,
खम्भे में राम जी का दर्शन पाया था।
जिसका सहारा रघुनन्दन होगा,

उसका सफल ....

द्रौपदी ने बाँधा देखो चार कच्चे धागे से,

बदले में दे दी हजार गज साड़ियाँ।

जिसका सहारा मन मोहन होगा,

उसका सफल.....................................

भक्तों को तारने तारन हार आये हैं,

जंगलों में जूठे बेर शबरी के खाये हैं।

जिसका सहारा राम नाम धन होगा,

उसका सफल...............................

वन के वैरागी गीत राम जी के गाये जा,

तेरी सारी मुश्किलें आसान हो जायेंगीं।

जिसके हृदय में राम–नाम धन होगा,

उसका सफल..................................

94

जहाँ तक जाती दृष्टि है वहाँ तक फैली सृष्टि है,

सर्व मम्रूप है, सर्वमम् रूप है।

मैं हूँ सब में और न कोई ,

मेरी ज्योती सब घट प्रगट होई,

ऐसा अद्भुत रूप जाने कोई कोई भूप।

सर्व मम् रूप है।–2

मुझसे उत्पन्न है संसारा,

चन्दा सूरज विद्युत धारा।

जगमगाती सृष्टि है सारी आतम दृष्टि है,

सर्वमम् रूप है।–2

इन्द्र जाली जाल बिछाया ईश जीव बन देखन आया,

आप से आप ही भूला, माया के भरम में भूला।

सर्वमम् रूप है,–2

95

जीवन की घड़ियाँ वृथा न खो।

ओम् जपो हरि ओम् जपो।।

ओम् ही सुख का सार है,

ओम् ही जीवन आधार है।

वृत्ति न उसकी मन से तजो,

ओम् जपो......................

साथी बना लो ओम् को,

मन में बिठा लो ओम् को।

चादर लम्बी तान के न सो,

ओम् जपो......................

चोला यही है कर्म का,

करने को सौदा धर्म का।

धोना जो चाहो जीवन को धो,

ओम् जपो......................

मन की गति सम्भालिये,
भक्ति की ओर डालिये।
इसके सिवा मार्ग न कोय,
ओम् जपो......................
घट में हरि पहचानिये,
श्वासों की कीमत जानिये।
जीवन की घड़ियां वृथा न खो,
ओम् जपो......................

96

जर्रे-जर्रे में है झा[illegible] भगवान की।
किसी सूझ वाली आँख ने पहचान ली।।
नाम देव ने पकायी रोटी कुत्ते ने उठायी।
पीछे घी का कटोरा लिये आ रहा।।
बोले रूखी तो न खाओं स्वामी घी तो लेते जाओ।
रूप अपना क्यों मुझसे छिपा रहा।।
तेरा मेरा एक रूप फिर काहे को हुजूर।
तूने शकल बनाई है श्वान की।।
मुझे ओढ़नी उढ़ा दी इंसान की।
निगाह मीरा की निराली पीके जहर की प्याली।
ऐसा गिरधर बसाया मीरा श्वांस में।।
आया जब काला नाग बोली धन्य मेरे भाग।।

प्रभु आये आज साँप के लिबास में।
आओ आओ बलिहार काले कृष्ण मुरार।।
बड़ी कृपा है कृपा निधान की।
बलिहारी हूँ मैं आपके एहसान की।।
इसी तरह सूर दास निगह जिनकी थी खास।
ऐसा नशा था सावरिया हरि नाम का।।
नैन हुए जब बंद मिलाब वह आनन्द।
आया नजर नजारा भगवान का।।
हर जगह वो समाया सारे जग को लखाया।
आयी आँखो में रौशनी ज्ञान की।।
देखी झूम-झूम झलकियाँ जहान की।

97

जागो रे जिन जागना अब जागन की बार,
फिर क्या जागे नानका जब सोये पांव पसार।
गुण गोविन्द गायो नही जनम अकारथ कीन,
कहे नानक हरि भज मना जेहि विधि जल को मीन,
जागो रे ....
जो प्राणी ममता तजे लोभ मोह अंहकार,
कहे नानक आपन तरे औरून लेत उबार।
जागो रे ....
संग सखा सब तज गयो कोई न निभियों साथ।

कहे नानक इस विपत्ति में टेक एक रघुनाथ,
जागो रे ....
सुख में बहु संगी बने दुःख में संग न कोय।
कहे नानक हरि भजमना अंत सहाई होय,
जागो रे ....

98

जिसने जीवन दिया उसने सब कुछ दिया।
तू शिकायत न कर उसका कर शुक्रिया।।
खुद ब खुद पायेगा जिसका हकदार है।
किस समय कौन सी चीज दरकार है।।
तू बताएगा क्या उसको सब है खबर।
काहे दो दिन की पतझड़ से घबरा गया।।
तुझको दी धड़कने नाम लेता रहे।
प्रभु विश्वास से काम लेता रहे।।
रोशनी के लिए तुझको दी आत्मा।
तुझको आंखो के तोहफे दिये इसलिए।।
तुझको बादल दिये ताकि वर्षा मिले।
प्रभु छाया मिले प्रभु रक्षा मिले।।
तुझको सूरज दिया ताकि गर्मी मिले।
तुझको चंदा दिया शीतलता मिले।।

99

जब से मिले मेरे सत्गुरू जी, जाग उठी तकदीर मेरी,
जब से तुम्हारा नाम लिया, तेरे वचनों का ध्यान किया।
आँखों में तस्वीर तेरी, जाग उठी......................
मतंग ऋषि ने बोल कहा, मिलेंगे राम तुझको खोल कहा,
बात सच्ची भई ऋषियों की, जाग उठी..................
सबसे नाता तोड़ लिया, सत्गुरू संग नाता जोड़ लिया,
दिल में है तस्वीर तेरी, जाग उठी......................
क्या भेंट धरूँ सत्गुरू आगे, मेरे जनम्-जनम् के पुण्य जगे,
दीन्हा दर्शन देव निरंजन जी, जाग उठी......................

100

जग असार मे सार रसना हरि हरि बोल।।-2
1. अपने तन को बीन बनाले, प्रेम स्वरों के तार चढ़ाले,
राम नाम झनकार रसना हरि हरि बोल।
2. ये तन है झाझरी नवईया, केवल है हरि नाम खिवइया,
हो जा भव से पार रसना हरि हरि बोल।
3. अधिक नहीं कुछ-कुछ कर ले तू, प्रेम बूंद से घट भर ले तू,
भरले घट भण्डार रसना हरि हरि बोल।
4. जीवन कर्ज लिया है तूने, चुकता कुछ न किया है तूने,
ऋण का भार उतार रसना हरि हरि बोल।

101

जग सपना है नहीं अपना है कुछ सोच–सोच नादान रे।
क्यों भूल गया भगवान रे।।
मात गर्भ में मूरख तूने वादे किए हजार।
भूल गया वो बाते सारी फंस गया माया जाल।।
सखी री फंस गया माया जाल।
यह रचना है नहीं अपना है।। कुछ.............
नंगे आये नंगे जाये क्या ले जाये साथ।
राजा रैयत मूरख पण्डित कर जाये खाली हाथ।।
सुनो जी कर जाये खाली हाथ।
यह घटना है नहीं अपना है।। कुछ ....
प्रभु से कर ले प्रीत पियारे हो जाये बेड़ा पार।
गाफिल होकर नाव पुरानी डूब न जाये मझधार।।
सुनो जी डूब न जाये मझधार।
यह रचना है नहीं अपना है।। कुछ ....

102

जरा तो इतना बता दो भगवन,
लगी ये कैसी लगा रहे हो।
मुझी में रहकर मुझी में अपनी,
ये खोज कैसी करा रहे हो।
जरा...............................

हृदय भी तुम ही हो प्रीतम,
प्रेम तुम्हीं हो तुम्हीं हो प्रेमी।
पुकारता मन तुम्ही को क्यों फिर,
तुम्हीं जो मन में समा रहे हो।
जरा....................................
प्राण भी तुम हो तुम्ही हो स्पन्दन,
नयन तुम्ही हो तुम्ही हो ज्योति।
तुम्ही को लेकर तुम्ही को ढूँढू
नई ये लीला बता रहे हो।
जरा....................................
भाव भी तुम हो तुम्ही हो रचना,
संगीत तुम हो तुम्ही हो रसना।
स्तुति तुम्हारी तुम्ही से गाऊँ,
नई ये रीति बता रहे हो।
जरा.........................
कर्म भी तुम हो तुम्ही कर्ता,
धर्म भी तुम हो तुम्ही हो धर्ता।
निमित्त कारण प्रभु मुझे बनाकर,
ये नाच कैसा नाच रहे हो।
जरा................................

आरती–

ज्योति से ज्योति से जगाओ मेरे सतगुरू।
मेरा अन्तर तिमिर मिटाओ मेरे सतगुरू।।
ज्योति...............................
हे जोगेश्वर हे परमेश्वर हे ज्ञानेश्वर हे सर्वेश्वर।
निज कृपा बरसाओ मेरे सतगुरू।।
ज्योति...
हम बालक तेरे द्वार पे आये मंगल दरश दिखाओ, मेरे सतगुरू
ज्योति..
शीश झुकाये करूं तेरी आरती प्रेम सुधा बरसाओं, मेरे सतगुरू
ज्योति...
साँची ज्योति जगे हृदय में सोहम नाद जगाओं, मेरे सतगुरू
ज्योति...
अन्तर में जुग–जुग से सोई चेतन शक्ति जगाओं, मेरे सतगुरू
ज्योति...
जीवन में चेतन अविनाशी चरण–शरण में लगाओं, मेरे सतगुरू
ज्योति..

जुग–जुग जिये रे यशोदा मइया तेरो ललना।
तेरो ललना हो मइया तेरो ललना।।
1. धन्य यशोदा मइया तैने ऐसो लाला जायो।
तीन लोक का ठाकुर तैने अपनी गोद खिलाये।।
तेरे लाला के दरश बिन पड़े कल न।
2. धन्य घड़ी वा जा दिन मैय्या–मैय्या कह के बोले।।
ठुमक–ठुमक तेरे अंगना में ताथा थइया बोले।
पकड़े बाबा की उंगलियाँ लाला सीखे चलना।।
3. बिना दरश दिये नन्द लाला के लौट न घर को जाऊँ।
जब तक दरश नहीं करवाये द्वारे अलख जगाऊँ।।
तेरे लाला को झुलाऊँ मैं तो हँस–हँस पलना।
जाकी वक दृष्टि से मैय्या महाप्रलय हो जावे।।
ताको भला कौन–सी मैय्या टोना नजर लगावे।
शत्रु बदल को बदल चलेगा चापै एको छलना।।
कछु लीला करबे को मैय्या छीर–सिन्धु से आये।
बृज वासिन के बड़े भाग्य री सकल लोक सुख पाये।।
गीता ज्ञान सिखायो मैं पलछिन मा।

105

जो है वो भुलाने के काबिल नहीं है,
नहीं है। वह पाने के काबिल नहीं है।
1. जो है वह भी यह है वह परमात्मा है,
किसी को बताने के काबिल नहीं है।
2. जो है वह ही है वह परमात्मा है,
वह है पर बताने के काबिल नहीं है।
3. ना होते हुए ऐसा जो भासता है,
वह विश्वास लाने के काबिल नहीं है।
4. जो है वही सत्य है, वो परमात्मा है,
असत्य से छिपाने के काबिल नहीं है।
5. जो है वो भी यही है मुझमें समाया,
किसी को बताने के काबिल नहीं है।
6. भला तुम जहाँ हो वहीं पर तो वो है,
वो खोज लगाने के काबिल नहीं है।

106

जो मिलना है भगवान से तो मिल पहले इन्सान से,
कैसे दर्शन देगा मालिक बिन पूछे दरबान से।
1. भेद-भाव के बंधन और ये ऊँच-नीच की दीवारे,
कैसे प्रभु से मिलने देगी ये बीच की दीवारें।
तुमने खुद मुश्किल कर डाला हर मुश्किल आसान रे।।

2. लाख चतुर तू बने मगर वो सबसे बड़ा सयाना है,
अपना आप छुपाकर बुनता जग का ताना बाना है।
चतुराई न भाये उसे वो प्यार करे अन्जान से।।
3. प्रभु का होना है जो तुझको बन्दें का हो जा तू,
अपना आप मिटा दे मूरख और उसी में खोजा तू।
नीचा सर जो काम निकाले वो न निकले मान से।।

107

जिन्होंने तैरना सीखा वहीं भवपार होते है,
अनाड़ी मोह सागर से नहीं अद्धार होते है।
सभी व्यवहार जिन जानो न अपने आप को जाना,
उन्होने खाक नही जाना वृथा भू भार ढोते है।
विषय चूने के गोले को जो खाते है समझ पेड़ा,
वो भव-जाल में फँसकर सदा बीमार होते है।
नहीं पुरूषारथ जिन कीन्हा, रहे प्रारलब्ध के बल पर,
वहीं बस आलसी संसार में बेकार होतें है।
जिन्हें है ज्ञान निज रूप वही बस शान्ति पाते है,
हितैषी सर्व भूतों के गले का हार होते है।

108

जिन्दगी प्यार का गीत है-4 इसे हर दिल को गाना पड़ेका।
जिन्दगी गम का सागर भी है, हँस के उस पार जाना पड़ेगा।

1. जिन्दगी एक एहसास है, टूटे दिल की यही आस है,
जिन्दगी एक बनवास है काट कर सबको जाना पड़ेगा
2. जिन्दगी बेवफा है तो क्या, अपने रूठे है हमसे तो क्या,
हाथ में हाथ न हो तो क्या, साथ फिर भी निभाना पड़ेगा।
3. जिन्दगी एक मुस्कान है दर्द की कोई पहिचान है,
जिन्दगी एक मेहमान है छोड़कर सबको जाना पड़ेगा।
4. है अगर दूर मंजिल तो क्या रात काफी हो मुश्किल तो क्या,
रात तारों भरी मिले न तो क्या रात काफी हो मुश्किल तो क्या,
रात तारों भरी मिले न तो क्या, दिल का दीपक जलाना पड़ेगा।
5. जितना हो आँचल यहाँ पर, उसकी सौगात उतनी मिलेगी,
फूल जीवन में अगर न खिले तो क्या, काँटों से भी निभाना पड़ेगा।
6. जिन्दगी एक पहेली भी है, सुख दुःख की सहेली भी है,
जिन्दगी एक वचन भी तो है, उसे सबको निभाना पड़ेगा।

109

जब अपने घर में खुदाई है, तो काबे में सजदा कौन करे,
तू बन के गिरा मैं जल जाऊँ, तेरा हूँ तुझमें मिल जाऊँ।
हो तुझसे खता तो बकसाय ये रोज का झगड़ा कौन करें,
हम मस्त हुए बे बादा पिये, साकी की नजर के सदके में।
अन्जाम पे डाले कौन नजर पीली है तो तौबा कौन करे।।
अब उनकी रजा पर छोड़ दिया आबाद करे बरबाद करे।
उनका था उनको सौंप दिया दिल दे के तकाजा कौन करे

तू सामने आ मै सजदा करूँ तो लुत्फ है सजदा करने का
तू और कहीं मै और कहीं ये नाम का सजदा कौन करे
जब परदे दी तलक सब सचदे ही तलकसब परदे है
जब परदा उटा तो आप हुआ फिर आप का सजदा कौन करें

110

जग का करतार है, माया का आपार है,
आजा मेरे भगवन प्यारे तेरा इन्तजार है,
ओ लीला तेरी अजब निराली दिल तुझपर बलिहार,
रूतबा तेरा देखा दिल से सबका सिरजन हार।
जग का कतरि है............................
ओ तू ही राम और तू ही खुदा है,
तू ही कृष्ण मुरारी है।
तैने नरव पर गिर वर धारो नाम पड़ो गिरधारी है।।
जग......................................
तू ही मन्दिर मस्जिद में है, तू ही भीतर बाहर है,
गुरूदेव निराली शान है देखी, तू ही जग में जाहिर है।।
जग ....

111

झीनी रे झीनी ते राम नाम रस मीनी चदरिया, झीनी रे झीनी।।
अष्ट कमल का चरखा बनाया, पाँच तत्व की पूनी।

नौ दस मास बिनन में लागे, मूरख मैली कीन्ही।।

चदरिया झीनीं रे ....

जब मेरी चादर बुन घर आई, रंग रेज को दीनी।

ऐसा रंग रंगा रंगरेज ने, लालो लाल कर दीनी।।

चदरिया झीनीं रे ....

चादर ओढ़ शंका मत करियो, दो दिन तुमको दीनी।

मूरख लोग भेद नहीं जाने, दिन-दिन मैली कीनी।।

चदरिया झीनीं रे ....

ध्रुव, प्रहलाद, सुदामा ने पहनी, सुखदेव ने निर्मल कीनी।

दास कबीर ने ऐसीं पहनी, ज्यों की त्यों धर दीनी।।

चदरिया झीनीं रे ....

112

डूबतों को बचा लेने वाले मेरी नईया है तेरे हवाले।।

लाख अपनो को मैने पुकारा सबके सब कर गये है किनारा,

और कोई देता न कोई दिखाई सिर्फ तेरा ही अब तो सहारा।

कौन तुम बिन भँवर से निकाले,

मेरी नैय्या है ....

पृथ्वी सागर व पर्वत बनाये तूने धरती पे दरिया बहाये,

चाँद, सूरज, करोड़ो सितारे, तुने आकाश में है खिलाये।

तेरे सब काम जग से निराले,

मेरी नैय्या है ....

बिन तेरे चैन मिलता नही है फूल आशा का खिलता नही है,

तेरी मर्जी बिना इस जहाँ में एक पत्ता भी हिलता नही है।

तेरे बस में अंधेरे उजाले,

मेरी नैय्या है ....

113

तेरी महफिल के दिवाने नशे में चूर होते हैं।

वो इस दुनिया में रहने पर भी दिल से दूर होते हैं।।

मजा आता है लोगों को उधर से खुद वो मुड़ जाते,

न तड़पन है, न बेचैनी, जो तेरे रंग में रहते।

जमाना यूँ कहे चाहे, बड़े बेशहूर होते हैं।।

समझते हैं कि सब नस्वर, मिटा है दया का बन्धन,

वो बैठे हो या चलते हों, शिवोहम की सदा गुंजन।

नहीं माया के हथकंडों से वो मजबूर होते हैं।।

हो डेरा आसमाँ पर, चाहे जंगल में बसेरा हो,

नहीं वो डूबता सूरज, आमावस का अँधेरा हो।

जिधर गिरती नजर उनकी, खयाले नूर होते हैं।।

पता नहीं देह का उनका, तो फिर क्या औरों से मतलब,

वो कूटस्थ निश्चल हैं अविधा के हैं सब करतब।

वो तो खुद आशिक वो खुद माशुक, सदा भरपूर होते हैं।।

114

तूने खोला न दर तो बता साँवरे,

तेरे दर के दीवाने कहाँ जायेंगे।

घर से निकले हैं हम बाँध करके कफन,

खाली हाथ यहाँ से नहीं जायेंगे।।
एक तेरे ही भरोसे पे आये हैं हम,
गर यहाँ पर भी झोली न मेरी भरी।
हम गरीबों का दुनिया में बिगड़ेगा क्या,
आप बदनाम होंगे जिधर जायेंगे।
तूने खोला ....
मुख जो मोड़ो मगर प्यार से मोड़ना,
बेसहारे तड़प कर के मर जायेंगे।
आपने गर हमें कुछ सहारा दिया,
चार दिन जिन्दगी के चमक जायेंगे।।
तूने खेला ....

115

तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार,
उदास मन काहे को करे।
निराश मन काहे को करे।।
नैया तेरी राम हवाले,
लहर-लहर प्रभु आप संभालें।
प्रभु आप ही उठाऐं तेरा भार।।
उदास मन ....
काबू में मझधार उसी के,
हाथों में पतवार उसी के।
तेरी हार नहीं है तेरी हार।।

उदास मन ....
सहज किनारा मिल जाएगा,
परम सहारा मिल जाएगा।
डोरी सौंप के तो देख एक बार।।
उदास मन ....
तू निर्दोष तुझे क्या डर है,
पग-पग पर साथी ईश्वर है।
जरा भावना से करो तुम पुकार।।
उदास मन ....

116

तुम्हारा प्यार मिल जाए जिन्हें एक बार जीवन में।
वो बन्दें हो नहीं सकते कभी लाचार जीवन में।।
नही होती जिन्हें आदत, गिले शिकवे सुनाने की,
बिना माँगे ही मिलती है उन्हें हर शय जमाने की।
कि सपने हो गए उनके सभी साकार जीवन में।।
वो बन्दे......................
तुम्हारा प्यार ....
मुसीबत आ नहीं सकती जहाँ गुणगान तेरा हो,
वो घर जन्नत से बढ़िया है जहाँ तेरा बसेरा हो।
मगर लाजिम है आ जाए तेरा एतबार जीवन में।।
वो बन्दे......................
तुम्हारा प्यार ....

सबर–संतोष मिलता है तुम्हारे पास आने से,
खजाने भर दिये तूने जरा से मुस्कूराने से।
जिन्हें भी शौक मिल जाए तेरा आधार जीवन में।।
वो बन्दे......................
तुम्हारा प्यार ....

117

तुझे कैसे भूल जाऊँ तू तो मेरी जिन्दगी है।
तुझे देखना इबादत तेरी याद बन्दगी है।।

तेरी दर पे सिजदा करना,
तेरी याद करके रोना।
पूजा यही है मेरी, मेरी बन्दगी यही है।।
तुझे ....

मेरी प्रार्थना है गुरूवर,
कुछ ऐसी कर दो रहमत।
चरणों में ठौर पाऊँ फिर मुझको क्या कमी है।।
तुझे ....

118

तुम अपने हो तो जमाना अपना है,
अपने तो अपने बेगाना अपना है।
हर सूरत में सत्गुरू आप दिखते हो,

जबसे हर इन्साँ को जाना अपना है।।
एक इशारे से दिलों को जोड़ डाला है,
प्यार की राहों पे हमको मोड़ डाला है।
हर भक्त गुरू जी आपका करता है शुकराना,
नम्रता और प्यार क्या है आपसे जाना।।
तुम अपने हो तो जमाना अपना है.................
राग–द्वेष अहंकार की उन दरारों को,
अपने समतल किया ढ़ाके दीवारों को।
बैर और नफरत के सब छोड़ के धन्धे।
एक दूजे के करीब आएं सब बन्दे।।
एक है हम एक निशाना अपना है..............
आपने अपना जो समझा कुल जमाने को,
आ गई दुनिया तुझे अपना बनाने को।
सब भक्तों के दिलों में किया उजाला है,
आपने हमको अन्धेरों से निकाला है।।
सच्चा होठों पर तराना अपना है,
अपने तो ....

119

तेरे हाथ में है जीवन बनाना।
हीरा कौडी के लिए न लुटाना।।
कल का नाम है तेरा काल,
तेरा तो है आज और अब।

गुरू बचनों मे मन को लगाना,
हींरा कौड़ी ....
दुनिया न बदले बदल जाएं हम,
फिर तुझ मिलेगा परमानन्द।
पर विषयों को मन से हटाना,
हींरा कौड़ी ....
क्यों सोचे तू कल की रे,
खबर नहीं एक पल की रे।
हर श्वाँस है तेरा बेगाना,
हींरा कौड़ी ....
आत्मा तो है अजर अमर,
जीना मरना देह का धरम।
सुनो सुनो ये सच्चा अफसाना,
हींरा कौड़ी ....

120

तेरी भोली भाली सूरत को,
मन मन्दिर में है धर लिया।
जाओगे छुड़ाकर बाँह कहाँ,
कैद मन में तुम्हें कर लिया, सुनो कान्हा।।
जबसे लगी है तुझसे लगन।
खोया रहता है मेरा मन।।
कान्हा तेरी याद सताती।

रहती है मुझको हरदम।।
आ-आ कर तेरी यादों ने बेचैन मुझे।
कर दिया, सुनो कान्हा।।
तेरी लगन लगी मन में।
तुझे खोजा जाकर वन-वन में।।
कान्हा तुझे पुकारा मैंने।
गोकुल और वृन्दावन में।।
बस तेरा ही नाम ले लेकर।
नींर नैनों में है भर लिया, सुनो कान्हा।।
राह निहरूँ मैं पल-पल।
तेरे विरह में रहूँ मैं विकल।।
देख प्रेम भावना तुम्हारी।
कहता है मेरा दिल सत्गुरू।।
ये जनम-जनम का नाता है।
अब मैंने है तय कर लिया, सुनो कान्हा।।

121

तेरा हाथ जिसने पकड़ा वो रहा न बेसहारा।
दरिया में डूबकर भी उसे मिल गया किनारा।।
आनन्द पा लिया है,
तेरे ही दर पे आके।
अब क्या करेंगे फिर से,
दुनिया के पास जाके।।

समझाया जिन्दगी ने,
बड़े काम का इशारा।
दरिया में ....
तेरे दर से जो मिला है,
कहीं और क्या मिलेगा।
ये ऐसा सिलसिला है,
भगवान से जा मिलेगा।।
ले जाए अब कहीं भी,
तेरी ये प्रेम धारा।
दरिया में ....
आराम हो या मुश्किल,
आशा हो या निराशा।
वहीं खुद दिखा रहा है,
अपना हीं ये तमाशा।।
हारा वही है जीता,
जीता वही है हारा।
दरिया में ....
वही मेहरबान होगा,
उसे ज्ञान ध्यान देगा।
जो उसी का नाम लेगा,
जो उसी पे जान देगा।।
सुनता है वो उसी की,

जिसने उसे पुकारा।
दरिया में ....

122

तू तो बेमिसाल है सत्गुरू तेरे जैसा कौन है जहान में।
तूने जीवन मेरा पलट दिया तेरे जैसा कौन है जहान में ।।
1. तेरा चाँद-तारों में नूर है हर शै में तेरा जहूर है,
ये नजर नजर का है फासला किसी दिल से तू नहीं दूर है।
तेरा जलवा सत्गूरू हर जगह, तेरे जैसा कौन हैं जहान में।।
2. हम अमीर हैं या गरीब हैं तेरे दर पे आके फकीर हैं,
जिसे तू मिला उसे सब मिला तेरे जैसा कौन जहान में।
तू तो बेमिसाल-----------

123

तेरी साधना ही मेरी जिंदगी हो।
रजा हो जो तेरी वो मेरी खुशी हो।।
1. मेरे दिल में हरदम तेरी लौ लगी हो,
फिकर हो जो दिल में हो अपनी खता का।
जिकर हो जो लब पे वो तेरी वफा का।।
रजा हो---------
2. मुझे हर कदम पे हो तेरा इशारा,
मेरी हर नजर में हो तेरा नजारा।

उठे जो सदा वो तेरी बंदगी हो,

रजा हो-----------

3. मैं साधक हूँ इसके सिवा कुछ नहीं हूँ,

मैं तेरा हूँ तुझसे जुदा कुछ नहीं हूँ।

यही गीत लब पे मेरे हर घड़ी हो,

रजा हो---------------

124

तेरी चौखट पे सर रख दिया है भार मेरा उठाना पड़ेगा,

भार मेरा उठाना पड़ेगा चरणों से लगाना पड़ेगा।

मुझको अपना बनाना पड़ेगा।।

1. मैं तो जीता हूँ तेरे सहारे जग से न्यारे हैं तेरे इशारें,

तेरा भरा है इलाही मय खाना, तेरा भरा है मैखाना मेरे सत्गुरू।

जाम भर भर पिलाना पड़ेगा, जाम उल्फत का पिलाना पड़ेगा,

तेरी चौखट------------

2. सारी दुनिया को मैंने भुलाया तेरे चरणों से सर को लगाया,

मैं तेरा हूँ तेरा हूँ मेरे सत्गुरू लाज मेरी बचाना पड़ेगा।

तेरी चौखट----------

3. तेरे कारण ये जग बिसराया और तुझको है दिल में बसाया,

मैं तेरा हूँ तेरा हूँ मेरे साहिबा, मेरा मान बचाना पड़ेगा।

मैं भला हूँ बुरा मेरे साहिबा मुझे अपना बनाना पड़ेगा।।

तेरी चौखट----------

125

तेरा दर्श पाने को जी चाहता है,

खुदी को मिटाने को जी चाहता है।

हकीकत दिखा दो हकीकत वाले,

हकीकत दिखा दो जी चाहता है।

बहे राम जी की मोहब्बत का दरिया,

मेरा डूब जाने को जी चाहता है।

पिला दो मुझे जाम भर-भर पिला दो,

कि मस्ती में आने को जी चाहता है।

गमी जुस्तजू देखकर जुदा करने वाले,

तेरे पास आने को जी चाहता है।

ये दुनिया है सारी नजर का ये धोखा,

कि हर शय लुटाने को जी चाहता है।

पुकारो मेरा नाम ले-ले पुकारो,

अगर फिर बुलाने को जी चाहता है।

न ठुकराओ ये मेरी फरियाद अब तुम,

तुम्ही में समाने को जी चाहता है।

126

तेरे नाम का आसरा मिल गया है,

खुदा की कसम मुझको खुदा मिल गया है।
तेरे दर पर थोड़ा सा सर को झुका ले,
बनाई है किस्मत तेरे पास आके,
मुझे तेरे घर का–2 पता मिल गया है ....
वो कहते हैं मुश्किल बड़ा तेरा पाना,
मैं कहती हूँ समझा नहीं ये जमाना,
मुश्किल नहीं है–2 तेरी मेहर को पाना ....
न यम का है खतरा न मौत का डर है,
मुझ पर मेरे सत्गुरू की नजर है,
जहाँ तू है रहता –2 वो दुनिया अमर है........................
तू करतार तेरी बड़ी मेहरबानी,
मुझे तूने दे दी है नई जिन्दगानी ,
मुझे शाहों का शाह–2 खुशनसीब मिल गया है......................

127

तू अपने घर में जरूर आ जा।
खुदी के बदले खुदा को पा जा।।
क्यों इतने अरसे परदेश रहना,
जुदाई के गम न तू इतने सहना,
तू छोड़ परदेश घर में आ जा....................
क्यों छोड़ घर के महल दो महले,
क्यों खाक जंगल की छाने अकेले,
तू बच द्वन्द्व से घर में आ जा.......................

नदी ने ज्यों ही खुदी मिटाई,
बनी समुन्दर मिटी जुदाई,
नदी के बदले बनी वो दरिया.....................
खुदी के जंग को रगड़ के धोना,
अभ्यास करना न गाफिल होना,
खुदी गई फिर खुदा को पा जा ....
ये नाम रूप सब मिथ्या है सारा,
बना हुआ है सब उसका पसारा,
तू हस्ति, भाँति, प्रिय में आ जा............................
न नूर किरणों पर मस्त होना,
न ठहर रास्ते मंजिल को खोना,
तू असली अपने नूर में समा जा............................
तू शीश खो दे और ईश पा ले
तू त्याग सब कुछ और राज्य पा ले
तू बन के राजा महल सजा जा...............................

128

तेरी शरण में जो आ गया, भव से उसे छुड़ा दिया।
चाहे वो कैसा भी पात की, पावन उसे बना दिया।
दर–दर भटकता वही है, जो तेरी शरण में गया नहीं।
भूले से अगर गया कभी, रास्ता उसे बता दिया।
भाग्य प्रबल उसी का है, त्याग सफल उसी का।
जीवन सफल उसी का है, जिसको तूने जगा दिया।

जिसको भरोसा हो गया, बेड़ा हीं पार हो गया।
अलमस्त फिर वो हो गया, प्याला जिसे पिला दिया।
जिसकी लगन हो आप से, उद्धार होवे पाप से।
छुट जाये यम के ताप से, शीतल उसे बना दिया।
तुम तो पतित के नाथ हो, भक्त जनों के साथ हो।
मुझसे अधम विमूढ़ को, दाता तूने अपना लिया।

129

तेरा नाम सत्गुरू जी है सुखकारी।
हुए दूर मन की सभी बेकरारी।।
कठिन से कठिन मुश्किलें पेश आई,
मगर सर से टल जाए सारी बलाएँ।
करे प्रेम से याद जो भी तुम्हारी।।
हुए दूर मन ....
गुरू नाम दाता मेरी सम्पदा है,
बिना इसके दुनिया का सब कुछ फना है।
लगा नाम से लौ नफा इसमें भारी।।
हुए दूर ....
जहाँ नाम तेरी वहीं रोशनी है,
कि दोनों जहानों की दौलत वहीं है।
तेरे नाम में ऐसी शक्ति है भारी।।
हुए दूर ....
जगत से हटा दिल जो तुझको ही ध्याए,

उसे फिर भला काम कैसे ही आएँ।
जिसने भी फकत तेरी ओर है धारी।।
हुए दूर ....

130

तू-तू न रहे मैं-मैं ना रहूँ,
हम राम में ऐसे मिल जाऐ।
पानी में मिले जैसे नमक डली,
हम राम में ऐसे मिल जाये।।
अब कोई करम का खात नहीं,
जब राम में हम सब रम ही गए।
कोई लोक नहीं परलोक नहीं,
जब सत्गुरू का आदेश मिला।।
कहीं काम, क्रोध, लोभ में फँसकर,
हम घुट-घुट कर न मर जाएँ।
ऐसी दया करो दयावान मेरे,
इसी जन्म में तुमसे मिल जाएँ।।
जब राम में हम सब रम ही गए,
फिर तुम ही बताओ कि जाएं कहाँ।
ऐसी दया करो दयावान मेरे,
इस जन्म-मरण से छुट जाएँ।

131

तेरे नाम की लौ कुछ ऐसी लगी।

पल भर भी तुझे बिसरा न सकूँ।।
कुछ प्रेम में आँखियाँ भर आई।
कुछ प्रेम में ऐसा दिल डूबा।।
अपनी हालत खुद ही समझूँ।
लेकिन तुमको समझा न सकूँ ।।
पथ भूले की हो राह तुम्हीं।
मेरे जीवन की हो चाह तुम्हीं।।
तुम पास रहो हरदम इतने।
फिर भी तुझको मैं पा न सकूँ।।
जीवन की मधुमय राहो में।
तुम मेरे साथी हो ही चुके।।
इस प्रेम भरी महफिल में अब ।
तुमको मै कभी बिसरा न सकूँ।।

132

तेरे फूलो से भी प्यार तेरे कांटों से भी प्यार।
जो भी देना चाहे दे दे करतार दुनिया के पालनहार।।
चाहे दुःख दे या सुख।
चाहे सुखी देय या गम।।
मालिक जैसे भी रखेगा।
वैसे रह लेगे हम।।
चाहे हँसि भरा संसार।
चाहे आँसुओं की धार।।

जो भी ....
हमको दोनों है पसंद।
तेरी धूप और छाँव।।
दाता जिस भी दिशा में ले चल।
तेरी जिन्दगी को नाव।।
चाहे नइया लगा दे पार।
चाहे डूबे मझधार।।
जो भी...................

133

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना।
कि मैं बोझ उठाने के काबिल नहीं हूँ।
मैं आ तो गया हूँ तेरे दर पे लेकिन।।
मैं इस दर पे आने के काबिल नहीं हूँ।
तेरा नाम हरगिज जुबाँ पे न लाया।।
जमाने की चाहत में खुद को मिटाया।
तलब गार था न मैं वफादार था न मैं।।
तुझे मुँह दिखाने के काबिल नहीं हूँ।
ये माना कि दाता हो तुम सब जहाँ के।।
मगर झोली कैसे मैं फैलाऊँ आगे।
जो पहले दिया हैं वही कम नहीं।।
उसी को उठाने के काबिल नहीं हूँ।
तमन्ना यहीं है कि मैं सर झुकाऊ।।

तेरी महिमा एक बार जी भर के गाऊँ।
सिवा दिल के टुकडों के ऐ मेरे मालिक।।
मैं कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूँ।

134

तेरा मेरा प्यार अमर, फिर क्यूँ मुझको दुनिया का डर,
मेरे सत्गुरू मैं तेरी शरण, तू ही दाता तू ही रहबर।।
संसार नहीं है रहने को, यहाँ दुःख ही दुःख है सहने को,
जाना है मुझको प्रेम नगर, फिर क्यों मुझको लगता है डर।
तेरा मेरा..
मझधार में है जीवन नैय्या, नैय्या के हो तुम ही खिवैय्या,
तू ही माँझी तू ही साहिल, फिर क्यूँ मानू मैं दुनिया का डर।
तेरा मेरा..
ज्ञान का दीपक जलाया तुमने, संशय भरम मिटाया तूने,
पाई मैनें सच्ची डगर, फिर क्यों मुझको दुनिया का डर।
तेरा मेरा..
आत्म रूप का प्याला पिलाया, देखा रूप अपने में आला,
हो गया मैं तो अजर अमर, फिर क्यों मुझको दुनिया का डर,
तेरा मेरा..
जिसकी मुझे तलाश थी, जन्मों की मुझको आस थी,
गुरूवर में पाया अपना वो घर, फिर क्यों मुझको दुनिया का डर।
तेरा मेरा..

135

तुम मेरे जीवन के धन हो और प्राणाधार हो।
एक तू दाता दयालु सबके पालनहार हो।।
जागते सोते कभी भी मै तुम्है भूलू नही।-2
वेश दो राजा का मुझको या गले तक हार दो।।
भर रहे धन धन्य से ही सबके तुम परिवार को।-2
देके तुम थकते नहीं हो ऐसी तुम सरकार हो।
जप रहे तेरा नाम पंछी गीत गाती है पवन।।
रंग रहे रंगों से जग को ऐसे रचनाकार हो।
जिंदगी की नाव मैंने सौंप दी प्रभु आपको।।
तुम डुबाओं या बचाओं मेरे खेवनहार हो।

136

तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया हैं।
जमीं तो जमीं आसमां पा लिया है।।
तुम्हारे ही प्रेम में बनी हूँ मैं जोगन,
सिवा तेरे मेरा कोई न भगवन।
जड़ और चेतन में तुम्हें पा लिया है,
जमीं तो जमीं..
दुनिया की नेमत कुछ भी नहीं है,
फिर भी ये मूरख भटकते रहे हैं।
सच्चा ये खजाना यहाँ पा लिया हैं,
जमीं तो जमीं आसमां पा लिया है..................

हमें जो मिली ये सच्ची मस्ती,
मिटा ना सकेगी ये कोई भी हस्ती।
सबमें ऐ भगवन तुम्हें पा लिया है,
जमीं तो जमीं...

137

तेरे चरणां विच रहां मैं गुरूदेव ऐसा वर दें,
निकलन ये सांस मेरे तैनू याद कर दे कर दें।
1. ऐ दो जहां दे मालिक तू हर दिल दे नाल,
कइयां ते कीति रहमत मेरी भी झोली भर दे।
2. बे रंग दे नशे में पींदा कोई नसीब वाला,
कई टुर गये इस जहां से तकरार कर दे कर दे।
3. दुनिया दी भीड़ अंदर दामन न मैं तेरा छोड़ूँ,
वर दे मैं गिर न जावां अहंकार कर दे कर दे,
4. बिसरे कभी न मैनू तेरा नूर ये नूरानी,
अंख भी कभी न झपके दीदार कर दे कर दे।
5. संतोष मिल गया है पाके रतन नूरानी,
इकरार हो गया हैं इनकार करते करतें।

138

तेरे करम से हे दयालु कौन सी शय मिली नहीं।
झोली ही मेरी तंग है तेरे यहाँ कमी नही,
जीनों को जी रहा हूँ मै मालिक तेरे बगैर भी।-2
मालिक तेरे बगैर भी,

जिन्दगी जिसको कह सकू ऐसी तो जिन्दगी नही,
तेरे करम ....
कबसे पुकारता है दिल सुनता मगर कोई नही-2,
सुनता मगर कोई नही।
मेरा तो इस जहॉन में तेरे सिवा कोई नहीं,
तेरे करम ....
माना कि मैं गरीब हूँ माना कि मैं फकीर हूँ।
माना कि मैं फकीर हूँ-3
ऐसे न मुझसे रूठिये जैसे मेरा कोई नहीं,
तेरे करम ....

139

तेरी इको ही झलक मेरे लखाँ हो मरज।
यही है अकसीर मेरे सत्गुरू।।
तैनू राम कहाँ कि मै कृष्ण कहाँ
तू तो दोवा दा है पीर गुरू....................
श्री राम दे विच बल भारी सी।
पर आखर धनुष धारी सी।।
इथे धनुष नही कोई बाण नहीं।
तेरी आँख शमशीर मेरे सत्गुरू................
श्री कृष्ण दी मुरली बजदी सी।
ते खलकत उठ-उठ भजदी सी।।
अंसा बिन मुरली ते बिन तानां।

तेरी वाणी हो फकीर मेरे सत्गुरू।।
की जाणां की तू कीता है।
पल भर दे विच लुट लीता है।।
मेरे रोम-रोम दे नाल छुपी।
तेरी इस तस्वीर मेरे सत्गुरू।।
तैनू राम ....

140

तुमने मुझको प्यार किया है इतना कौन करेगा इतना
तुमने मुझपे एहसान किया है इतना कौन करेगा इतना
तुमसे कैसे मिलन हुआ था हम खुद समझ न पाये
तेरे थे हम तेरे ही है तेरे ही रह जाये
प्यार से तुमने खींच के मुझको बना लिया अपना
जब मैं कुछ भूल गई थी तुमने आ के संभाला
गोद में अपनी मुझको बिठाकर ज्ञान का राज बताया
तोरी नजर ने चुपके-चुपके घायल किया है जितना
तेरे मेरे प्यार में अब तो और न कोई आये
चाँद चकोरी बनके जगत में प्रेम के गीत हम गाये
कैसे कहे हम प्यार में तेरे जलते रहे है जितना

141

तेरा प्यार खींच कर लाया मोहे सावरिया तेरे द्वारे
जब अपना आप भुलाया तब दर्शन पाये तिहारे
तेरे द्वारे पे जो आये वो खाली कभी न जाये

जो जैसा भाव जागाये वह वैसा ही फल पाये
तू करे कृपा की छाया और बिगड़े काज सवारे
कोई प्रेमी तुम्हे ध्याये ज्ञानी भरम भेद मिटाये
कोई योगी योग लगाये कोई रो-रो तुझे पुकारे
तूने सबको गले लगाया ओ दुनिया के रखवाले
मेरी तुम संग प्रीत मुरारी और झूठों सब दुनिया दारी
तेरी लीला सबसे न्यारी कोई जाने है अधिकारी
तेरा भेद न कोई पाया ऋषि मुनि जतन कर हारे

142

तू ही सागर तू ही किनारा ढूँढ़ता है किसका सहारा
कभी मन में उलक्षा कभी तन में उलझा
सबसे जीता तू अपने से हारा
जिसका साया उसी का तू दर्पण
तेरे सीने मे है उसी की धड़कन
तेरे आँखो में उसका इशारा
पाप क्या है पुण्य क्या है भुला दे
कर्म कर तू फल की इच्छा मिटा दे
ये परीक्षा न होगी दुबारा
विष निकाले या अमृत निकाले
लगाले डूब के थाह अपनी ही
तू ही शिव है तू ही शिव का दुलारा

143

तू जहाँ जहाँ रहेगा मेरा निश्चय साथ होगा
तुम्हीं ने मुझको दीं है खुसियों की बादशाहीं
हर वक्त याद आती है बेगम की बादशाही
तू अगर छुपा रहेगा मेरा निश्चय साथ होगा
मै अगर कहीं भी होती तो भी याद है तू प्रभु
एक पल भी रह न सकती तेरी याद बिन ऐ प्रभु
चाहे जितना दूर होगा मेरा निश्चय साथ होगा
इस जगत् के हर जर्रे में तेरी भक्ति देखती हूँ
जो कदम कदम चलूँ मैं मेरा निश्चय साथ होगा।

144

तेरी हीरा जैसी स्वाँसा बातों में बीती जाये रे मन राम भयो।
गंगा जमुना खूब नहाया गया न दिल का मैल।।
घर घन्धों लगा हुआ है ज्यों कोल्हू का बैल।
तेरे जीवन की आशा बातों में बीती जाये रे मन।।
किया पौरूष आकर जग में दिया न कुछ दान।
मेरी तेरी करता निकल गया यह प्राण।।
जैसे पानी बीच बताशा, बातों में बीती जाये रे मन
पाप गठरिया सर पर लादे रहा भटकता रोज
प्रेम सहित राधा माधव का किया न कुछ भी खोज।
झूठ करता रहा तमाशा बातों में बीतीं जाये रे मन।।
नस नस में प्रीत रोम रोम में राम रमा है जान।

प्रकृति बिन्दु के कण में भी उसको तू पहचान।।
उससे मिलने की अभिलाषा बातों में................

145

दूर करदे जो दीन और ईमान से,
ऐसी शान और शौकत नहीं चाहिए।
मिल गई तेरे दर की गुलामी हमें,
अब जमाने की दौलत नहीं चाहिए।।
ऐ मेरे चारागह मैं तो बीमार हूँ,
मुझको झूठी मुसर्रत नहीं चाहिए।
मेरे दिल में है तेरी मोहब्बत का गम,
अब जमाने की राहत नहीं चाहिए।।
जिन्दगी जो तेरी रहमत में कटे,
मौत वो जो तेरे दर पे आके मिले।
जिसमें मोहन का हो इतना रहमो करम,
फिर कहीं की हुकूमत नहीं चाहिए।।
तेरा दर है इधर और जन्नत उधर,
फिर कोई आके पूछे मेरा फैसला।
तेरे दर से है मुझको हकीकत प्रभु,
साफ कह दूँगा जन्नत नहीं चाहिए।।
अलमस्त की बादशाही को मैं क्या करूँ,
मेरी शाने फकीरी सलामत रहे।
तेरे टुकड़ों पे पलते रहे अब तलक,

अब जमाने की शोहरत नहीं चाहिए।।
अब तो घबराके आया हूँ दर पे तेरे,
कुछ तो पा जाएगें कुछ गवा जाएगें।
जिन्दगी के लिए बन्दगी चाहिए,
बन्दगी के लिए जिन्दगी चाहिए।।
दूर करते ....

146

देखा दुनिया का झूठा झमेला।
तो मन को हटाना पड़ा।।
1 गर्भ के दुःख जो थे समझ हीं चुके,
बालापन बेसमझ में गुजर हीं चुके।
इस तरह से पिटे मार खाने में आँसू बहाना पड़ा।। देखा.........
2 मात पित भ्रात परिवार अपना लिया,
मोह के जाल में फँस धोखा किया।
कुछ मरे कुछ जले कुछ गड़े,
और किसी को बहाना पड़ा।।देखा.........
3 पड़ गये प्रेमियों की अजब चाल में,
उम्र खोई वृथा के बुरे ख्याल में।
तन के सुख धन के सुख जन के सुख,
में समय को गवाना पड़ा।। देखा.........
4 इस तरह चोट पर चोट खाते रहे,

तड़पते रहे कुछ भुलाते रहे।
कर्म संचित जगे भ्रम भगे,
तब शरण गुरू की आना पड़ा।। देखा............
5 अब गरज बेगरज न कुछ संसार से,
खेल था खेल डाला इसी चाल से।
गुरू ने झगड़ा खत्म कर दिया,
अब न आना न जाना पड़ा।। देखा.............

147

दरबार मे सच्चे सतगुरू के दुःख दर्द मिटाए जाते हैं,
दुनिया के सताए लोग यहाँ सीने से लगाए जाते हैं।
1 ये महफिल है मस्तानों की हर शख्स यहां मस्ताना हैं,
भर भर के जाम इबादत के यहां सबको पिलाए जाते हैं।
दरबार में.........................
2 इल्ज़ाम लगाने वालों ने इल्ज़ाम लगाए लाख मगर,
तेरी सौगात समझ कर के ये सर पे उठाए जाते हैं।
दरबार में.........................
3 जिन प्यारों पर ए जग वालों हो खास इनायत सतगुरू की।
उनको ही संदेशा आता हैं और वो ही बुलाए जाते हैं।।
दरबार में.......................
4 तुम डरते हो ऐ जग वालों इस दर पर शीश झुकाने से।

ऐ नादानों इस दर पर ही सर भेंट चढ़ाए जाते हैं।।

5 पापी से पापी बाँह पकड़ यहाँ पार लगाए जाते हैं।

जो तंग आए इस जीवन से इस दर पे हँसाए जाते हैं।।

दरबार में......................

148

दस्तूरे मोहब्बत बस हैं यहीं हस्ती को मिटाना पड़ता हैं,

जरा गफलत हुई या नजरें झुकी चहुं ओर सभी ने लूट लिया।

गुरूज्ञान का दीपक हृदय में हर वक्त जलाना पड़ता है।।

1. भगवान का पाना तो आसान हैं,

सत्गुरू का मिलना मुश्किल हैं।

सच्चा सत्गुरू पाने के लिए सर भेंट चढ़ाना पड़ता है,

दस्तूरे मोहब्बत-------------

2. मंदिर में गयें मस्जिद में गयें,

फिर भी आत्मा का पता न मिला।

जब समझ आई तब ये समझा सत्गुरू को रिझाना पड़ता है,

दस्तूरे मोहब्बत.......................

3. जब नजरें करम हो सत्गुरू की,

तो मंजिल भी कोई दूर नहीं,

वो नजरें करम पाने के लिए सत्गुरू दर जाना पड़ता है,

दस्तूरे मोहब्बत------------

149

दु:खों से अगर चोट खाई न होती।

तुम्हारी प्रभु याद आई न होती।।

जगाते न यदि तुम गुरू ज्ञान द्वारा,

कभी हमसे कोई भलाई न होती।

दु:खों से अगर चोट खाई न होती....................

कभी भी हमें चैन मिलता न जग में,

तुम्हारी शरण यदि आई न होती।

दु:खों से अगर चोट खाई न होती.............

सदा बन्द रहती ये आँखें हृदय की,

जो अपनी खबर तुमसे पाई न होती।

दु:खों से अगर चोट खाई न होती..............

दया-सिंधु तुमको समझ ही न पाते,

जो ज्ञान की ज्योति जगाई न होती।

दु:खों से अगर चोट खाई न होती.............

कहीं भी किसी का न कहीं था ठिकाना,

तुम्हारे यहाँ जो सुनाई न होती।

दु:खों से अगर चोट खाई न होती............

150

दानी मेरे गुरु जैसा दानी कहाँ पाओगें।

जानते है घट-घट की इनसे क्या छुपाओगें।।
इन्सा तो इनसा है देवता नहीं होता।
सुख में वो हँसता है दुख में है वो रोता।।
दानी मेरे गुरू ....
दोहा – गम की गहरी धूप से बच पाना आसाँ नहीं होता।
सुनसान अनजान राहों में कौन परेशां नहीं होता।।
सूखे हुए पेड़ पर कोई पंछी बैठे तो कैसे।
आशियाँ उसका वहाँ महफूज नही होता।
धीरज अगर न रहा तो धर्म क्या निभावोगें।।
कैसी शरम इनसे ये देव बड़े प्यारे है।
दीनों के साथी है हारों के सहारे है।।
दानी मेरे..
दोहा- रेत मुठ्ठी में बन्द नहीं होती।
ओस की बूँदो से कभी तृप्ति नहीं होती।।
बेमुरव्वत दुनिया से आसरा क्या माँगे।
बिन माझी के नाव भँवर से पार नहीं होतीं।।
ले लो शरण इनकी मौज तुम उड़ावोगे।
छोड़ो पढ़ी और सुनी ये अनुभव हमारा है।।
मुझको तो दुनिया में मेरे गुरू का सहारा है।
दानी मेरे गुरू ....
दोहा- बादलों के बीच छुपी बरसात को देखो।
पत्थरों के बीच जीव के श्रृगांर को देखो।।

आँधियों के बीच जलते हुए चिराग ने कहाँ।
मुझको क्या देखे देखना है तो सृष्टि के करतार को देखो।।
दानी मेरे गुरू ....
भक्तों को रहे न कमी दात एंसी पाओगे।
यादता है खुशियाँ तू घर में तेरे आ जाये।।
ध्यान गुरू चरणों में हर घड़ी लगाया कर।
बेवजह की चिन्ता में खुद को न फँसाया कर।।
दानी मेरे गुरू ....

151

दाता तेरा नाम अमर फिर क्यो मुझको दुनिया का डर।
है ये मेरी प्रार्थना नाम जपूं सदा तेरा।।
मुझ पर कृपा हो तेरी रहूँ न चरणों से जुदा।
मुझ पर रहे तेरी रहम नजर फिर क्यों.............
झूठा मे संसार है झूठी माया जाल है।
रख लो अपनी शरण में बाकी सब जंजाल है।।
तेरी दया हो जाये अगर फिर क्यों..................
भूला हूँ मै भटका हूँ कोई नहीं जहान में।
तू ही तू रहे सदा तेरा नाम जहान में।।
हृदय में रहे तेरे चरण कमल फिर क्यों..............
सतगुरू देवों के देव हो जग के तारणहार हो।
मुझको है तेरा ही आसरा जग का तू ही आधार है।।
दासी के सिर पर हाथ तू धर फिर क्यों...............

152

दिया है तूने आतम चोला कैसे ऋण ये चुकाएं।
हमारा जनम नया है, हमारा जनम नया है।।
ओ भोले साथिया तूने भी दिया अपना रंग है।
अपना बनाने का क्या ढंग है।
तेरी दया पर हम इतरायें पाई खुसी लुटाएं।।
हमारा जनम नया है।
ओ भोले साथिया तू तो जड़ भी और चेतन भी।।
सृष्टि नही तू अन्य है बनके घटाये घिर आये।
अमृत रस बरसाये हमारा जनम नया है............
ओ भोले साथिया तू तो निराला जग में संत है।
तेरी महिमा का नही अंत है।।
अब तो हमको दुःख न सताये माया शोक मनाये।
हमारा जनम नया ....

153

दुनिया में आके बंदे भूला तू अपना करार है।
तेरे लिये भगवान ने कैसी रची बहार है।।
माया ने तुझको बावरे अपना दीवाना कर दिया।
भक्ति प्रभु की छोड़ कर विषयों से करता प्यार है।।
तेरे लिये भगवान ने कैसी रची बहार है।
लाखो हरि उपकार किये भक्तो के बेडे पार किये।।
सच्चे मन से जो याद करे होता वह मददगार है।

तेरे लिये भगवान ने कैसी रची बहार है।।
वादा गर्भ में था किया भूलूँगा तुझको न हरि।
फस के माया जाल में विषयों से करता प्यार है।।
तेरे लिये भगवान ने कैसी रची बहार है।

154

देखो संतो दिन सुहाना आ गया।
खुद खुदा रहमत बरसाने आ गया।।
ढूंढते थे हम जिसे वीराने में।
घट मे ही उसने खुदा दिखला दिया।।
जल रहे थे अहमता की आग में।
समता का अमृत पिलाने आ गया।।
धर्म कहता है किस मजहब के हो।
राज रूहानी वो बताने आ गया।।
इनकी वाणी में है संतो वो असर।
मुर्दा भी श्वांसो की पूंजी पा गया।।
आस है चरणों की छूटे न कभी।
प्यार का रिश्ता निभाने आ गया।।

155

दाता तेरे चरणों की गर धूल जो मिल जाये।
मुरझाई कली दिल की एक आन में खिल जाये।।
दाता तेरे.......................................
ये मन बड़ा चंचल हैं चिन्तन में नही लगता।

जितना इसे समझाऊँ उतना ही मचल जाये।।
दाता तेरे.......................................
नजरों से गिराना ना चाहे जितनी सजा देना।
नजरों से जो गिर जाए मुश्किल है सम्भल पाना।।
दाता तेरे ....
सुनते है तेरी रहमत दिन रात बरसती है।
एक बूँद जो मिल जाए तकदीर बदल जाये।।
दाता तेरे............................
दाता तेरे चरणों में बस इतनी तमन्ना है।
तू सामने हो मेरे, मेरा दम ही निकल जाये।।
दाता तेरे ....

156

दिल में गुरू के ज्ञान का जलता हुआ दिया।
माया की आंधियों से भला ये बुझेगा क्या।।
ये जिन्दगी भी क्या है अमानत गुरू की हैं।
ये ज्ञान की भी देन इनायत गुरू की हैं।।
अब वो दया करे ही करे अनसे प्रार्थना।
हमने तो अपना सब उन्हें अर्पण है कर दिया।।
दिल में.......................................
जब तक है ये जिन्दगी रहे ज्ञान साथ में।
मन की भी ये लगाम रहे गुरू के हाथ में।।
अब वो कृपा करे ही करे मेरी प्रार्थना।

हमने तो शीश उनके चरणों में रख दिया।।
दिल में.................................
ये सत्य है अटल है निराकार है गुरू।
भक्तों के लिये आता है साकार में गुरू।।
अब वो दया करे ही करे उनका फैसला।
हमने तो अपना सब कुछ अर्पित है कर दिया।।
दिल में..................................

157

न मिलता सुख तेरे दर पे,
तो दिवाने कहाँ जाते।
अगर दुनिया में सुख होता,
तो मेरे दर पे क्यों आते।।
चलो अच्छा हुआ हमको,
जहाँ ने खूब ठुकराया।
अगर सब प्यार ही करते,
तो मेरे दर पे क्यों आते।।
मेरे प्रभु तापहारी हैं,
सभी का ताप हरते हैं।
वो भक्तों के हितकारी,
भक्त के वश में रहते हैं।।
भक्त का यूँ दुःखी होना,
मेरे प्रभु को न भाता है।

वो भक्तों के दुःखों का देख,
निज आँसू बहाते हैं।।
जमाने के दुखों को,
मेरे प्रभु ने हँस के झेला है।
उसी का फल यहीं है आज,
सिंहासन बिराजे हैं।।

158

न कर अब तू तेरा मेरा।
टूटेगा अभियान जो तेरा।।
1 दिल में प्रभु का नाम नहीं हैं,
जींवन में कुछ सार नहीं हैं।
कर्म धर्म बेकार हैं तेरा।। टूटेगा..........
2 ये जग हैं झूठा सपना,
फिर क्यों माना हैं इसको।
अपना टूटेगा तो पड़ेगा रोना।। टूटेगा..........
3 ये धन पाप का कमाया है तूनें,
ये सामान जो बनाया है तूने।
सब है प्रभु की अमानत का डेरा।। टूटेगा...........
4 इस जग की तू प्रीत छोड़ दे,
सतगुरू आगे शीश चढ़ा दे।
काट ले जनम मरण का फेरा।। टूटेगा............

159

न मैं मन ही रहा न मैं तन ही रहा,
सत्गुरू मिलने से झगड़ा खत्म हो गया।
मैनें गर्भ में वायदे किये राम से,
सत्गुरू की कृपा से पूरा हो गया।
न मैं..
नहीं मात पिता सुत दारा मिले,
खेल जादू का अब तो खत्म हो गया।
न मैं..
कुटुम्ब वालों क्यों झगड़ा फैलाते हो,
जाल इन्द्र का अब तो भस्म हो गया।
न मैं..
अगर बनना है तो फिर योगी बनो,
और बनना बनाना खत्म हो गया।
न मैं..
कराये योग पिलाये प्रभु प्रेम रस,
भीतर बाहर गुरू ही गुरू रह गया।
न मैं..
प्यारे सत्गुरू की महिमा मैं कैसे करूँ,
दास होना था अब तो वही हो गया।
न मैं..

160

नदिया न पिये कभी अपना जल,
वृक्ष न खाये कभी अपना फल।
अपने तन का, मन का, धन का,
दूजों को दे जो दान रे,
वो सच्चा इन्सान रे इस धरती का भगवान रे।
नदिया न ....
अंगार–सा जिसका अंग जले,
दुनिया को भींनी सुवास दे,
दीपक सा जिसका जीवन है,
दूजों को अपना प्रकाश दे,
धर्म है जिसका भगवत्गीता,
सेवा ही वेद पुराण है।
वो सच्चा..................................
चाहे कोई गुणगान करे,
चाहे करे निन्दा कोई,
फूलों से कोई सत्कार करे,
चाहे काँटे चुभा डाले कोई,
मान और अपमान ही दोनों,
जिसके लिये समान है।
वो सच्चा...

161

निगाहों में तुम हो ख्यालों में तुम हों,
ये जन्नत नहीं है तो फिर और क्या है।
मेरे दिल को तूने जो दर्द दिया हैं,
मोहब्बत नहीं है तो फिर और क्या है।
ये माना कि मुझसे मोहब्बत नहीं है,
ये माना कि मेरी जरूरत नहीं है।
मगर मीठी नजरों से दिल मांग लेना,
जरूरत नहीं है तो फिर और क्या है।
मेरे दिल में बिजली गिराई है तुमने,
और इस बात से मन हरते है।
मेरी इन अदाओं पे ओं हंसने वाले,
शरारत नहीं है तो फिर और क्या है।
मेरे आसुओं की तरफ तुम न देखो,
तुम अपनी कयामत की नजरों को रोको।
निगाहें मिलाके नजर फेर लेना,
कयामत नहीं है तो फिर और क्या है।

162

निंदिया वाही के घर जइयो।
जिस घर राम भजन न होय।।
1. एक पहर धन्धे में बीता।
एक पहर गये सोय।।

एक पहर हरि नाम न लीन्हो।
मुक्ति कहाँ से होय।।
2. या तो जागे रण विच राजा।
या जागे कोई चोर।।
या जागे कोई साधु महात्मा।
लगि राम संग डोर।।
3. गहरी नदिया नाव पुरानी।
डग-मग,डग-मग होय।।
जब यह नइया डूबन लागी।
दइया मइया होय।।

163

न जाने इन्हे हम क्या समझे जो इनपे भरोसा कर बैठे।
उन्हीं के झूठे वादों पर दिल नजरे तमन्ना कर बैठे ।।
मालूम न था ले जायेगी दिल की लगी उस मंजिल तक।
हम इश्क में इतना मगन हुए सत्गुरू को सजदा कर बैठे।।
सब खोकर भी हम कुछ पा न सके।
वो हमसे अलग हम उनसे अलग।।
दुनिया जिसे देखे और हंसे हम ऐसा तमाशा कर बैठे।।
इस शोख नजर की मस्ती का।
अन्जाम किसी से क्या कहिये।
पड़ जाये अगर मैखाने पर मैखाना भी तौबा कर बैठे।।

164

नूर देखा है जब से तेरा सत्गुरू।
आँख मेरी खुली की खुली रह गयी।।
मै ऐसी ठगी का क्या बताऊँ तुम्हे।
जैसे साँचे मे मूरत ढ़ली रह गई।।
तेरे जलवों के दरियें में बह गई।
इन इशारों पे दिल मेरा भर गया।।
तेरे बे रंग नजरो में उलझी हुई ।
मेरे नन्हे से दिल की कली खिल गई।।
क्या सुनाया पिया तूने अमृत वचन।
रह गया हैं महक कर सब तन और बदन।।
काम करते हुए बैठते बोलते ।
तू ही तू कहने को जिन्दगी रह गई।।
डगर का अब तो पता ही नहीं रह गया।
भर गया खुसियों से सारा दामन मेरा।।
जो सदा को सुहागिन स्वय हो गई।
तुझे भक्तों ने पाया अमर सत्गुरू।।
प्यार की ऐसी प्याली पिलाई मुझे ।
होश आने की आशा लगी रह गई।।

165

प्रेम पियाला गुरू दिया रे साधो।
जासो मगन हम किया रे साधो।।

प्रेमवटि का सत्गुरू साकी,
सिर साटे हम लिया रे साधो।
पीवत प्रेम बिसर गई काया,
दिल दर्पण कर दिया रे साधो।।
आठहों पहर रहूँ मतवाला,
लाली का रंग लिया रे साधो।
चढ़ी खुमारी उतरे नाहीं,
सदा मगन मन किया रे साधो।।
प्रेम की महिमा मुख कही न जाए,
घट उजियारा किया रे साधो।
जागी जोत राम रंग लागा,
भूल भरम मिट गया रे साधो।।
प्रेम कला से ये पद पाया,
जनम मरण दुःख गया रे साधो।
कहे प्रेमी मिटी जब ममता,
सदा अमर जुग जिया रे साधो।।

166

प्यासा कोई मुसाफिर भूले से दर पे आया।
बरसा है बन के बादल तेरी रहमतों का साया ।।
प्यासा-----------
1. रहमों करम का कैसे करूँ शुक्रिया अदा मैं।
दिल ने जहाँ पुकारा वहीं दौड़ के तू आया।।

प्यासा-----------
2. पीरों के पीर मुर्शिद-मुर्शिद कमाल मेरे।
कैसे तुझे भूला दूँ मुद्दत के बाद पाया।।
प्यासा-------------
3. तेरे सामने से उठकर मैं किस तरह से जाऊँ।
तुझ-सा हसीन दिलबर अब तक नजर न आया।।
प्यासा--------------
4. वीरान हो या बस्ती सेहरा हो या चमन हो।
हर गुल में तेरी खुशबु तेरा नूर हैं समाया।।
प्यासा-----------
5. जब भी मेरा सफीना तूफाँ से डगमगाया।
तूने दिया सहारा आगे ही बढ़ता आया।।
प्यासा-----------
6 पामाल बंद गुम हो रहजन हो रहनुमा हो।
ठुकरा दिया जहाँ ने तूने गले लगाया।।
प्यासा-------------

167

पूरा सत्गुरू मिला दिया सर को झुका।
जिसे जग ढूँढ़ता है वो मिल गया।।
1. पाठ पूजा भी की द्वारे मन्दिर गये,

योग अभ्यास से मुझे मिल न सका।
पोथी पुस्तक पढ़ी फेरी माला बहुत,
पर मुरझाया दिल मेरा खिल न सका।।
संशय दूर हुए मिल गया है हरी मुझको,
पूरा सतुगुरू मिला दिया सर को झुका..................

2. कर स्नान तीरथ को क्यों जाऊँ मैं,
हरि की पौड़ी मिली मुझे हरि मिल गया।
पूरब जन्म के कर्म खुले थे यहाँ,
घर बैठे मुझे सतुगुरू मिल गया।।
नफरत बीत गई दिल में प्यार आ गया,
पूरा सतुगुरू मिला दिया सर को झुका.............

3. कभी राम बने गुरू नानक बने,
कभी बाँसुरी वाला बन कर आ गया।
दुनिया निन्दा हमेशा ही करती रही,
पर भक्तों के मन को सदा भा गया।।
मैं हूँ प्रेमी तो तू है मुरार मेरा,
पूरा सतुगुरू मिला दिया सर को झुका.................

168

पी लेने दो सतुगुरू स्वामी जी,
दीदार के अमृत का प्याला।

जिसको पीकर होते हैं अमर,
पीता है कोई किस्मत वाला।।
लेकर नैनों में प्यास तेरी,
दीदार से जन्मों के दाता।
तड़पी हूँ बहुत रोई हूँ बहुत,
विरह के दर्द की मारी।।
विरह की पीर ने नाथ मेरे,
तन–मन को व्याकुल कर डाला।
दर्शन के बिना नैनों को कहाँ,
आराम मिला पल भर के लिये।।
मछली बिन नीर जिये कैसे?
सागर से चली मिलने के लिये।
जब तक न मिले दर्शन अमृत,
मन चैन न पाये मतवाला।।
बिन तेरे सिवा दर्द कोई दुःख गम टारन हार नहीं,
मैं डूब रही भवसागर में बिन तेरे तारन हार नहीं।
दिन–रात में दासन दास तेरे,
हरि नाम की जपता है माला।।

169

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।

वस्तु अमोलक दी मेरे सत्गुरू।।

कृपा कर अपनायो पायो जी मैंने...............

चोर न लूटे कभऊँ न खूटे।

दिन-दिन होत सवायो पायो जी मैंने............

सत की नाव खेवटिया सत्गुरू।

भव सागर तर आयो पायो जी मैंने...............

मीरा के प्रभु गिरधर नागर।

हरष हरष जस गायो पायो जी मैने..............

170

पिला दे ओ साकी राम नाम की मस्ती।

तेरे कारण जान बूझकर हमने मिटा दी हस्ती।।

सिर तुझको नजराना दे दूँ एक ही बूंद पिला दे।

पीने को दिल तरस रहा है मन की प्यास बुझादे।।

सिर देने से बूंद मिलेतो वो भी जानो सस्ती।

पिला दे ओ साकी ....

राम बूंद को पीने वाले दुनिया से नही डरते।

सिर जाये तो जाये बेशक शिकवा कभी न करते।।

तेरे हवाले छोड़ दी अब तो हमने जीवन कश्ती।

पिला दे ओ साकी................................

मैं तेरे मयखाने आया लेकर मन में आशा।

जीभर के मुझे पिला दे मुर्शिद।।

वापस न जाऊँ प्यासा।

बसा रहें तेरा मयखाना उजड़ जाये चाहे बस्ती।।

171

पीती पीती-पीती अज मैं पीती ऐ,

नाम कटोरा भर-भर के अज पीती ऐ।

मेरे गुरू दीया शाँना देखो,

आज घूमां जग विच पइयाँ,

ओह्ने तारे लक्खाँ पापी,

मिट गईयां कर्मा दियां बइयाँ।

ओहना दी रीति ऐ।।

नाम कटोरा....................................

इस गुराँ दे सदके जावां,

जिन जाम पिलाया मैनूं,

हुन मस्ती दे विच झूमा,

जिन मस्त बनाया मैनूं।

गुराँ संग प्रीती ऐ।

नाम कटोरा.......................................

ना दाम कोई ऐ मंगदा,

भर-भर के पिलाये जाँदा,

निष्काम वचन सुनाकर,

सवनूँ ऐ मस्त बनादाँ।

अजब दी रीतीं ऐ।
नाम कटोरा..............................
मैं सदा चरणां विच रहँदा,
मैं मौत को लूँ नहीं डरदाँ,
ऐ नाम पियाला पी के,
सदा हसँदा ते खुश रहँदा।
प्रेम दी रीतीं ऐ।
नाम कटोरा..................................

172

प्रभु प्रेम रस को पिये जा पिये जा,
सरस अपना जीवन किये जा किये जा।
1. भरेंगे प्रभु तेरी आशा की झोलीं,
इसी आस पर तू जिये जा जिये जा।
2. जो मन ईर्ष्या द्वेष से फट चुके हैं,
ले प्रेम धागा सिये जा सिये जा।
3. अमर ज्योत जीवन में तेरे जलेंगे,
तपस्वी–सा जीवन बनाता चला जा।
4. लगाना अगर चाहें मन की वृत्ति को,
मधुर ऊँ का जप किये जा किये जा।
प्रभु प्रेम...

173

प्रेमी तू गुरू संग प्रीत लगाना,
ऐसा न हो पीछे पड़े पछताना।
मानुष तन है दुर्लभ भाई,
चाहे अगर तू अपनी भलाई,
विषय विकारों में मन न लगाना..................
भाग्य बड़े जो सतगुरू पाया,
सार शब्द गुरू ने दर्शाया,
जप हरदम कहीं भूल न जाना।
सार शब्द बिन सुरति ये भटके,
माया के जंजाल में अटके,
सतगुरू बिन न किसी न छुड़ाना।
प्रेमी श्वाँस न खाली जाये,
सुरति जुड़े तो मक्ति पाये,
निज धाम में है तेरा ठिकाना।

174

प्रभु तेरा मेरा कभी भी न प्यार बदले
फिर क्या डर है जो सारा संसार बदले
तुझे भूल के कष्ट उठाते रहे
फल अपने कर्मो का पाते रहे
दया करो मेरे मन का विकार बदले
फिर...............................

क्या हाल है जो सुनाऊँ प्रभु
क्या भेद है जो छिपाऊँ प्रभु
परदा तेरे मेरे बीच का मुरार बदले
फिर..............................
सारे मतलब के साथी है जहान मे
सच्चा प्रेम है प्रभु जी तेरे प्यार में
तेरी भक्ति से कष्टो का भार उतरे
फिर ....
एक तू ही है मेरा सहारा प्रभु
दुनिया मे न कोई हमारा प्रभु
तू न बदले चाहे दुनिया हजार बदले
फिर ....

175

पियो रे राम रस है कोई प्यासा।
है कोई प्यासा है कोई प्यासा।।
जिसके दिल में प्रेम नहीं है।
वो दिल तो सूनी सूनी है।
प्रेम बिना मन रहे उदासा।।
पियो रे राम रस.................
सत्गुरू मेरा प्रेम का सागर।
प्रेम से भर लो दिल की गागर।।
तुम भी कर लो पूरी आशा।

पियो रे राम रस..................
जन्मो की है प्यास सभी को।
फिर भी है अभिमान सभी को।।
ज्ञान बिना अभिमान न जाता।
पियो रे राम रस..................
प्रेम तो है सुख का परमातम।
हर एक दिल में है वो आतम।।
प्रेम से भूले देह अध्यासा।
पियो रे राम रस ....

176

पितु मातु सहायक स्वामी सखा,
तुमही एक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और आधार नहीं,
इनके तुमहीं रखवारे हो।
प्रतिपाल करो सगरे जग को,
अतिशय करूणा उर धारे हो।
भूले हैं हम ही तुमको,
तुम तो हमरी सुध नाही बिसारे हो।
उपकारन को कछु अन्त नहीं,
दिन ही दिन विस्तारे हो।
गुरूदेव महा महिमा तुमरी,
समझे बिरले बुद्धि वाले हैं।

शुभ शान्ति निकेतन प्रेम विरोध,
मन मन्दिर के उजियारे हो।
इस जीवन के तुम जीवन हो,
इन प्राणन के तुम प्यारे हो।

177

पाया आतम का दीदार पाया आतम का दीदार।
अन्दर बाहर एको दीखे पुरूष ना नार।।
अन्तर बाहर एको दिखे नहीं दुश्मन नहीं यार।
अन्द्र बाहर एको दीखे एक ब्रह्म निराकार।।
अन्तर बाहर एको दिखे काया माया दिनचार।
अन्तर बाहर एको दीखे नहीं मोटर नही कार।।

178

पूरन माही रहना साधो यही गुरू का कहना साधो।
पूरन ज्ञान स्वय प्रकाशी काटे नाम रूप की फासी।।
सहज समाधी करना साधो यही गुरू का कहना............
पूरन में नहीं लोक जाल है पूरन में नही जगत जाल है।
नहीं डूबा नहीं तरना साधो यही गुरू का कहना.............
पूरन में नहीं बन्ध मोक्ष है पूरन में नही पांच कोष है।
नही जीना नही मरना साधो यही गुरू का कहना............
पूरन प्रेम कोई पाया आदि अन्त का भेद मिटाया।
नहीं जीव नहीं जरना साधो यही गुरू का कहना.............

179

प्रेम जब अनन्त हो गया
रोम-रोम संत हो गया-2
1. देवालय हाँ जी देवालय,
देवालय बन गया बदन।-2
संत तो महन्त हो गया,
प्रेम जब अनन्त हो गया।।
रोम-रोम.........................
2. प्रियवर तुमसे मिलने को,
दिन-रात दुआएँ करते हैं।
जब नहीं मिलते हो प्रियतम तुम,
रोम-रोम मेरे जलते हैं।।
प्रेम.............................
रोम-रोम......................
3. प्रेम पंथ अति ही कठिन,
जैसें पेड़ खजूर।
पग-पग काँटें लगें हैं,
छिन-छिन में त्रिशूल।।
प्रेम..........................
रोम-रोम....................

180

फिक्र से वो ही खाली होता है जो सदा अंतर मुख में रहता है।
वो हीं ज्ञान अमल में लाता है जो सदा सत्गुरू में रहता है।।
1. जिसके दिल में प्रभु की याद नहीं वो अधूरा-अधूरा रहता है,
उसकी साँसे वृथा हीं जाती है जो अनमोल समय गँवाता है।
फिक्र से -----------------
2. एक कदम जो भी आगे बढ़ता है सौ कदम प्रभु आगे बढ़ाता है,
हर जगह वो हीं बसा रहता है अपने भक्तों पे नजर रखता है।
निज आनंद को वो हीं पाता है सच की तमन्ना जो लेके आता है,
फिक्र से -------------------
3. कितनी दीवारें आगे आती हैं जो कोई सच की राह पे चलता हैं,
चाहे कोई उसे गिरा भी दे वो तो गिर कर भी सँभल जाता है।
चाहे दुनिया उसे कुछ भी समझे वो तो लाखों में एक होता है,
फिक्र से ---------------

181

बेला अमृत भया आलसी सो रहा बन अभागा।
साथी सारे जगे तू न जागा।।
झोलियाँ भर रहे भाग्य वाले,
लाखों पतितों ने जीवन सम्भाले।
रंक राजा बने ज्ञान रस में सने,
कष्ट भागा सारे साथी जागे तू न जागा।।

कर्म उत्तम था नर तन जो पाया,
आलसी बन के हीरा गँवाया।
हो गई उल्टी य मति करके अपनी हीं क्षति,
सारे साथी जागे तू न जागा।।
धर्म वेदों का देखा न भाला,
वेला अमृत गया न सम्भाला।
सौदा घाटे का कर हाथ माथे धर,
रोने लागा सारे साथी जागे तू न जागा।।
काल अपना न तूने विचारा,
सर से ऋषियों का ऋण न उतारा।
हँस का रूप था गंधला पानी पिया,
बनके कागा सारे साथी जागे तू न जागा।।
सीख गुरू की अभी जान ले तू,
सच्चिदानन्द पहचान ले तू।
देह अभिमान तज शब्द सोहम् का भज,
हो विरागा सारे साथी जागे तू न जागा।।

182

बड़ा ही कठिन है मनुष्य जन्म पाना,
ये भक्ति भजन में अपने मन को लगाना।
हो जा दीवाना, दीवाना, दीवाना,
हो जा ----------------------
1. प्रभुजी ने तुझको हीं दर्शन दिए हैं,

प्रभुजी ने प्रहलाद कष्ट हरे हैं।

सुदामा को नीचे से ऊपर उठाया,

जिसे जानता है सारा जमाना।

हो जा ——————————

2. प्रभुजी ने मीरा की लाज बचाई,

प्रभुजी ने द्रोपदी की चीर बढ़ाई।

नंगे पाँव आए न देरी लगाई,

जीवन को न यूँ ही व्यर्थ गँवाना।

हो जा ——————————

3. प्रभुजी तुम्हरे भी कष्ट हरेंगे,

वो तेरे लिए कुछ न देरी करेंगे।

मगर शर्त है वो परीक्षा भी लेंगे,

दुःख आएंगे लाखों न तुम घबराना।।

हो जा ——————————

183

बहुत हैं प्रभु हमपे तुम्हारे करम।

कभी भूल से भी न भूलेंगे हम।।

1. हमारा मुकद्दर है तुमने बनाया,

बख्शी हमें चरण–कमलों की छाया।

दूर किए सारे दुःख–दर्द गम,

बहुत हैं.......................

2. गगन में चमकेंगे जब तक सितारें,

गुणावाद गायेंगे तब तक तुम्हारें।

छोड़ झूठे जग की झूठी शरम,

बहुत हैं——————

3 मिले हर जन्म में शरण तुम्हारी,

रहे तेरी उल्फत की हर दम खुमारी।

निभाते रहे हम तो सेवक धरम,

बहुत हैं——————

4 इतनी अरज दाता है तेरे आगे,

बंधे रहे तुम संग प्रेम के धागे।

चाहे बीत जाये लाखों जन्म,

बहुत हैं——————

5. प्रेम का बंधन है इतना प्यारा,

रिहाई नहीं दास को अब गँवारा।

इसी कैद में ही निकल जाये दम,

बहुत हैं——————

184

बड़ी शिद्दत से सत्गुरू जी तुम्हारी राह पाई है।

तुम्हारे दर पे आने की तमन्ना खींच लाई है।।

1. मुखातिब है तुम्हीं से हम हमारी सुन रहे हो तुम,
तुम्हारे पास रहने की तमन्ना रंग लाई हैं।
बड़ी शिद्दत---------
2. मिली है ज्ञान से राहत तुम्हारे प्यार से रौनक,
तुम्हारे वचनों से ठंडक हमारे दिल में आई हैं।
बड़ी शिद्दत---------
3. हमारे दिल में बस तुम हो तुम्हारी याद इस दिल में,
तुम्हारी चाह की लाली हमारे उर में छाइ हैं।
बड़ी शिद्दत---------

185

बनवारी रे जीने का सहारा तेरा नाम रे।
मुझे दुनिया वालो से क्या काम रे।।
झूठी दुनिया झूठे बंधन झूठी है ये माया।
झूठा श्वांस का आना जाना झूठी हे ये काया।।
ओय हाँ साचा तेरा नाम रे....................
रंग में तेरे रंग गई गिरधर छोड दिया जग सारा।
बन गई तेरे प्रेम की जोगन लेके मन इक तारा।।
ओ मुझे प्यारा तेरा धाम रे....................
दर्शन तेरा जिस दिन पाऊँ हर चिंता मिट जाये।
जीवन मेरा इन चरणों में आस की ज्योत जगाएं।।
ओ मेरी बांह पकड़ लो श्याम रे..................

186

बार बार वन्दना हजार बार वन्दना,
भक्तों के भगवन को बार-बार वन्दना।
सत्गुरू देव को बार-बार वन्दना।।
1. सुन लो गुरू जी विनती हमारी।
हम पर कर दो जरा सी मेहरबानी।।
रक्षा करो हे अन्तरयामी।
हरि हरि ऊँ ऊँ हरि हरि ऊँ ऊँ।।
2. इक पल प्रभु न हमको भुलाना।
चरणों में देना हमको सहारा।।
माया के चक्कर से हमको बचाना।
शरण पड़े की लाज बचाना।।
हरि हरि ऊँ ऊँ हरि हरि ऊँ ऊँ।।

187

बड़े भाग्य तेरे जो नर तन पाया,
न यूँ ही गँवाना न यूँ गँवाना।
इतना समझ ले आखिर ओ बन्दे,
कहाँ है ठिकाना कहाँ है ठिकाना।।
नर तन को तरसे देव जन सारे,
वेद ग्रन्थ गीता कुल ये पुकारे।
मिल ले प्रभु से है मिलने की बेला,
नहीं तो पड़ेगा चौरासी से जाना।

सुहाना समय ये फिर न मिलेगा,
राज हकीकत बिन गुरू न खिलेगा।
सत्गुरू शरण में सिर को झुका दे,
मिल जायेगा तुझे ये नजराना।
प्रभु मैं हूँ तेरे शरण में आया,
मुक्ति ये दे दे जिसने सर को झुकाया।
निज घर को जाने जो सत्गुरू शरण को,
खत्म होगा उसका आना और जाना।।

188

बदला तेरी रहमतों का दे ना पाये हम।
अवगुणों से हम भरे हैं गुण बहुत हैं कम।।
होता है ज्योति बिना जैसे दिया बे नूर,
चलती फिरती हम थीं लाशें जिन्दगी से दूर।
ज्ञान देके जान डाली कर दिया कर्म,
तन था मैला मन था मैला थी नजर मैली,
हो गई जीवन की चादर इस कदर मैली।
आज चमके इस तरह जैसे कोई पूनम,
ये खुराके ये पोशाके और ये सिंहासन,
हम कहां थे इसके काबिल ऐ मेरे गुरूवर।
जो मिला तेरी रहमत से मिला गुरू,
भूल के हस्ती को अपनी यूँ ही न फूलें,
क्या थे और क्या हो गये ये हम भूलें।

बूँद आखिर बूँद हैं एहसास हो हरदम,

189

भगत भगवान के संकट से डर जाया नहीं करते।
वो हर दु:ख हंस के सहते हैं, वो घबड़ाया नहीं करते।।
बड़ी दुश्वार है घाटी, भयंकर राह मुक्ति की ।
जो बुजादिल है वो, इस मैदान में आया नहीं करते।।
रहे हर हाल में जो खुश, गरीबी में नहीं रोते।
मिले जो बादशाही तो, वो इतराया नहीं करते।।
दुखी देखे किसी को वो तो दिल उनका तड़पता है।
किसी भी शरण आए को, वो ठुकराया नहीं करते।।
जान जाये चली जाये, न जाये वचन को पाले।
कदम धर धर्म की राह में, भटक जाया नहीं करते।।

190

भीतर है सखा तेरा सखा मन लगा के देख।
अंत: करण मे ज्ञान की ज्योति जला के देख।।
है इन्द्रियों की शक्तियाँ बाहर की ओर जो।
बाहर से मोड़कर उसे अंदर में जोड़ दो।।
कर सकल द्वार बंद समाधी लगा के देख।
साखी पवित्र देह है बिगड़ी बने न क्यों।।
जीवन ये तेरा भक्ति के रंग में भींगे न क्यों।
आत्मा के आनन्द का जीवन बना के देख।।
शुद्ध आत्मा मे अपनी रचना का ध्यान कर।

निश्चय ही झूम जायेगा महिमा का गान कर।।
ऋद्धा की रूठी हुई देवी मना के देख।

191

भगवान मेरी नैय्या उस पार लगा देना,
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना।
दल बल के साथ माया घेरे जो मुझको आकर ,
तुम देखते न रहना झट आके बचा लेना।
माया ये आपकी है सबको लुभा रही है,
करके दया दयामय हमको तो बचा लेना।
अज्ञान से अँधेरा छाया जो मेरे मन पर,
अपनी कृपा का भगवन सुप्रकाश दिखा देना।
हम मोर बनके भगवन नाचा करेंगे वन में,
तुम श्याम घटा बनके आ वन में उड़ा करना।
हम पपीहा बनके मोहन पीं-पीं रटा करेंगे,
तुम स्वाति बूँद बनकर प्यासे पे दया करना।
तेरे वियोग में हम दिन-रात घूम रहें हैं,
तुम स्नेह शब्द बनकर प्राणों में रमा करना।
संभव है झंझटों में मैं तुमको भूल जाऊँ,
पर नाथ दया करके मुझको न भुला देना।
तुम ईष्ट मैं उपासक तुम देव मैं पुजारी,
ये बात अगर सच है सच करके दिखा देना।

192

भला कैसा सुहावन दिन।
गुरू बल प्राप्त हम सबको।।
न कारज शेष अब रखे।
प्रभु ये दृश्य तेरा हो।।
1. तेरा उपकार उस दिन का।
न भूलूँ मैं गुरू स्वामी।।
प्रबल दुःख-दर्द से काटे।
सुपारख शब्द तेरा हो।।
भला कैसा ....
2. मिटाये गर्ज सब जग की।
पिलाये बोध अमृत दे।।
पिलाये तोष का प्याला।
जिसे नहीं दुःख घेरा हो।।
भला ....
रहे अभिलाषा गुण गाता।
सदा मन फेर जग सुख से।।
मुबारक हो मुबारक हो गुवारक।
ये दिन तेरा हो।।
भला ....

193

भला करो भगवान सबका भला करो,
दाता दयानिधान सबका भला करो।।
तुम हो माता–पिता हमारे, ये जग चलता तेरे सहारे,
हम तेरी सन्तान, सबका भला करो...................
तू दुनिया का प्रीतम प्यारा, सबसे ऊँचा सबसे न्यारा,
सकल गुणों की खान, सबका भला करो.....................
तू है सबका पालनहारा, सबको मिलता तेरा सहारा,
हे जगदीश महान् सबका भला करो.........................
भर दो मेरी झोलियाँ दाता, तुम हो सबके भाग्यविधाता,
दो हमको वरदान, सबका भला करो............................

194

भागों से मिला है सन्तो का मेला।
बुद्धि और वचन से सुनने की बेला।।
1. पक्षी और साधु है जात एक ही।
रहे दिन चारी रहे रात एक ही।।
यहाँ से तू जायेगा अकेला, अकेला।
बुद्धि और वचन से सुनने की बेला।।
2. समुन्दर के आगे फैलाई है झोली।
अचानक आई है मोतियों की छोली।।
मानुष जनम फिर मिलना कठिन है।
बुद्धि और वचन से सुनने की बेला।।

3. वही है गंगा गोता लगा ले।
खुदाई खजाने में खर्च लगा ले।।
मानुष जनम फिर मिलना कठिन है।
बुद्धि और वचन से मिलने की बेला।।
4. पुण्यों से प्रेमी सत्संग मिला है।
पूरन जनम का कर्म खुला है।।
मिल ले प्रभु से मिलने की बेला।
बुद्धि और वचन से मिलने की बेला।।

195

भरोसा जिसी का भगवान पर है।
उसे कोई चिन्ता न करनी पड़ेगी।।
न करनी पड़ेगी।।
राणा जी ने मीरा को मिटाना ही चाहा,
भेजा नाग काला जहर भी पिलाया।
राणा जी ने समझा मीरा मरेगी–मरेगी,
मगर नाव उसकी तरी है तरेगी।।
विपत्ति द्रौपदी पर दुर्योधन ने डाली,
नग्न करना चाहा सभा बीच नारी।
दुर्योधन ने समझा द्रौपदी नग्न हो रहेगी,
मगर लाज उसकी बची है बचेगी।
जमाना तो भक्तों पे हँसी करता आया,
बिना बात भक्तों से झगड़ा लगाया।

जमाना ये समझा महिमा घटेगी–घटेगी,
मगर गुरू की महिमा बढ़ी है बढ़ेगी।

196

भव सागर से तारे गुरू तेरो वचना, तेरो वचना,
गुरू तेरो ....
मन इन्द्रियों को पार न पावे, जींव ईश को मरम न जाने
गुरू समझावे वही आत्मा..................
वेद शास्त्र मेरे समझ न आवे, कर्म–धर्म सब व्यर्थ हो जावे
जब न देखे गुरू नैन चश्मा...................
जंग में प्रेम सत्य तू चाहे गुरू वचनन में चित्त लगावे
पार लगावे गुरू ज्ञानवा......................
हट वैराग तू धारण करले विरह ही हृदय में संजोले
करिये गुरू जी नई रचना....................

197

मेरी जिन्दगी में अंधेरा भरा था,
तेरी रहमतों से सहर हो गई है।
उधर हो गया है सारा जमाना,
निगाहें करम जिधर हो गई हैं।।
नजारे मिले हैं इशारे मिले हैं,
तुम क्या मिले हो सहारे मिले हैं।
हमें क्या खबर है कि जाना किधर हैं,
बहारों की मंजिल इधर हो गई है।।

न थी कोई राहें न थी कोई मंजिल,
कश्ती को मेरी न मिलता था साहिल।
कहाँ है ठिकाना कहाँ आशियाना,
तेरे दर से सारी खबर हो गई है।।
मेरी जिन्दगी में अगर तू न आता,
तो मैं दर–ब–दर की ठोकर ही खाता।
मुबारक है आना मेरे जाने–जाना,
तू आया तो अपनी भी कदर हो गई है।।
रहे मेहरबाँ की सदा मेहरबानी,
यही माँगती है मेरी जिन्दगानी।
सफल प्यारे भक्तों वही जिन्दगी,
जो सतगुरू के चरणों में बसर हो गई है।।

198

मैंने ऐसा सत्गुरू पाया।
मेरा रोम–रोम खिल आया।।
ऐसी लगन लगी मेरे मन में,
जहाँ देखूँ तू ही तू है।
मुझे और कुछ न भाया,
मेरा रोम–रोम ....
ऐसी ज्ञान की जोत जलाई,
अज्ञानता की उतरी काई।
मोहे हरि नाम मन भाया,

मेरा रोम-रोम ....

नइया छोड़ी आप हवाले,

अब आप संभाले हीं संभाले।

मैने अब छुटकारा पाया,

मेरा रोम-रोम ....

मोह-माया के बन्धन छूटे,

तेरे मेरे के भरम भीं छूटे।

मैने सबमें प्रभु को पाया,

मेरा रोम-रोम ....

199

मेरे मन लगन लगा श्री सत्गुरू के चरणों में।

तेरा सब सँवर जायेगा मेरे सत्गुरू के चरणों में।।

1 जीवन एक सपना हैं, कोई नहीं अपना है।

दो पल बैठ जरा, श्री सत्गुरू के चरणों में।।

2 सुबह और शाम हुई, उमर तमाम हुई।

मन को फूल बना, मेरे सत्गुरू के चरणों में।।

3 काम और क्रोध तेरा कुछ न बिगड़ेगा।

प्रेम वाली कुटिया बना, मेरे सत्गुरू के चरणों में।।

4 पाप और पुण्य सभी करदे प्रभु को अर्पण अर्पण।

चौरासी तेरी कट जायेगी मेरे सत्गुरू के चरणों में।।

5 दया की एक नजर पड़ जाये मुझपे अगर अगर।

होगा उद्धार मेरा मेरा, मेरे सत्गुरू के चरणों में।।

200

मेरी आत्मा हो परमात्मा हो।

जिधर देखों सत्गुरू नजर आ रहे हो।।

1. यहाँ ज्ञान तुमने सभी को सुनाया, ब्रह्मस्वरूप सभी को लखाया।

अकेली-अकेली है इस जहां में।।

जिधर.....................

2.तुम्हारे सिवा और कोई नहीं है जो लाखों-करोणों को उर से लगायें।

नाथ अनाथों के हो तुम हीं सत्गुरू।।

जिधर.............................

3. तेरे ज्ञान का प्याला पिया हैं,

जिसने अलमस्त फकीरा वो हो गया है,

हम पर भीं कर दा दयालु दया अब।

कि कब से खड़े हम तके जा रहे हैं।।

जिधर........................

4. कर्म करूँ जो अकर्त्ता बन कर मोह माया न व्यापे मुझको।

रहे ध्यान तेरा ही मन में हमारे।।

जिधर.........................

5.विनती यही है हमारी प्रभु तुमसे करूँ सेवा सबकी धन-तन-मन से।

मन्जुलमय हो हृदय हमारे।।

जिधर.........................

6. ऊँ में दिये तुमने दर्शन सत्गुरू पूर्ण मिंद तत्व लखा है नजारा।

मैं को मैं से मिलाते रहे।।

जिधर.........................

7. अजल से पड़े हम जब लड़ रहे थे स्वयं सर्वेश तुम्हीं तो खड़े थे।

धरा सर पे हाथ और गोद उठाया।।

जिधर.........................

201

सत्गुरू प्यारा मीत है, मीतों से प्यारा मीत है।।

1. सत्गुरू शब्द उच्चारते ही अमृत वर्षा हो गई,

जन्म-जन्म से बिछुड़ी मैं रंक से राजा हो गई।

मेरा सत्गुरू परम पुनीत है,

मीतों --------------------

मोह-माया के जाल में मैं अपना आप गँवाया-सी,

पूरे गुरानू किरपा कर के बाँह पकड़ कर पार लगाया-सी।

ये तो महापुरूषों की रीत है,

मीतों ---------------------

3. आप ही खेल खिलाड़ी मोहन आप ही जाल बिछाबंदा,

महापुरूषों के वाक्य द्वारा भेद तेरा खुल जावदां ।

वो तो चुप-2 करता प्रीत है,

मीतों ---------------------

4. मैं प्रीतम की प्रीतम मेरे दोनों ही एक स्वरूप हैं,

जल-थल व्यापक पूरन सारे सोहम ब्रह्म स्वरूप हैं।

तेरा वेद भी गाते गीत हैं,

मीतों ------------------------

202

मन की तरंग मोड़ लो बस हो गया भजन।

आदत बुरी संभाल लो बस हो गया भजन।।

1. कोई बुरा -2 कहे कर दो उसे क्षमा,

वाणी के स्वर सुधार लो बस हो गया भजन।

2. ये महल मांड़िये न तेरे साथ जायेंगे,

विषयों से मन को मोड़ लो बस हो गया भजन।

3. आया था तू कहाँ से और जायेगा कहाँ,

इतना ही मन विचार लो बस हो गया भजन।

4. अनमोल ब्रह्मानंद को जो ढँढना चाहो,

घट-घट में हरि निहार लो बस हो गया भजन।

5. नजरों में तेरी दोष है दुनिया निहारता,

समता का अंजन डाल लो बस हो गया भजन।

मन की तरंग ------------------

203

मिले हैं सत्गुरू जबसे आता न दुःख तबसे,

लगे न, लगे न तत्ती बार।।

1. एक इशारे से मिला परमात्मा।

जिसको देख के नाचे मेरी आत्मा।।

न संशय सताए न भरम भुलाए।

लगे न ----------------

2. जन्म-मरण की उसने काटी है फाँसी,

धरम राज से मेरी जान छुड़ाई।

कभी न घबराये सदैव मुस्कराये,

लगे न -----------------

3. सत्गुरू प्यारे ने मेरा दिल है खींचा,

नाम नशे का मैनूँ प्याला पिलाया।

मिट गया सब ताप हो गया है मिलाप,

लगे न ----------------

204

मैं आप ब्रह्मानंद मैनू वेद गाँवदा,

सम दृष्टि करके देखों प्यारा नजर आँवदा।

मत भूलों भटको प्यारें बेला हाथ न आँवदा।।

1. प्रभु को खोजन मैं चली मैं आपा भूल गई,

तन-मन में मेरे व्यापक जैसे दूध में दही।

मैं आप-----------

2. प्रभु को खोजन मैं चली मथुरा, द्वारिका,

देही में उसका वास अध्ययन करों विचार का।

मैं आप-----------

3 मैं पाँच कोश से दूर मेरा साक्षी स्वरूप हैं,

मैं आदि मध्य अंत मेरा यही स्वरूप हैं।

मैं आप-----------

4. तिलों में जैसे तेल है मेंहदी में जैसे रंग,

मैं सर्वव्यापक आत्मा रहता हू सबके संग।

मैं आप-----------

205

मेरी रसना से प्रभु तेरा नाम निकले।

हर घड़ी, हर बेले, ओम ओम निकले।।

1. मन मंदिर में जोत जगाऊंगी,

प्रभु तेरा ही सदा गुण गाऊंगी।

मेरे रोम-रोम विच तेरा नाम निकले,

हर घड़ी, हर बेले-----------

2. मेरे अवगुण चित्त से भुला देना,

मेरी नैय्या किनारे लगा देना।

तेरी याद विच जीवन तमाम निकले,

हर घड़ी, हर बेले---------

3. तेरी शक्ति का मैं गुणगान करूँ,

तेरे वचनों को मैं नित ध्यान करूँ।

तेरी याद विच सुबह और शाम निकले,

हर घड़ी, हर बेले----------

206

तेरा सत्‌चित्त आनंद रूप कोई–कोई जाने रे।।

तेरा सत्‌चित्त---------

1. वेद वचन का मैं हूँ सृष्टा, मन वाणी का मैं हूँ दृष्टा,

मैं हूं साखी स्वरूप कोई कोई जाने रे।

तेरा सत्‌चित्त---------

2. जनम–मरण मेरा धरम नहीं है पाप पुण्य मेरा करम नहीं है,

मैं हूँ निर्लेप स्वरूप कोई–कोई जाने रे।

तेरा सत्‌चित्त---------

3. पाँच–कोष से मैं हूँ न्यारा, तीन अवस्था से भी न्यारा,

मैं हूँ शुद्ध स्वरूप कोई–कोई जाने रे।

तेरा सत्‌चित्त---------

4. तीन लोक का मैं हूँ स्वामी, घट–घट व्यापक अंर्तयामी,

ज्यों माला में सूत कोई–कोई जाने रे।

तेरा सत्‌चित्त---------

5. सूर्य–चन्द्र में रूप तेरा है अग्नि में भी तेज मेरा है,

मै हूँ आनंद स्वरूप कोई–कोई जाने रे।

तेरा सत्‌चित्त---------

6. प्रेमी तुम निज रूप पहचानों, जीव ईश में भेद न जानो,

तुम हो ब्रहम स्वरूप कोई कोई जाने रे।

तेरा सत्‌चित्त---------

207

मेरे सत्‌गुरू तेरी नौकरी, सबसे बढ़िया और सबसे खरी।

तेरे दरबार की चाकरी, सबसे बढ़िया और सबसे खरी।।

1. मैं नहीं था किसी काम का, जबसे तेरा सहारा लिया।

तबसे चमकी है किस्मत मेरी, सबसे----------

2. जब मैं तेरा गुलाम हो गया तबसे मेरा भी नाम हो गया।

वरना औकात क्या थी मेरी, सबसे----------

3. तनख्वाह भी कोई कम नहीं, पर मिले न मिले गम नहीं।

हो गया दुनिया से मैं बरी, सबसे---------

4. छुट्टी लूँगा कभी मैं नहीं जब तलक है मेरी जिंदगी।

साँस जब तक चले आखिरी, सबसे------------

5. काम भी कोई मुश्किल नहीं, मिल गई जो है मंजिल सही।

कैसे छोडूँ तेरी चाकरी, सबसे----------

208

मैं दुनिया के तापों से बच गयो रे।
आनन्द भयो रामा आनन्द भयो रे।।
1. प्रेम में तेरे बावरी हो गई,
दिल का दर्द न जाने कोई।
नशो ही निरालो चढ़ गयो रे,
आनन्द भयो रामा आनन्द भयो रे।।
2. लाख रोके मुझे दुनिया वाले,
नैय्या अब की तेरे हवाले।
मैं तेरे ही रंग में रंग गयो रे,
आनन्द भयो रामा आनन्द भयो रे।।
3. तेरे सिवा मुझे कुछ नहीं भावे,
देखूँ जिधर उधर तू ही नजर आये।
प्रेम की बदरी बरस गयो रे,
आनन्द भयो रामा आनन्द भयो रे।।
4. मेरे तो प्रभु गिरधर नागर,
भर गई मेरी खाली गागर।
मैं जीते जी जग से तर गयो रे,
आनन्द भयो रामा आनन्द भयो रे।।

209

मन मस्त हुआ फिर क्या बोले,
हीरा पाया गाँठ गठायो।
बार-बार वाको क्यों खोले।।
हल्की थी तब चढ़ी तराजू।
पूरी भई तो क्या तोले।।
सुर्ति कुल्हाड़ी भई मतवाली।
मधुवा पी गई बिन बोले।।
हँसा पायो मान सरोवर।
ताल तलैया क्यों डोले।।
तेरा साहिब तेरे मन में बसदा।
बाहिर नैना क्यों डोले।।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो।
साहिब मिल गये तिल ओले।।

210

मुझे मेरी मस्ती कहाँ ले के आई।
जहाँ मेरे अपने सिवा कुछ नहीं है।।
लगा अब पता मुझको हस्ती का मेरे।
बिना मेरे अपने जहाँ कुछ नहीं है।।
सभी में सभी से परे मैं ही मैं हूँ,
सिवाय मेरे अपने कहीं कुछ नहीं है।
न दुःख है न सुख है नहीं शोक कुछ भी,

अजब है ये मस्ती, पीया कुछ नहीं है।
ये सागर ये लहरे, ये झाग और बुदबुदे,
कल्पित है जल के सिवा कुछ नहीं है।
अरे मैं हूँ आनन्द ये आनन्द है मेरा,
है मस्ती ही मस्ती पिया कुछ नहीं है।
भरम ये द्वन्द का जो मुझको हुआ है,
मिटाया जो इसको खफा कुछ नहीं है।
ये पर्दा दुई का हटाकर जो देखा,
सभी एक मैं हूँ जुदा कुछ नहीं हैं।

211

मेरी आत्मा तुझको किसी का न डर है।
अपनी हस्ती से तू बेखबर है।।
गया पास अज के तो अज बन बैठा ।
मगर याद रखना तू शेर बबर है।।
तेरा प्यार पिंजरे से कैसे हुआ है।
न यम का है खतरा, न मृत्यु का डर है।।
तेरे ऐसे रिश्ते तो हजारों हुए हैं।
कभी था तू बेटा, कभी तू पिता है।।
तुझे शस्त्र काटे न अग्नि जलाये।
गलाये न पानी न मृत्यु मिटाये।।
अगर चाहता है सच्ची शान्ति पाना।
लगा गोता अंदर तू शान्ति का घर है।।

212

मेरे बाँके बिहारी लाल तू इतना न करियो श्रृंगार।
नजर तोहे लग जायेगी।।
तोरी सुरतियाँ पे मन मोरा अटका।
प्यारा लगे है तेरा पीला पटका।।
तेरे घूंघर वाले बाल।–2
तू इतना न करियो श्रृंगार...................
तोरी मुरलिया पे मन मोरा अटका।
प्यारा लगे है तेरा नीला पटुका।।
तेरे गले वैजंती माल।–2
तू इतना न करियो श्रृंगार.................
तोरी कमरिया पे मन मोरा अटका।
प्यारा लगे है तोरा काला पटुका।।
तेरी टेड़ी मेढ़ी चाल।–2
तू इतना न करियो श्रृंगार.................

213

मुझे मेरी मस्ती कहाँ लेकर आई,
जहाँ मेरे अपने सिवा कुछ नहीं है।
लगा न पता मुझको हस्ती क्या मेरी,
बिना तेरे सारा जहाँ कुछ नहीं है।
सभी में सभी से परे मैं ही मैं हूँ,

सिवा मेरे अपने यहाँ कुछ नहीं है।
न दुःख है न सुख है नही शोक कुछ भी,
भजन है ये मस्ती सिवा कुछ नहीं है।
ये सागर ये लहरें ये बाग ये बुलबुल,

214

मन का अंधेरा मिटाता वो है,
ज्ञान की ज्योति जगाता वो है।
पर भगवान कुछ बात नहीं है,
मुर्दो को जीना सिखाता वो है।
ज्ञान................................
मन व्याकुल जो लेकर आये,
लेकर खुशी वो जाये।
उसकी करनी वो हीं जाने,
काग से हंस बनाता वो है।
ज्ञान..........................
भेद भाव ऐसे न मिटेगा जब तक भेद न पाये,
अभेदी से तुम मिलकर सारे मन का भेद मिटाओं।
समझो तो क्या समझाता वो है,
ज्ञान......................................
हर इन्सान है भूखा प्रभु का सब में वो हीं समाया,

प्रेमी वो है ऐसे न बुझेगा, जो प्रभु शरण मे आया।
कर प्रगट दिखलाता वो है ज्ञान की ज्योति जलाता वो है,
ज्ञन.................................

215

मोहन बन गये नर से नारि,
करके, सोलहों श्रृंगार।
चुड़ियाँ पहने, लगाए है बिन्दिया माथे पर।।
सर पे धरे एक ज्ञान पुटलिया,
चले इठलाते पहुँचे भक्तों की नगरिया,
करते गलियों में पुकार, ज्ञान ले ले कोई यार,
चुड़ियाँ पहने..
भक्त ने सुनकर कहा आओ मेरे भगवन्,
कौन से गाँव में रहते, मेरे प्यारे भगवन्।
रहते बनी में सरकार, करते ज्ञान का व्यापार,
चुड़ियाँ पहने..
प्रेम से भरकर जो मोहन ने निहारा,
भक्त सब ताड़ गये, आए बनवारी।
दोनों नैन चरण में डाल भक्त बोले हम गये हार,
चुड़ियाँ पहने..
भक्त ने कहा मोहे ज्ञान समझा दो,
श्याम ने कहा मुझसे प्यार लगा लो,

भगवन ज्ञान रहे समझाये, भक्त मन हीं मन मुस्काये।

चुड़ियाँ पहने..

216

मेरे शाकिया बता दे वो शराब कौन सीं है।

जिसे पी के सारीं दुनिया तेरे दर पे झूमतीं है।।

तौबा गुनाह मेरे क्या-क्या किया है मैंने।।

इस पर भी तू निवाजे तेरीं बंदा परवरीं है।

तू हजार बार ठुकरा मेरा सर यहीं झुकेगा।।

है यहीं मेरीं इबादत मेरीं बंदगीं यहीं है।

फैलेगा मेरा दामन सौ बार तेरे आगे।।

एहले सफा बता दे तेरे दर पे क्या कमीं है।

217

मेरे सत्गुरू रमइया मेरे सत्गुरू रमइया।

मैने दिल तुझको दिया।।-2

तेरे इस लोक में तेरे परलोक में।।

तेरी माया के खिलते हजारों चमन।-2

मैंने जब देखा चमन हाय ये कैसा वतन।-2

तेरीं ही आस में ज्ञान कीं प्यास में।।

भूल बैठे हैं सच का अनोखा जहाँ।-2

तेरा भी दोष नही मेरा भी दोष नहीं।।-2

काम क्रोध लोभ में अहंकार मोह में।

अपनी मुक्ति का मारग भुलाही दिया।।-2

कैसे समझाऊँ तुझे कैसे बतलाऊ तुझे।-2

ये था तूने कहाँ ज्ञान लेते चलो।।

और हीरे लूटा दो हरि नाम के।-2

मुक्ति मिल जायेगी उसे जिसने लूटा इसे।।-2

ये था तूने कहा ज्ञान लेते चलों।

बताओं जग रचइया कैसे तारोगे नइया।।

हरि नाम के जिसने हीरे लूटे।

उसकी किस्मत का कोई ठिकाना नहीं।।

भूले को मार्ग मिला मुझे भगवान मिला।

218

मेरे सत्गुरू प्यारे ने मेरा जनम-मरण दुःख दूर किया।

मेरे सत्गुरू प्यारे ने मेरा जनम मरण मिटा दिया।।

तीन गुण माया से उपजे माया का विस्तारा।

तू क्यों उसमें उलझ रहा है तेरा रूप अपारा।।

बांह पकड़ उबार लिया मोहे भव सिंधु से पार किया।

श्रवण मनन से जागा मनवा सुरत शब्द में समाई।।

प्रेम सहित निंदियासन कर मन परम धाम को पाया।

मेरे सत्गुरू प्यारे ने मेरा आना जाना मिटा दिया।।

बीज के अन्दर तरवर शाखा पुष्प पत्र फल पाया।

आतम में ही है परमातम जीव ब्रह्म और माया।।

मेरे सत्गुरू प्यारे ने मेरे संसो को कोट दूर किया।

219

मैं ढूँढू साँई का द्वारा मेरे घर कब पधारोगे।
हे केशव वाले साँई तुमको मीरा ने पुकारा।।
मीरा ने पुकारा तुमको मीरा ने पुकारा।
बनाया विष का अमृत मेर घर कब पधारोगे।।
हे केशव वाले साँई तुमको प्रहलाद ने पुकारा।
प्रहलाद ने पुकारा तुमको प्रलाद ने पुकारा।।
दिखाया दर्श खम्बे में मेरे घर घर कब पधारोगे।
हे केशव वाले साँई तुमको अर्जुन ने पुकारा।।
अर्जुन ने पुकारा तुमको अर्जुन ने पुकारा।
दिया उपदेश गीता का मेरे घर कब पधारोगे।।
हे केशव वाले साँई तुमको भक्तों ने पुकारा।
भक्तों ने पुकारा तुमको भक्तों ने पुकारा।।
दिखाया दर्श आ करके मेरे घर कब पधारोगे।

220

मेरी नइया के सतगुरू खिवइया।
मुझे तूफ़ान का डर नहीं है।।
डूब सकता नही है सफीना।
इतना गहरा समुंदर नहीं है।।
जब पड़ी थीं मुसीबत गुरू जी तुमने आकर के मुझको बचाया।
भर गई प्यार से मेरी झोली, जिन्दगी का मजा आ गया है।।
तेरी रहमत के द्वारे खुले जब मेरी किस्मत का चमका सितारा।

तूने मुझको गले से लगाया बेखुदी का मजा आ गया है।।
आज हकीकत के मोती लुटा दे उनकी राहों में पलके बिछा दे।
तेरा दामन भरेगे गुरू जी सिर्फ हमको मचलना पड़ेगा।।
जिसको प्यार नही है गुरू से उसका नाता नहीं है प्रभु से।
प्यार के नाम पर चलने वालो तुमको इस दर पे आना पड़ेगा।।

221

मन लागो मेरो यार फकीरी में।।
जो सुख पायो मैं राम भजन में,
सो सुख नाहीं अमीरी में, मन...................
भला बुरा सब का सुन लीजे,
कर गुज़रान गरीबी में, मन.......................
प्रेम नगर में रहन हमारी,
भले बन आई सबूरी में, मन........................
हाथ में डंडा बगल में सोंटा,
चोरों और जगीरी में, मन..................
यह तन आखर खाक मिलेगा,
काहे फिरत मगरूरी में, मन......................
भाई बंधु कुटुंब कबीला,
बाँध्यों मोहे जंजीरी में, मन ....
कहत कबीर सुनो भई साधो,
साहिब मिलेंगे सबूरी में, मन..................

222

मुझे ऐसा बना दे मेरे प्रभु,
जीवन में लगे ठोकर न कोई।
जाने अनजाने मे मुझसे,
नुकसान किसी का हो न कही।
उपकार सदा करती जॉऊ दुनिया अपकार सदा ही करे,
बदनामी न हो जग मेरी
कोई नाम भले ही ले ना सके।
मुझे........................
मन हो मधु पूर्ण कलश मेरा,
आँखों से ज्योति छलकती हो।
तुम से मधु ऐससा पिने को,
जागत ही रहूँ सोऊँ न कही।
मुझे........................
एक तूही मेरा ऐसा है,
दुःख में भी साथ नही तजता।
दुनिया मुझे प्यार करे न करें,
खोऊँ ना तेरा प्यार कभी।
मुझे........................
मैं क्या हूँ राह मेरी क्या है,
ये सत्य सब मैं समझ ही गया
तेरी राह पे चलते-2,

मेरे पॉव थके न रुके न कहीं।
मुझे........................

223

मेरे गुरूवर तुम्ही हो सहारा, और कोई सहारा नहीं है।
अपना कहकर जिसे मैं बुलाऊ, ऐसा कोई हमारा नहीं है।।
नाव मझधार में है हमारी,
कोई कश्ती खेवैया नहीं है।
मैं कहाँ जाऊ अब नाथ मेरे,
कहीं दिखता किनारा नहीं है।
मेरे ....
तेरे दरबार का हूँ मैं मुजरिम, मैं हूँ पापी मेरे पाप हर लो।
और किसकी करू आस गुरूवर,कहीं मेरा गुजारा नहीं है।
तूने दीनो को उर से लगाया,
और नाम दया सिन्धु पाया।
अपने भक्तों की बिगड़ी बना दो,
फिर न कहना पुकारा नहीं है।

224

मुझे मिल गया मन का मीत दुनिया क्या जाने।
मेरी लगी गुरू संग प्रीत दुनिया क्या जाने।।
क्या जाने कोई क्या जाने..................-2
1. बाजी जब गुरू वर पे लगाई पलट गया पासा मेरे भाई।।
मेरी हार में हो गई जीत दुनिया क्या जाने।

क्या जाने कोई क्या जाने....................–2

2. प्रीतम ने खुद प्रेम जताया करके इशारा पास बुलाया।
हे प्रेम की उल्टी रीत दुनिया क्या जाने।।
क्या जाने कोई क्या जाने.....................–2

3. सत्संगी होकर जो सीखा काम क्रोध को तज के सीखा।
मन गाये उनके गीत दुनिया क्या जाने।।
क्या जाने कोई क्या जाने......................–2

4. राग अलग है ताल अलग है ये मेरा अनुराग अलग है।
ये ऐसा है संगीत दुनिया क्या जाने।
क्या जाने कोई क्या जाने...............–2

225

मेरे प्रभु जानते है बात घट-घट की।
बजाए जा तू प्यारे हनुमान चुटकी।।
मेरे राम जी के आगे बात किसकी चली।
मेरे राम जी के आगे बात किसकी चली।।
मेरे राम जी के आगे दाल किसकी गली।
तूने देखी नहीं लीला अभी नटवर की।।
तुझे माता जी ने घर से निकाला तो क्या।
तेरा थोड़ी देर निकला दिवाला तो क्या।।
तू भी दिखला दे चाल मरकट की।

226

मन काहे तू न धीर धरे।।
तू निर्मोही मोह न जाने।
जिनका मोह करे।।

1. इस जीवन की जलती धूप को किसने बाँधा।
रंग पे किसने पहरे डाले रूप को किसने बाँधा।।
काहे ये जतन करे........................

2. उतना ही उपकार समझ कोई जितना साथ निभा दे।
जनम मरण का मेल है सपना ये सपना बिसरा दे।।
कोई न संग मरे...................

227

मालिक की मर्जी के आगे चलता किसी का जोर नहीं।
उसके हुकुम पे हुकुम चलाने वाला कोई और नहीं।।

1. वो चाहे तो तख्त बिठा दे।
वो चाहे तो भीख मंगा दे।।
होनी को अनहोनी कर दे।
पत्थर में भी फूल खिला दे।।
वो अगर न चाहे जग में शाम नहीं कोई भोर नहीं।

2. यह दुनिया है किसी और की।।
तू क्यों जाल बिछाता है।
यहाँ न कोई टिक के रहता।।
इक आता इक जाता है।

चुप-चुप रहना कुछ नहीं कहना करना कोई शोर नहीं।।
3. सत्गुरु की आज्ञा को लेके।
कदम से कदम बढ़ाये जा।।
ज्ञान का दीपक लेकर प्यारे।
जोत से जोत जलाये जा।।
भवसागर में नइया का खेवनहारा कोई और नहीं।

228

मैं तो बसूँ तेरे मन में।
तू क्यों ढूढें वृन्दावन में।।
प्रेमी देख तू अपने में भी।
ध्यान लगाइये एकान्त में बैठ के।।
तुमसे मिलूँगा छिन पल में, तू...............
जिधर-किधर देखूँ हाजिर हैं।
तेरे भी मैं मन में।।
सुरमा लगे जैसे अखियन में, तू.............
अपनी ही मौज से खेल किया है।
भरम के कारण भेद पड़ा है।।
धागा पड़ा जैसे मोतियन में ।
तू क्यों ढूँढे वृन्दावन................

229

मेरे मोहन तेरा मुस्कुराना भूल जाने के काबिल नहीं है।
चोट खाई हैं दिल पे जो मैंने वो दिखाने के काबिल नहीं है।।

मेरे मोहन..
तेरी सूरत में कुर्बान ज़ाऊँ, तेरी आँखें है या भय के प्याले।
जिसको नजरों से तुमने पिलाई, होश आने के काबिल नहीं है।।
मेरे मोहन..
मैंने पूछा कि अब कब मिलोगे, पहले मुस्काए फिर हँस के बोले।
सबके दिल में समाए हुए हैं, आने जाने की जरूरत नहीं है।।
मेरे मोहन....................................
शीशा पत्थर से टकरा के टूटा,
टूटने की सदा-सदा सबने सुन ली।
नूर देखे बहुत से जहाँ में,
सारे आलम में तुमसा नहीं है।।
मेरे मोहन............................

230

मैं तो आई फकत तेरे दीदार को,
क्या खबर थी कि आते ही लुट जाऊँगी ।
फूल लाई थी बस पेश करने को मैं,
क्या खबर थी कि दिल भी मैं दे जाऊँगी।।
उनकी महफिल की रौनक कहूँ क्या अर्जी,
जन्नते नाचा करती है, आकर यहीं।
चैन पाने को आई थी खोया हुआ,
क्या खबर थी कि ज्यादा तड़प जाऊँगी, मैं.......................
जाने कैसा है नज़रों में जादू भरा,

देखती रह गई एक बुत की तरह।
मैं तो आई थीं एक दो लम्हों के लिए,
क्या खबर थी हमेशा को बँध जाऊँगी। मैं.............................
इनका मयखाना चलता ही रहता सदा,
हरदम पीते ही रहतें हैं प्याला सदा।
घूँट दो ही पिये थे कि मैनें अभी,
क्या खबर थी कि पीके बहक जाऊँगी। मैं.........................
अपने हमदम का क्या नाम रखूँ अजी,
काबा मंदिर या मस्जिद या खाना करीब।
सोचा यूँ ही चलूँ सर झुकाती हुई,
क्या खबर थीं इन्हीं की मैं हो जाऊँगी। मैं.....

231

मेरी सूरत की डोर सदा भगवन चरणों से बँधी रहे।
मेरा मन न जाये और कहीं बस इतनी कृपा बनी रहे।।
बस जग वफा की रीत नहीं यहाँ किसी की सच्ची प्रीत नहीं।
बिन तेरे सच्चा मीत नहीं, एक तुझसे सूरत जुड़ी रहे।।
तुम सतगुरू अर्न्तयामी हो मेरे तन प्राणों के स्वामी हो।
तुम मालिक देश अनामी हो तेरी सेवा की लगन लगी रहे।।
तुम भक्त के दुख को हरते हो सच्ची दात से झोली भरते हो।
सदा रहमत ही तुम करते हो तेरी नजर करम बस बनी रहे।।
मन का मन्दिर मैं सजाऊँगी तेरी सूरत उसमें बिठाऊँगी।
भक्ति से तुमको रिझाऊँगी ध्यान में दास के तेरी छवि रहे।।

232

मोहन तुम्हारा ये धन्धा है पुराना,
किसी को हंसाना किसी को रूलाना।
मार दिया ग्राह को उबार लिया गज को,
पावन निषाद हुआ धोकर चरण रज को।
हम भी है तेरे जाये तो कहाँ जाये,
सुनलो जी सुन लो हमारी ये सदाये।
बिगड़ी बनाओं करो न बहाना,
बहुतों को दर्श दिया है मुरली वाले।
दर्शन दिखाके काटो मेरे कष्ट सारे,
ये दास भी है अब तेरा ही दीवाना।

233

मिलता है बड़े भाग्य से नर-तन कभी-कभी,
आतें है इसी वेश में भगवान कभी-कभी।
कोई बुरा नहीं है भले मन के वास्ते,
इस मन से ही मिलजाते है प्रियतम कभी-कभी।
भगवान और इंसान में कोई फर्क नहीं,
वो ज्योति इधर आती है घन-धन कभी-कभी।
जब तक जिन्दगी है सभी को हँसा के जी,
हँस कर ही सुलझ जाती है उलझन कभी-कभी।
भगवान से इंसान बनाकर यही कहाँ,
मुझको भी सुहाता है, बन्धन कभी-कभी।

निर्मल होकर दिल ज़ुबॉ पे नाम हो सदा,
इतने में ही मिल जातें है दर्शन कभी–कभी

234

मुझे भगवान वह दिल दो कि जिसमें प्यार तेरा हो।
ज़ुबाँ वह दो जो करती हर घड़ी इजहार तेरा हो।।
मुझे वह बक्श दे आँखे जिन्हें हो जुस्तजू तेरी।
कि हर एक जर्रे–जर्रे में दीदार तेरा हो,
मुझे देना प्रभु संगत सदा तू अपने प्यारों की।
कि तज सके दिल में रहता हर घड़ी एतबार तेरा हो,
जमाने में मेरा साथी बनाना उसको हे भगवन।
दया हो जिसके सीने में और सेवादार तेरा हो,
सर आँखो पर उठाता नित फिर मैं चरण रज उनकी।
चरणों की भक्ति निष्काम जो करता सदा प्रचार तेरा हो,
ये प्रेमी काट ही लेगा खुशी से जिन्दगी अपनी।
मेरे सरकार दया का हाथ यदि सर पर तेरा हो।।

235

मेरा प्यार भी तू है हर श्रृंगार भी तू है।
मेरी नजरों में तू ही समाया।।
तू बहारों में तू नजारों में।
तू ही सूरज तू ही चन्दा तुझसे है रौशन दिल का गगन।
बादल की हर बिजली मे तू है जलवा देखकर सिर को।।
झुकाऊँ, नयनों में तुमको बिठाऊँ।

मेरा प्यार.................................. .
जो भी तेरे गुण है गाते, मन की मुरादे वो ही पाते।
प्रेम वालो को गले से लगाते, तेरे दर पर सिर।।
को झुकाते, किस्मत को अपनी सराहते।
मेरा प्यार................................
तेरी नजर में नूर खुदाई, प्यार बने तेरी बादशाही।
सतगुरू मेरे तेरे सिवाएं सूरत न कोई दिल में।।
बिठाऊँ, तेरा ही गुण मैं गाऊँ।
मेरा प्यार..............................

236

मजा है जो फकीरी में अमीरी क्या समझ पाये।
उसे हर दम खुशी रहती है उसे हरदम लगी आहे।।
नही जंगल में जाने से नही बस्ती मे आने से।
गृहस्थ आश्रम से क्या मतलब न सन्यास कहाने से।।
पलटती है मनोवृत्ति वही निहाल हो जाता है।
दीवाने उनकी महफिल के नही बेचैन होते है।।
वो सोते पर भी जगते है वो जगने पर भी सोते है।
भरा अन्दर में जो रस है वही हर वक्त छलकाते है।।
किसी से न शिकायत है न खुद करता शिकायत है।
जो मंजिल पर पहुँच जाता, नहीं भटकने की आदत है।।

237

मेरे सत्गुरू पकड़ी बॉह नही तो मैं बह जाती।

डूबत थी मैं बीच भवँर में।।
लियो बाँह पकड़ के उबार नही...............
पतित उद्धारन नाम है उनका।
सुनहु पतित पुकार नही...................
दासी दुखिया जनम-जनम की।।
सुन ली विनय हमारी नही..................
जेहि विधि नाथ मोहि उबारो।
करलो जगत उद्धारा नही तो................

238

मै तो उन संतन का दास जिन्होंने मन मार लिया।
मन मारा तन बस किया सभी भरम हुए दूर।
बाहर से कछु सूझत नाहीं अंदर बरसे नूर...........
आपा मार जगत मे बैठे नही किसी से काम।
उनमे तो कछु अंतर नाहीं संत कहो चाहे राम।।
पी लिया प्याला प्रेम का छोड़ जगत का नेह।
मुझको सत्‌गुरू ऐसे मिल गये सहज मुक्ति गई होय।।
नरसी दीजे सतगुरू स्वामी पिया अमीरस प्याला।
एक बूंद सागर में मिल गई क्या करेगा यमराज।।

239

मेरे मोहन मेरे कर्मों की तुम पडताल न करना।
दया सागर दया की तुम कभी हड़ताल न करना।।
भरोसा छोड़ कर तेरा तबाह जीवन किया मैने।

मेरी इन गलतियो पर तुम कभी भी ख्याल न करना।।
मैं नीच हूँ कुकर्मी हूँ मगर तुम हो पतित पावन।
जुदा चरणों से करके तुम, मुझे बदनाम न करना।।
तुम्हारे ही भरोसे पर मै शाहो का शहशाह हूँ।
मेरे दिल से निकल कर तुम मुझे कंगाल न करना।।
चरण कमलो का सेवक हूँ जो गलती हो क्षमा करना।
कहीं रूसवा मुझे दुनिया में तुम नन्दलाल न करना।।

240

मेरे तो ऐसे सत्‌गुरू है जो मंजिल तक पहुँचाते हैं।
जो सत्‌गुरू का बन जाता है वह जीवन भर सुख पाता है।।
दुनिया का झूठा नाता है दो पल में ही छुट जाता है।
ये सच का ऐसा नाता है जो जीवन भर का नाता है।।
बिगड़ी जीवन जो चाहे वो सत्‌गुरू के संग सुलझाता है।
ये ज्ञान का दीपक जलते ही अन्धकार न कोई रहता है।।
और प्रेम का दीपक जलते ही ये दिल मंदिर बन जाता है।
जिस दिल में प्रेम का बीज उगे वो एक दिन फल बन जाता है।।
जब से देखा है सत्‌गुरू को अब और न कोई दिखता है।
अज्ञान का परदा हटते ही जीवन जगमग बन जाता है।।
जिस-जिस पर गुरू की नजर पड़ी वो दिल-दिलबर बन जाता है।।

241

मिल गया मुझको, गुरू अवतार रे।
जिसकी रहम से देखा निरंकार रे।।

नहीं जाऊँ मथुरा नही काशी जाऊँ रे।
संतों के सरोवर मे डुबियाँ लगाऊँ मै।।
संतों की धूल लेकर करूँ मैं सिंगार रे।
जिसकी रहम से.........................
तेरे सिववाय मै रह न सकूँगी।
दाता तेरे कदमों में झुकती रहूँगी।।
धनश्याम मेरे दिल की यही है पुकार रे।

242

मिले सतगुरू जी दिल बहार हो गया,
कब की आस लगी आज दीदार हो गया।
कीती किरपा गुरानु संयोग मिलिया।
साड़ा मुड ताडा आज सारा रोग टलिया।।
साडो पाया दर्शन बेड़ा पार हो गया।
असि जनम-जनम दुःख पाते रहे।।
मन माया बिच ठोकरा भीं खावते रहे।
सत्गुरू ने बचाया पर उपकार हो गया।।
दासन दासी ऐसे गुरानु लिहार जाइये।
सच्ची लिव गुरू चरन निहाल जाइये।।
आज जन्म सफल संसार हो गया।

243

मिलता है सच्चा सुख केवल ।
भगवान तुम्हारे चरणों में।।

गुरूदेव तुम्हारे वचनों में।
यह विनती है पल पल छिन छिन।।
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
चाहे बैरी सब संसार बने।।
चाहे मौत गले का हार बने।
रहे ध्यान ....
चाहे अग्नि में मुझे जलना हो।
चाहे कॉटो पे तुझे चलना हो।।
चाहे छोड के देश निकलना हो।
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में..............
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो।
चाहे चारों ओर अँधेरा हो।
पर चित्त न डगमग मेरा हो रहे ध्यान.....................
जिह्वा पर तेरा नाम रहे।
तेरी याद सुबह और शाम रहे।।
बस काम ये आठो याम रहे।
रहे ध्यान ....

244

मैंनें आसरा तेरा ले लिया।
जैसे राखो तैसे राखो मेहर वालिया।।
मोह माया के बन्धन सताये तो क्या,
मेरी राहों में काँटें बिछाये तो क्या,

मैनें सब कुछ है अर्पण किया।
जैसे राखो..
तेरे गुण है अपार मेरे अवगुण हजार,
तेरी महिमा का दाता नहीं पारावार।
अपने चरणों में दे दो जगह,
जैसे राखो..
न मैं पहले थीं कुछ न मैं अब कुछ भी हूँ,
मैं तो तेरी हूँ तेरी हूँ तेरी हूँ।
मैं हूँ तेरी तू मेरा पिया,
जैसे राखो.................................
जीवन नैय्या का कोई सहारा नही,
तूफां इतना कि दिखता किनारा नहीं।
मेरी नैय्या का तू है मल्लाह,
जैसे राखो.....................................
छोड़ जाये ये सारा जमाना मुझे,
तू न जाना प्रभु ये कसम है तुझे।
मेरा कोई न तेरे सिवा,
जैसे राखो.......................................

245

मत भूलो श्री गुरू नाम को, जाना सागर पार है
गुरू नाम पतवार है
जीवन है छोटी सी नैय्या, जाना सागर पार है

गुरू नाम पतवार है...........................
लेकर गुरू का नाम जगत में कितनों ने भवपार किया
गुरू नाम की ज्योति ने कितने, जीवन को गुलजार किया
स्वार्थ की दुनियां में अपना, ये सच्चा आधार है
गुरू नाम पतवार है.............................
गुरू नाम को भजने का तो, कोई निश्चित काल नहीं
जब भी मौका मिले सुमिर ले, गुरू सा दीन दयाल नहीं
गुरू से ज्यादा गुरू नाम में, शक्ति की भरमार है
गुरू नाम पतवार है.............................
जीवन नैय्या सौंप गुरू को, तुम प्यारे अलमस्त बनो
शरणागत की हर पल रक्षा, करते हैं सतगुरू सुनो
भक्तों अब किस बात का डरना, रक्षक जब सरकार है
गुरू नाम पतवार है...........................

246

ये दुनिया बनाना और बनाके फिर चलाना,
ये उसी का काम है।
बड़ा जोर दार उसका इंतजाम है।।
रात ही को रात और प्रभात को प्रभात,
शाम हीं को शाम है।।
बड़ा जोरदार उसका इंतजाम है।
ये दुनिया बनाना और बनाके फिर चलाना...............
जल पे है थल और थल पे आसमाँ है,

फिर भी एक दूसरे पे न बोझ के समान है।
गजब का जहान है बिन खम्भ का मकान है।।
सारे जहाँ के देश चमन का गुलाम है,
बड़ा जोरदार उसका इंतजाम है।
ये दुनिया बनाना और बनाके फिर चलाना।।

247

ये गर्व भरा मस्तक मेरा हरि चरण धूल तक झुकने दो।
अहंकार विकार भरे मन को निज नाम की माला जपने दो।।
ये गर्व भरा--------

1. मैं मन की मैल को धो न सका और जीवन तेरा हो न सका।
मैं प्रेम में इतना झुक न सका गिर भी जो पड़ूँ तो उठने दो ।।
ये गर्व भरा------------

2. मैं मन की बातों में खोया और कर्महीन पड़कर सोया।
जब आँख खुली तो मैं रोया ज़ग सोये मुझको जगने दो।।
ये गर्व भरा-----------

3. कैसा भी हूँ मैं खोटा या खरा निर्दोष शरण में आ ही गया।
एक बार तो कह दो खाली जा या तो प्रीति की रीति झलकने दो।।
ये गर्व भरा-----------

248

ये मति कहाँ से पाई साधो,
बन्द-मोक्ष की कल्पना मिटाई साधो।
ये मति कहाँ से पाई साधो।।
दृष्टा दर्शन दृश्य त्रिपुटि से न्यारा है,
सब कुछ मैं ही मैं हूँ तारन हारा हूँ।
गुरू ने ये बात बताई साधो।।
ये मति कहाँ से पाई साधो..................
मैनूँ आत्मा हम बताया गुरा ने,
वेद विच सार पिलाया गुरू ने।
पीके मैं तो हो गई निहाल मेरे साधो,
ये मति कहाँ से पाई साधो.................
सत्गुरू की संगत प्यारे अजब निराली है,
वो ही संगत करसी जिसने अहमता भारी है।
अलख निरंजन आप अविनाशी साधो,
ये मति कहाँ से पाई साधो................

249

ये तन मन जीवन सुलग उठे, कोई ऐसी आग लगा दे,
दिल दूना हो विरह-वेदना, पल भर चैन न पाए रे।
ऐसी लौ हरिनाम की लगी रे, रह न जाये मेरा नाम,

मन वाणी से प्रभु पुकारूँ, तन से हो हरि भक्ति का काम,
हरि का हो सो रह जाये और मेरा सब जल जाए रे।।
मुझे पर्वत बनना पसन्द नहीं, अभिमान मान हर लो मेरा,
मैं प्रेम नगर का वासी हूँ, गुण ज्ञान ध्यान हर लो मेरा,
धरती के आँचल पर मेरी, राख बिखेरी जाए रे।।
जीवन की इस कठिन डगर पे तुझे पुकारूँ दीनानाथ,
दीनानाथ, दीनानाथ मेरे दीनानाथ मेरे दीनानाथ,
बड़े कठिन साधन से पाया अब न छोडू तेरा हाथ,
चाहे दुनिया दो रंगी है निर्दोष पे दोष लगाए रे।।
जीवन पथ पर थका है राही मार्ग चला नहीं जाता,
एक तरफ जग एक तरफ प्रभु मुझसे चुना नहीं जाता,
हाथ पकड़ कोई मुझ अंधे को प्रभु की ओर झुकाए रे।।

250

यहाँ वहाँ सारे जहाँ में तेरा राज हैं
तेरे ही तो सर पे मोहब्बत का ताज है।
ऐसे मेरे गुरू जी है जिन्दाबाद,
गुरूजी का प्यार है जिन्दाबाद।
बेसहारों का सहारा, गम के मारों का गुजारा,
तेरे दम से हाँ-हाँ दम से सत्संग है सारा।
तेरी नजर तो हम भक्तों पे आज हैं,
सभी भक्तों को गुरूजी पे नाज़ है।
ऐसे मेरे.....................................

तेरे लिए रस्में नहीं रस्में नहीं कसमें नहीं,
तू है केवल हाँ-हाँ केवल प्रेम के वश में ।
वही प्रेम वाला दिन गुरूजी आज है,
ऐसे मेरे....................................
प्रेम का तू पाठ पढ़ाता सबको सीने से लगाता,
हम भक्तों की हाँ-हाँ भक्तों की बिगड़ी बनाता।
तेरी अनन्त महिमा को गाते हम आज हैं,
तुम्हीं ने बचाई हम भक्तों की लाज है।
ऐसे मेरे.......................................

251

ये अवसर बार-बार नहीं आये,
तेरा जन्म-मरण मिट जाये।
जो सत्गुरू की शरण में आये,
ये अवसर..........................
ये संसार ओस का पानी,
पल छिन में उड़ जाये।
ये अवसर.....................................
तन छूटे धन कौन काम का,
फिर पीछे पछताये।
ये अवसर.................................
गुरु वचनों से सब भ्रम जाये,
एको ब्रह्म लखाये।

ये अवसर................................

जीते जी जो काटे वासना,

बहुरि जनम नहीं पाये।

ये अवसर................................

सब काटन को समरथ सत्गुरू,

जीवन मुक्ति कराये।

ये अवसर................................

जन्म-जन्म की पूंजी पाई,

प्रभु गुरू रूप में आये।

ये अवसर................................

552

ये मस्तों की महफिल में आके तो देखो।

जरा खुदी को अपनी मिटा के देखो।।

1. भूलेंगे नशे माया के सारे।

जरा गीत प्रेम का गा के तो देखों।।

2. बैठा है दिल में तेरे वो प्रेमी ।

जरा सिर को अपने झुका के तो देखों।।

3. भरेंगे भंडारे आनन्द के तेरे।

ये सतुगुरू को अपना बना के तो देखों।।

4. लहरे ही बन जायेगी खुद किनारा।

जरा गीत प्रेम का गा के तो देखों।।

253

यूं भला आप मोहन मुकर जायेगें।

तो भला हम से पापी किधर जायेंगे।।

1. जो तरेंगे नहीं तो ये सच जानिये।

आपका नाम बदनाम कर जायेंगे।।

2. चाहते कुछ हो रिश्वत तो है क्या भला।

हाँ गुनाहों के भण्डार भर जायेंगे।।

3. थीं जो नफरत तो घर में बिठाया ही क्यों।

जाय सर गैर के अब न घर जायेंगे।।

4. है यकीं चश्में बिन्दू अगर यह कहे।

तो तुम्हें करके तर खुद भी तर जायेगें।।

254

ये भेद सनम मुझे आज मिला,

मै और नहीं तू और नहीं।

जब दिल मे तेरी झलक पड़ी।

बह भरम गुमान अब दूर हुआ।।

आ तू ही है इस दिल मे बसा।

मै और नहीं तू और नहीं।।

कलियों ने जाकर गुल से कहां।

मै तुझमें ही था पहले से छुपा।।

तू न मुझसे जुदा न मै तुझसे जुदा।

दरिया की मौजों से लहर उठी।।

वह उलट के दरिया से कहने लगी।
मै तुझसे हुई और तुझमें फना।

255

ये दर है ऐसे दाता का जहाँ शरण सभी को मिलती है।
यह घर है ऐसे कृपालु का जहॉ सदा भीख सभी को मिलती है।।
यहॉ ऊँच नीच का भेद नही यह सबका हरी रखवाला है।
यह गुलशन ऐसे माली का दिल की कली जहॉ खिलती है।।
यहॉ सोच न तू अपने मन में वह सुनता तेरी देर नहीं।
मत दोषी बनाओ ईश्वर को यहाँ देर तो है अन्धेर नही।।
यहॉ ऐसे जज की अदालत है जहॉ झूठ बात नहीं चलती है।
यदि भवसागर से तरना है तो उसका सहारा तुम ले लो।।
बस राम नाम की पतवार नालो चौरासी में न दुख झेले।
ऐसा चतुर खेवैया है नही देर किसी को लगती है।।
जब नैन चकोर बने तेरे चन्दा न कर चमकेगा।
तुम प्रेम के बरसाओं मोती वह ज्ञान से झोली भर देगा।।
जो बेली युगो से सुखी है वह इनकी कृपा से फलती है।

256

ये जग दीवानो की बस्ती देखा सोच विचार।
देखा पागल सब संसार।।
कोई देखा धन का पागल पूजा करता धन की।
धन के कारण सब चैन गवाये शान्ति तज दी मन की।।
सखी री शान्ति तज दी मन की................

लाख लाख माया जोड़ी जोड-जोड गया हार।
कोई देखा रूप का पागल यौवन का मतवाला।।
पल पल जाये बीत जवानी जीवन है ढल जाना।
जिस यौवन का तू गर्व करे उस यौवन के दिन चार।।
कोई देखा सुख का पागल सुख-सुख करता जाय।
हरि मारण बिन सुख न पाये जा सुख आये फिर-जाये।।
इसका नही विचार।
हरि भगत भी पागल देखे गोविन्द के मतवाले।।
पिये पिलाये प्रेम प्याला बैठे जगत भुलाये।
मै मॉगू वही पागल पन उतरे नपही खुमार रे।।

257

ये मोहब्बत की बातें हैं ऊधो।
बन्दगी मेरे बस की नही है।।
यहॉ सर दे के होते है सौदे।
आशिकी इतनी सस्ती नही है।।
इश्क वालों ने कब वक्त देखा।
तेरी पूजा में पाबन्दियॉ है।।
यहॉ दम दम पर होती है पूजा।
सर उठाने की फुरसत नही है।
आज दिल से जो मस्ती में डूबे।।
होश कब है उन्हें जिन्दगी का।
जो चढ़ती उतरती है मस्ती।।

वो हकीहकत में मस्ती नहीं है।
यहाँ जामें बूँद रोज पीना।
मस्तों का यही है कहना।।
प्यार से एक बार जो पी ले।
वो नजर क्या जमाने को देखे।।
जिनकी नजरो में मालिक समाया।
जो नजर देख लेती है तुमको।।
वो नजर फिर तरसती नहीं है।

258

राम का नाम लेकर जो मर जाएँगे।
वे अमर नाम दुनिया में कर जाएँगे।।
यह न पूछो कि मरकर किधर जाएँगे।
वे जिधर भेज देंगे उधर जाएँगे।।
राम ....
यह मानो न मानो खुशी आपकी।
हम मुसाफिर है कल अपने घर जाएँगे।।
राम...............................
राम के नाम में है शक्ति बड़ी।
पापी भी भव-सिन्धु पार कर जायेंगे।।
राम ....
राम के नाम की माला टूटे नहीं।
वरना अनमोल मोती बिखर जायेंगे।।

राम ....

259

रोम-रोम में गुरू बसा लो हो जाये कल्याण रे।
बिना गुरू के नहीं किसी का मिटता है अज्ञान रे।।
1. गुरू हुए अवतरित धरा पर जग का पालन करने को,
मोह नींद में सोये जीवों का अज्ञान मिटाने को।
जागो-जागो भोले प्राणी आये गुरू जगाने को,
रोम-रोम ---------------------
2. ज्ञान दीप ले गुरू खड़े हैं तिमिर तेरा हर लेने को,
तू भी ले झट लाभ दीप का मन में उजाला भरने को।
गफलत में ना समय गँवाओ आए गुरू जगाने को,
रोम-रोम ---------------------
3. सफल तुम्हारा होगा जीवन रोम में गुरू बसाने से,
यश वैभव भी तभी मिलेगा मन में गुरू बसाने से।
गफलत में ना समय गँवाओ रोम में गुरू रमा लो रे,
रोम -रोम ------------------------

260

राम रस बरसे रे मनुवा, राम रस बरसे,
अरे मन मूरख क्यों तरसे........................
बूँद-बूँद में दया हरि की बरसे अम्बर से,

तू क्यों खड़ा ओट में पगले, भींगन के डर से
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह का छत्र हटा सर, से,
प्रेम नीर में भींग बाँवरे अन्दर बाहर से।
वृथा डोल रहा वन-वन में खोजत दर-दर से,
मन मन्दिर में राम बसत है, क्यों न चरण परसे।
राम रस बरसे रे मनुवा, राम रस बरसे।

261

राम रस बरसो री, आज मोरे आंगन में।।
युग युग से मेरे नैना प्यासे,
आज पिवत भई बिना पिलाये।
कहाँ बिठाऊँ मेरे सत्गुरू आये,
ठौर कोई कर दो री, आज मोरे आंगन में..............................
धरती नाचे अम्बर नाचे,
आदि देवता खुल कर नाचे।
मैं नाचूँ मेरे प्रभु जी नाचे,
रोम-रोम हरसो री, आज मोरे आंगन में.........................
जाग उठे सब सुन्दर सपने,
सभी पराये हो गये अपने।
लगे प्रेम की माला जपने
रोम-रोम हरसो री, आज मोरे आंगन में ....

262

राम नाम की नइया लेकर सतगुरू करे पुकार।
आओ मेरी नइया में ले जाऊँगा भव पार।।
इस नइया में जो कोई चढ़ जायेगा।
जनम-जनम का पाप सभी धुल जायेगा।।
कटे चौरासी के सब बंधन पड़े न यम की मार।
पाप गठरिया सिर पे धरी कैसे आऊ मैं।।
अपने ही अवगुण से खुद शरमाऊँ मैं।
साचा तेरा नाम है भगवन मेरे पाप हजार।।
करके दया सतगुरू ने चुनरियार रंग डाली।
जनम जनम की मैली चादर धो डाली।।
दाग भरी थी मेरी चुनरिया कद दी लालो लाल।
जीवन अपना सौंप दो मेरे हाथों में।।
श्वांस-श्वांस को तौल दो मेरी यादों में।
पाप-पुण्य का बनकर आया मैं तेरा खरीदार।।
बड़े भाग्य से सत्गुरू जी का प्यार मिला।
मुझ दुःखिया को जीने का आधार मिला।
लगी डूबने बीच भंवर में आ गया खेवन हार।।

263

रमता राम रमो मोरे जिया।
ज्ञानी ने गुप्त खजाना पा लिया।।
चतुष्ट साधन पलंग बिछाया,

ब्रहम ज्ञान का तकिया लगाया।
शांति का बिस्तर बिछा दिया।।
ज्ञानी ने..........................
ऐसी गहरी निंदरूँ आई,
जगत मैल न रहियो दिखाई।
अद्वैत राम पति वर लिया।।
ज्ञानी ने..............
जगृत स्वप्न शिषोपति उपाधि,
हमतो अद्वैत अखण्ड अनादि।
कर निश्चय मैने आजमा लिया।।
ज्ञानी ने ....
ज्यूँ सागर में बूँद समाई,
सन्त राम में भेद न भाई।
कर निश्चय मैंने आजमा लिया।।
ज्ञानी ने ....
न कोई बैरी मीत हमारो,
जित बल देखूँ उत बल प्यारो।
गुरू शब्द में मन को अटका लिया।।
ज्ञानी ....

264

रामा–रामा रटते–रटते बीती रे उमरिया।
रघुकुल नन्दन कब आओगे भिलनी की नगरिया।।

मै शिवरी भिलनी है भजन भाव क्या जानू रे।
राम तेरे दर्शन की खातिर वन मे जीवन पालू रे।।
चरण कमल से निर्मल कर दो दासी की झोपड़िया।
रोज सबेरे वन में जाके फल चुन–चुन कर लाऊँगी।
अपने प्रभु के सम्मुख रख कर प्रेम से भोग लागाऊँगी।।
मीठे–मीठे रैन की मर लाई रे झरिया।
रघुकुल नन्दन कब आवोगे भिलनी की नगरिया।।

265

राम धुन में हो जा मतवाला।
श्री राम धुन में हो जा मतवाला।।
इक मतवाली भई मीरा बाई।
विष का प्याला पियाय डाला।।
राम धुन........................
इक मतवाली भई शबरी भक्तिन।
जूठे बेर खिलाए डाला।
राम धुन ....
इक मतवाल हुआ अर्जुन योद्धा।
भगवन से रथ हकवाय डाला।।
राम धुन ....
इक मतवाला हुआ हनुमत योद्धा।
सोने की लंका जलाय डाला।।
राम धुन ....

इक मतवाला हुआ सत्गुरू मेरा।
मन से आजाद कराएं डाला।।
राम धुन........................

266

रंग देना रंग देना रंग देना,
गुरू चुनरी मेरी भक्ति के रंग में रंग देना।
रंग मांगू न लाल और पीला रे,
रंग मांगू न हरा और नीला रे।
गुरू चुनरी मेरी ....
रंग तेरा हर रंग से न्यारा रे,
यहीं लागे है रंग मुझे प्यारा रे।
गुरू चुनरी मेरी ....
इस दुनिया का हर रंग कच्चा रे,
तेरी भक्ति का रंग बड़ा पक्का रे।
गुरू चुनरी मेरी ....
मीरा शबरी मे जो रंग डाला रे,
रंग मांगू मै ऐसा मतवाला रे।
गुरू चुनरी मेरी ....

267

राम नाम के साबुन से जो मन का मैल छुडायेगा।
निर्मल मन के दर्पण में वह राम के दर्शन पायेगा।।
राम रोम में राम बसे है पल भर तुझसे दूर नहीं।

देख सके वो आँख जिन आँखों मे नूर नहीं।।
देखेगा मन मन्दिर में जो ज्ञान की ज्योति जगायेगा।
ये शरीर अनमोल रे प्राणी प्रभु कृपा से पाया हैं।।
इस झूठे प्रपंच में पड़कर को क्यों बिसराया हैं।
समय हाथ से निकल गया तो सिर धुन-धुन पछतायेगा।।
झूठ कपट निन्दा को त्यागो हर प्राणी से प्यार करो।
घर में आये अतिथि कोई तो यथा शक्ति सत्कार करो।।
न जाने किस भेष में आकर नारायण मिल जायेगा।
प्रीत तुम्हारी कच्ची है यदि प्रभु पर विश्वास नहीं।।
मंजिल का पाना है क्या यदि दीपक में प्रकाश नहीं।
निश्चय है तो भव सागर से बेड़ा पार हो जाएगा।।
माया का अभिमान है झूठा यह तो आनी जानी है।
राजा रंक हुये कितनो की सुनी कहानी है।।
राम नाम प्रिय महामंत्र हीं साथ तुम्हारे जायेगा।

268

रहमत से सत्गुरू की गुजारा है आजकल
अदने का कवरना कौन सहारा है आजकल
तुमने निगाह डाल कर कमाल कर दिया
बिगड़ी बना के मुझको मालोमाल कर दिया
बदला हुआ माहौल ये, सारा है आजकल
अदने का वरना.........................
खुशियों से सराबोर तुमने कर दिया हुजूर

चेहरे थे जर्द आपके सदके हैं नूरो–नूर
जीने का लुफ्त देखिये, न्याया है आजकल
अदने का वरना..........................
बस एक ही जनम में बेड़ा पार कर दिया
जन्मों के सिलसिले को तार–तार कर दिया
मंजिल का हुआ हमको, नजारा है आजकल
अदने का वरना..............................

269

रिमझिम बरसे अमृत धारा,
मन पिये गुरू शब्द विचारा।।
सब कुछ घर में बाहर नाहिं,
बाहर टोले सो भरम भुलाहीं।
गुरू प्रसादी जिन्हीं अन्तर पाया,
सो अन्तर बाहर सुहेला।
आनन्द विनोद रहे दिन राती,
सदा–सदा हरि केला।
जन्म–जन्म का बिछिड़यां मिलिया,
साध कृपा से सूखा हरिया।
जल तरंग ज्यों माहि समाया,
त्यों ज्योति संग ज्योति मिलाया।
कहू नानक भरम करे इक वारा,
फिर बहुर ना होवे चोला।

270

लगन सत्गुरू से लगा बैठे जो होगा देखा जायेगा।
उन्हें अपना बना बैठे जो होगा देखा जाएगा।
कभी दुनिया से डरते थे कि छुप–छुप प्यार करते थे,
कि अब पर्दा उठा बैठे, जो होगा ....
किया कुर्बान अपना दिल प्रभु के चरण कमलों में,
कि जीवन की बाजी लगा बैठे, जो होगा...........................
तुम्हारी बेरूखी से दिल जो मेरा टूट जायेगा,
रहेंगे हम न इस तन में, जो होगा.............................
माया के जाल में फँसकर अनेकों जन्म बीते हैं,
कि अब बन्धन छुड़ा बैठे, जो होगा...........................
तेरी लगन लगा करके, अनेको पापी तरते हैं,
कदम आगे बढ़ा बैठे, जो होगा................................

271

लोभी तुम तो फंस गये माया जाल में।
और खो दिया पाया था जो भी।।
राम नाम अनमोल खजाना जो तूने था पाया।
माया के चक्कर में फंस कर अपना आप गवाँया।।
सच्चे धन को छोड़ दिया और माया को अपनाया।
माया से तो प्रीत करि और प्रभु का नाम भुलाया।।
धन दौलत के जोश में आकर कर बैठे नादानी।
सत्य वचन अनमोल रतन की तूने कदर न जानी।।

बीत गया जो भूल जा उसको अब तो सोच विचार।
सत्य बचन से सत्गुरू तेरा करेगें बेड़ा पार।।

272

लुट रहा लुट रहा लुट रहा रे,
गुरू का खजाना देखौं लुट रहा रे।
लूट सके तो लूट ले बंदे काहे को देरी करता है,
ऐसा मौका फिर न मिलेगा सबकी झोली भरता है।
इनकी शरण में आ कर के जो भी मांगा मिल गया रे, लुट रहा.......
हाथों हाथ मिलेगा पश्चा ये दरबार निराला है।
घर-घर पूजा हो गुरूवर की भक्तों का रखवाला है,
जिसने भी इनका नाम लिया किस्मत का ताला।
खुल गया रे ....
गुरूवर जैसा इस दुनिया में दया न कोई करता है,
ऐसा दयालु मेरा गुरूवर सभी की झोली भरता है।
सत्संग में तुम आकर के खुशियों से झोली भर लो रे,

273

ले लो राम नाम संसारी।
रंग लो तन-मन चुनरिया सारी रे।।
काहे ढूँढे मथुरा, काशी, काहे तीर्थ प्रयागा।
काहे अन्दर नजरिया न डारी रे।।
दोनों में कोई भेद नहीं है, जो तू है वो भी तो वही।
मन से पर्दा हटाओं भारी रे।।

गुरू चरनन में शीश चढ़ाओं, आवा-गमन का चक्र मिटाओ।
हटे दुःख की बदरिया कारी रे।।

274

लगी वृन्दावन में एक दिन अदालत।
खडे माँ बदौलत खडे माँ बदौलत।।
हाकिम है राधे मुजरिम मुरारी।
हुआ जब अदालत से वारन्ट जारी।।
मुकदमा तुम्हारा हुकूमत हमारी।
बुला लो यथोदा को कर ले जमानत।।
इजलास पर जब पुकारे गुजरिया।
किसी ने दिखा दी है फूटी गगरिया।।
कहा राधिका ने बजा कर बँसुरिया।
दिन रात लूटे ये दिलों की गगरिया।।
सजा बोल दू तो बिंगड जाये हालत।
सरे आम बस इतनी सजा है तुम्हारी।।
बजाते रहो खड़े मुरली मुरारी।
पेशे नजर रहना बाँके बिहारी।।
रिहाई कभी न देगी राधे तुम्हारी।
बुला लो यशोदा को करा ले जमानत।।

275

लीला लगी है राम भजन वाली जै हो।
माता कहती सुन मेरी मीरा तू क्यों चली जाये।।

महल साड़ियाँ छोड़ के सन्तन की कुटिया भाई।
मीरा कहती सुन मेरी माता ये कुटिया मैनू भावे।।
इसमें रहदिया मेरे श्याम सुन्दर आवे।
माता कहती सुन मेरी मीरा ये क्यों चली जावे।।
सूट साडियाँ छोड़ के अंग भभूति लाई।
अंग भभूति पा लिया मेरा श्याम सुन्दर संगी।।
माता कहती सुन मेरी मीरा यह क्यों चली जाई।
हीरा मोती त्याग के गल तुलसी माला पाई।।
मीरा कहती सुन मेरी माता तुलसी माला प्यारी।
तुलसी माला पा दिया मिल जाये गिरधारी।।
मैया कहती सुन मेरी मीरा ये क्यों चली जाई।
अपना पति छोड़कर मोहन से प्रीत लगाई।।
मीरा कहती सुन मेरी माता ये पति है झूठा।
सच्चा पति मेरा श्याम सुन्दर जो सच्चे रास्ते पावे।।
आकाश से बीमान जो उतरे माता विट तक्के।
मीरा चढ़ बैंकुठ गई माता नू लागे धक्के।।

276

वेदों के मीठे वाक्य हैं सुन लो प्यार से।
दुई का नाश होता है आत्म-विचार से।।
वेदों के---------

1. मंजिल तो तेरी दूर है जाना जरूर है,

तन मन में शक्ति भर लो आत्म-विचार से।
दुई का-----------

2. ब्रह्म विचार कीजिए फिर जगत है कहाँ,
ये जगत दिखाई देता है भ्रम के आधार से।
दुई का----------

3. सुरती माता की गोद में जब खेलते थे हम,
माता प्यार करती है अच्छे विचार से।
दुई का-------------

277

वो जुबाँ कहाँ से लाऊँ जिससे करूँ मैं शुक्रिया,
तूने किया है ऐसा जादू मेरा होश भुला दिया है।
पिलाके अमृत रस का प्याला,इंसान बना दिया है।।
वो जुबाँ...
कितने बुरे थे हम तो तूने फिर भी उठा लिया है,
कितना कष्ट सहकर के भी मुझे अपना बना लिया है।
वो जुबाँ...
मेरे जनम-जनम के साथी मैंने अब तो तुझे पहचाना,
खुद कृष्ण बनकर के तूने मुझे अर्जुन बना दिया है।
वो जुबाँ...
बेगमपुर का बादशाह तूने हमको बना दिया है,
करके आत्म ज्ञान की वर्षा मुझे शेर बना दिया है।

वो जुबाँ...

मेरी नींद चुराने वाले अब कैसे तुझे भुलाऊँ,
वो कलम नहीं है मिलती जिससे शुक्राना लिख डालूँ।

वो जुबाँ...

मुझे प्यार सिखाने वाले अब कैसे तुझे भुलाऊँ,
दिल दिया जो मैंने तुझको अब कैसे किसे बिठाऊँ।

वो जुबाँ...

278

व्यर्थ चिन्तित हो रहे हो, व्यर्थ डर कर रो रहे हो ,
अजन्मा है अजर आत्मा, भय में जीवन खो रहे हो।।

1. जो हुआ अच्छा हुआ जो हो रहा अच्छा ही है,
होगा जो अच्छा ही होगा ये नियम सच्चा ही है,
कल भुला दो बोध करता आज क्यों रो रहे हो।

2. हुई भूल भूलों का फिर आज पश्चाताप क्यूँ,
कल क्या होगा अनिश्चित है फिर आज पश्चाताप क्यूँ।
जुट पड़ों कर्तव्य में तुम बाट किसकी जोह रहे हो,

3. क्या गया तुम रो पड़े, तुम लाये क्या थे खो दिया,
है हुआ क्या नष्ट तुमसे, ऐसा क्या था खो दिया।
व्यर्थ ग्लानि से भरा मन आँसुओं से धो रहो हो,

4. लेकर खाली हाथ आये, जो लिया यहीं से लिया,
जो लिया असितत्व से, उसको दिया यहीं पर दिया।
जान कर दस्तूर जग का, क्यों परेशा हो रहे हो,

5. जो तुम्हारा आज है कल वह ही था किसी और का,
होगा परसों जाने किसका ये नियम इस दौर का।
मगन हो अपना समझता दुखों को संजो रहे हो,

6. जिसको तुम मृत्यु समझते हो वो ही जीवन तुम्हारा,
है नियम जग का बदलना, क्या पराया क्या तुम्हारा।
एक क्षण कंगाल हो क्षण भर में धन से मोह रहे हो,

7. मेरा तेरा बड़ा छोटा भेद ये मन से मिटा दो,
सब तुम्हारे तुम सभी के फासले मन से हटा दो।
कितने जन्मों तक करोगे पाप कर तुम रो रहे हो,

8. उठो अपने आपको भगवान को अर्पित करो,
अपनी चिन्ता शोक और भय सब उन्हें अर्पित करो।
है वही उत्तम सहारा, यूँ सहारा खो रहे हो,

9. है किराये का मका न तुम इसके न ये तुम्हारा,
पंच तत्वों का बना घर देह कुछ दिन का सहारा।
इस में हो मुसाफिर इस कदर क्यूँ सो रहे हो,

10. जरा करो जो भी करो अर्पण करो भगवान को,
खुदी का कर दो सर्मपण त्याग कर अभिमान को।
मुक्ति का आनन्द अनुभव सर्वदा क्यों खो रहे हो,

279

वैसे तो नशे अनेक है पर ये नशा कुछ और है।
साकी जो पिलाये एक बार जिसे रहता है सदा खुमार उसे,
जीवन में वही खुश रहता है।

जो कुद काम कर दिखलाता है।।
वचनों को अमल मे जो लाता है।
गुरू भक्त वही कहलाता है।।
एक पल का अब तो भरोसा नहीं।
समय को न यो ही गवाना है।।
इस राह में आने वालो को।
अपनी ही लगन की जरूरत है।
दुनिया की जिसको चाह नहीं।।
राह में उसकी रूकावट नहीं।
जीते जी यहाँ तो मरना है।।
अपनी ही खुदी को मिटाना है।

280

शुकराना मेरे सत्गुरू अपना बना लिया,
वाणी ने मुझको आपकी जीना सिखा दिया।।
किरपा की छाया में बैठा लिया मुझे,
बैठा लिया मुझे।
दुखों की आँधियों से मुझको बचा लिया,
मुझको बचा लिया।।
वाणी ने मुझको.................
शुकराना.......................
जो मिल गया है मुझको दुनिया को क्या खबर,

दुनिया को क्या खबर।
अन्दर है सत्गुरू आपना मुझको बता दिया,
मुझको बता दिया।
वाणी ने मुझको.................
शुकराना...............................
सब ठीक है सब ठीक है ये मंत्र है दिया,
यह मन्त्र है दिया।
उसकी रजा में राजी रहना सिखा दिया,
रहना सिखा दिया।।
वाणी ने मुझको.................
शुकराना ....

281

तेरी साधना ही मेरी जिंदगी हो।
रजा हो जो तेरी वो मेरी खुशी हो।।
1. मेरे दिल में हरदम तेरी लौ लगी हो,
फिकर हो जो दिल में हो अपनी खता का।
जिकर हो जो लब पे वो तेरी वफा का।।
रजा हो---------
2. मुझे हर कदम पे हो तेरा इशारा,
मेरी हर नजर में हो तेरा नजारा।
उठे जो सदा वो तेरी बंदगी हो,

रजा हो-----------

3. मैं साधक हूँ इसके सिवा कुछ नहीं हूँ,
मैं तेरा हूँ तुझसे जुदा कुछ नहीं हूँ।
यहीं गीत लब पे मेरे हर घड़ी हो,
रजा हो---------------

282

श्याम तुम होगे शमा काफूर हो जाऊंगा मैं।।
1. मैं अगर मांगू तो मांगू तुम न कुछ देना मुझे,
वरना प्रेमी नहीं मजदूर हो जाऊंगा मैं।
2. मैं अगर देखूं तो देखूं तुम न मुझको देखना,
तुमने गर देखा तो फिर मशहूर हो जाऊंगा मैं।
3. मैं अगर चाहूं तो चाहूं तुम न मुझको चाहना,
तुमने गर चाहा तो फिर मगरूर हो जाऊंगा मैं।
4. मैं अगर तड़पू तो तड़पू आसूं बरसाना न तुम,
वरना आँखों से तेरे दूर हो जाऊंगा मैं।

283

शुक्रिया है प्यार तेरा शुक्रिया।-3
आँखों को आँसू दिये जो मोतियों से कम नहीं।।
दिल को इतने गम दिये, जो अब कोई भी गम नहीं।
मेहरबाँ जो कुछ दिया अच्छा किया जिन्दगी के सब विकारों,
से तूने छुड़ा दिया।।

इस जीवन में ज्ञान के अमर खजाने दे दिये।
मेहरबाँ जो कुछ दिया अच्छा दिया.........................
प्रेम के इन आँसुओं ने दिल के दाग धो दिये।।
इस नशे ने माया के सब नशे भुला दिया।
मेहरबाँ जो कुछ दिया अच्छा दिया..........................
इस प्रेम में सारी दुनिया को मैंने भुला दिया।।
प्रेम के जरिये से मैने अपने प्रभु को पा लिया।
मेहरबाँ जो कुछ दिया अच्छा दिया............................

284

शरण सत्गुरू की ले प्राणी जीवन धारा बदल जाये,
कमा गुरू सेवा और भक्ति जन्म ये हो सफल जाये।
हकीकत में जनम मानुष मिला भक्ति के ही कारण,
कहीं अवसर सुनहरा यह न गफलत मे निकल जाये,
गुरू का शब्द सुखकारी यदि हर स्वासँ ध्यायेगा।
तेरे रास्ते की हर मुश्किल गुरू कृपा से टल जाये,
सौंप दे नाव जीवन की गुरू नाविक के हाथो में।
अगम भव डूबता बेड़ा यकीनन ही सम्भल जाये,
गुरू वचनों के साँचें मे तू जीवन डाल दे अपना।
प्रभु की याद में ही बस तेरा हर एक पल जाये।।

285

शुकराना, शुकराना सत्गुरू मेरे तेरा शुकराना,
शुकराना, शुकराना - 2

मुझपे हो गई मेहर गुरू की,
कर दी प्रभु ने नजर प्रेम की।
ऐसे सत्गुरू पे मैं वारी जावा,
मैं वारी जावा।।–4
हर राह को शूल रहित किया,
फूलों से उसे ऐसे भर दिया।
ऐसे प्रेम में भिगोए डाला,
भिगोए डाला।। – 4
प्रभु तेरे कैसे एहसाँ चुकाएँ,
जन्मों तक यूँ ही महिमा गाएं।
फिर भी न तेरा मैं पार पावां,
न पार पावा।।–4

286

सत्गुरू तुम हो मेरे कुम्हार,
मैं माटी यही धरती की।
धरती करे पुकार।।
वो माटी भी क्या माटी थी रूँदती थी जग माहि,
पाँव तले आती थी सबके गुरू ने लिया उबार।
हाथ उठाकर कीन्हीं सफाई और किया तैयार।।
सत्गुरू तुम हो................................
भाव का जल इसमें डाला तो माटी हुई निहाल,
चाक चढ़ाकर रूप उभारा कितनी करी सँभाल।

सहलाकर तू अन्तर को घुल गई तत्काल।।
सत्गुरू तुम हो................................
ज्ञान की अग्नि इस माटी को दिन–दिन रंग चढ़ाए,
प्रेम के उपलों के अनुभव से और दिया बढ़ाए।
तपकर सजकर लागी ये बोलन तू मेरा करतार।।
सत्गुरू तुम हो................................
ये माटी बन गई अब तो फूलों का गुलदान,
महकाये जीवन सबका दे करके प्रेम का दान।
धन्य है माटी धन्य है माली धन्य है अवतार।।
सत्गुरू तुम हो ....

287

सारे जहाँ के मालिक तेरा ही आसरा है।
राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है।।
हम क्या बताएं तुझको सब कुछ तुम्हें खबर है,
हर हाल में हमारी, तेरी तरफ नजर है।
किस्मत है वो हमारी जो तेरा फैसला है।।
राजी हैं ....
हाथों को हम दुआ की खातिर उठाएं कैसे,
सजदे में तेरे आकर सर को झुकाएं कैसे।
मजबूरियां हमारी सब तू ही जानता है।।
राजी हैं.......................................
रोकर कटे या हँसकर कटती है जिन्दगानी,

तू गम दे या खुशी दे सब तेरी मेहरबानी।
तेरी खुशी समझकर सब गम भुला दिया है।।
राजी हैं ....

288

सत्गुरू को पाते हैं वही दिल में जिनके सच्चा प्यार है।
सदा फिरते हैं वो खोए-खोए रहता दिल भी उनका बेकरार है।।
नहीं गरज उनको जमाने से, बने रहते हैं वो दिवाने से।
नहीं चाह इज्जत मान की, गुरू कृपा ही दरकार है।।
सत्गुरू को पाते हैं..................................
कोई चिन्ता न कोई फिकर हैं, सदा गुरू का ही जिकर है।
जाये खाली कोई स्वांस न, क्योंकि जिन्दगी दिन चार है।।
सत्गुरू को पाते ....
सत्गुरू पे होते जो फिदा, नहीं कोई उनका और खुदा।
नहीं रूकती धारा प्रेम की, हो जाता जब दीदार है।।
सत्गुरू को पाते ....
सारे तीरथ गुरू चरणों में हैं, छूटा है जनम मरण नहीं।
नहीं पाप पुण्य की चिंता है, सच्ची सिर पे जब सरकार है।।
सत्गुरू को पाते ....

289

सत्गुरू से नेह लगा ले तू उनको ही रिझा ले।
आयें है आयें हैं आयें हैं तारन हार।।
दुनिया की प्रीत का तज दे आधार तू।

अपने प्रभु का पाले सच्चा प्यार तू।।
छोड़ तू सब झमेले सत्गुरू की शरण ले लें। आये..........
सत्गुरू के चरणों में पाई सच्ची खुशियां,
होती है तृप्त उनके दर्शन से अँखियाँ।
गुरू सम नहीं देव दूजा करो उनकी सेवा पूजा।। आयें......
दिल में सच्चा प्रेम जब तक ना समाये।
हरि गिज पवित्रता न इन्सा में।। आयें..........
अपने पहिचान सत्गुरू आप है करते,
दासो का दास अपने सेवक को बनाते।
लगाके सच्ची लग्न रहे गुरू भक्ति में मगन।। आयें..........

290

सत्गुरू का दरबार है, नित नई मौज बहार है।।
1 आओं प्रेमियों भर लो झोली भक्ति का भंडार हैं,
चाहे राजा चाहे हो राणा, चाहे हो कंगाल जी।
लेकर श्रृद्ध जो भी आवें, सत्गुरू करे निहाल जी,
ऐसी मौज बहार हैं बैठी सच सरकार हैं।।
आओ प्रेमियों...................
2 प्रेम भक्ति और सच्चाई का, यही ही एक खजाना हैं,
मिली है सच्ची राहत उनको, जिन्होंने इनको माना हैं।
जो भी आवे शरण गुरू की निश्चय भव से पार हैं।।

आओ प्रेमियों..................

3 इस दरबार की शान है ऊँची, शोभा अजब निराली हैं,
कली कली और पत्ता पत्ता मुस्काए हर डाली हैं।
सच का यह व्यापार हैं, किसी और न सरोकार है।।

आओ प्रेमियों................

4 दासा के जन भागों वालें, जिन्होंने ये दरबार पाया हैं,
चरणों की रज मस्तक पर धर सब अज्ञान मिटाया हैं।
सच्चा ये करतार हैं सब जग तारन हार हैं।।

आओ प्रेमियों.................

291

सत्गुरू कमाल हो सत्गुरू दयाल हो।
नूरों के नूर शहनशाह तुम बेमिसाल हो।।

सत्गुरू.......................

जीवन बदल दी पल में जिस पर पड़ी नजर,
इंसान बने हैं भगवन तेरी हो मेह नजर।
चरणों में आये जो भी बन्दा निहाल हो।।

सत्गुरू ----------------

देखे कोई चलन तेरा कोई ठाठ देखता,
ब्रह्म ज्ञान सुने एक बार तेरा वो बाट देखता।
आये समझ न जग को तुम वो सवाल हो।।

सत्गुरू --------------

292

सुख भी मुझे प्यारे हैं दुःख भी मुझे प्यारे हैं।
माँगू मैं किसे भगवन दोनों ही तुम्हारे हैं।।

1. दुःख–सुख ही मानव को इन्सान बनाते हैं।
संसार की नदियों के दोनों ही किनारे हैं।।

सुख ----------------

2. जिसमें हो रजा तेरी मैं देऊँ दखल कैसे?
चख के भी न देखूँ मैं मीठे या खट्टे हैं।

सुख ----------------

3. जिसमें हो रजा तेरी मर्जी से मुझे दे दो।
मैं कैसे कहूँ भगवन ये दे दो या वो दे दो।।

4. सुख में तुझे याद करूँ दुःख में शुकराना गाऊँ।
बस याद में तेरी मुझको ये भाव सभाले हैं।।

सुख ---------------------

293

सुरता चढ़ गई रे अटरिया मगन भई,
मगन भई रामा, मगन भई सुरता चढ़-----------,

1. निज आकाश में आसन मारे महाशून्य विस्तारा,
बिना शीश के नाचे अप्सरा बिन पायल झनकारा।

देखो सारी ये नजरिया मगन भई,

सुरता चढ़ ---------------------

2. चाँद-सूरज-तारागण नाहि बिना ज्योति उजियारा,

बिन बादल के बरसा होवे बरसे अमृत धारा।

देखों सारी ये नजरिया मगन भई,

सुरता चढ़ -------------------,

3. अगम निगम दोनों से न्यारा सत्य पुरूष दरबार,

लाखों आशिक मिले खाक में काहू न पावे पारा।

भूले माया में डगरिया मगन भई,

सुरता चढ़ -----------------

4. मस्त गुरू के चरण कमल में पायो भेद अपारा,

हीरादास जी इन नयनों से सतगुरू रूप निहारा।

बैठे निर्भय की कोठरिया मगन भई,

सुरता चढ़ ----------------

294

सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिए।

जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए।।

1. मुख में हो राम नाम राम सेवा हाथ में,

तू अकेला नहीं प्यारे राम तेरे साथ में।

फल आशा त्याग शुभ काम करते रहिए,

जाहि विधि-----------

2. किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा,

होगा वही प्यारे जो श्री रामजी को भायेगा।

विधि का विधान जान हानि लाभ सहिए,

जाहि विधि-----------

3. जीवन की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के,

महलों में राखे चाहे झोपड़ी में वास दे।

धन्यवाद निर्विवाद राम-राम कहिए,

जाहि विधि-----------

4. आशा एक राम जी की दूजी आशा छोड़ दे,

नाता एक रामजी से दूजा नाता तोड़ दे।

साधु संग राम रंग राम रंग रंगिए,

जाहि विधि-----------

295

सतगुरू से लगन मेरी लागी रहे,

ब्रह्माकार वृत्ति मेरी जागी रहे।

सदा विषयों से मन बैरागी रहे।।

1. हो जाऊँ मैं तुझमें ऐसी मगन,

न भुलाएँ तेरी माया हो ऐसा जतन।

वचनों में सदा लौ लागी रहे,

ब्रह्माकार वृत्ति----------

2. सब कुछ करते हुए भी अकर्ता रहूँ,

ध्यान तेरा गुरूजी मैं धरता रहूँ।

मन सदा ही तेरा अनुरागी रहें,

ब्रह्माकार वृत्ति----------

3 जगत दूषण नहीं हैं भूषण मेरा,

न कोई संगी नही कोई बैरी मेरा।

ऐसी अखण्ड वृत्ति मेरी जागी रहे,

ब्रह्माकार वृत्ति----------

296

साये में तुम्हारे हैं किस्मत ये हमारी हैं।

कुर्बान दिलो जान है ये शान तुम्हारी है।।

1. तूने तो हजारों की तकदीर सवारी है,

एक बार तो हाँ कह दो अबकी मेरी बारी है।

2. जलवा बड़ा दिलकश है सूरत बड़ी प्यारी है,

देखे जो अदा तेरी सौ जान पे भारी है।

3. मैं दास तुम्हारा हूँ भगवान हमारे हो,

ये बात अगर सच है सच करके दिखा देना।

4. मैं एक भिखारी हूँ तू दाता हर दर का,

बस एक नजर तेरी दौलत मेरी सारी है।

5. एक नजरे कर्म कर दो चरणों में जगह दे दो,

हम लाख बुरे ही सही पर दास तुम्हारे है।

6. तस्वीर तेरी हमने दिल में जो उतारी है,

सौ आइने तोड़े है तब जाके उतारी है।

297

संसार के जीवों पर आशा न रखा करना।

जब कोई न हो अपना हरी ओम जपा करना।। -2

जीवन के समुंदर में तूफ़ान भी आते हैं,

जो उनके सहारे हैं वो आके बचाते हैं।

भगवान भी कहते हैं जीवों पे दया करना,

जब कोई न हो----------

दावा न जमा लेना ये देश बीराना है,

इस घर में तुझे प्राणी वापस नहीं आना है।

भगवान भी कहते हैं अपनों पे दया करना,

जब कोई न हो---------

ऐ भक्त न दुःख से रो तुझसे प्रभु दूर नहीं,

भक्तों का दुःखी होना दाता को मंजूर नहीं।

वो आप ही आयेंगे तुम याद किया करना,

जब कोई न हो-----------

298

सत्गुरू बिन जो हरि मिल जाये,

हरि मिलने पर भी मन का भेद भरम न जाये।

वो तो है माया पति बनकर माया में हर्षाये,

जीव जगत की रचना करके सबकी नाच नचाये।

सुख के हेतु सब भटक रहे हैं भव बन्धन मिट जाये,

ज्ञान बिना आनन्द कहाँ है गुरू बिन ज्ञान न आये।

भाग्य जगे जब सत्गुरू हरि बन जीवन में आये,

जीव ब्रह्म की एकता करके सत्य सकल लखाये।

जीवन मुक्त तभी हो प्राणी ज सत्गुरू उपनाये,

कह प्रेमी गुरू कृपा प्रथम हो, फिर हरि ध्यान लगाये।।

सत्गुरू...........................

299

साधो चुप का है संसार,

क्या कहूँ मय कह न सकता हूँ।।

अदभुत है बिस्तारा,

धरती भी चुप हे गगन भी चुप है।

चुप है जल परिवारा,

पावन पावक सूरज चुप है।

चुप है चाँद और तारा,

साधो चुप का है संसार।

ब्रह्मा भी चुप हैं विष्णु भी चुप हैं,

चुप हैं सकल संसारा।

अगम भी चुप हैं निगम भी चुप हैं,

चुप है सकल संसारा।

साधों चुप का है संसारा.............

अन्तर चुप हैं बाहर चुप हैं,

चुप है गगन का तारा।

आगे भी चुप हैं पीछे भी चुप हैं,

चुप सृजन हारा।

साधो चुप का है संसारा.................

हम भी चुप हैं तुम भी चुप हो,

चुप है सकल संसारा।

सर्वानन्द चुप में चुप हैं,

चुप में कर दीदारा।

साधो चुप का है संसारा...............

300

सत्गुरू है प्रेम वाला नैनों में जादू डाला।

ऐसा किया है मस्ताना हाय मैं सदके जावा।।

दुनिया ने डाला घेरा लेकिन मैं हो गया तेरा,

अपना बना के मेरी जान हाय मैं सद के जावां।
मुझको इक प्यार मिला सच्चा दीदार मिला,
ऐसा दिया है ब्रह्मज्ञान हाय मैं सद के जावा।
सबसे है प्रेम कराया मरके है जीना सिखाया,
तन–मन मैं करूँ कुरबान हाय मैं सदके जावा।
रंग में रगाया मुझको कह न सकी मैं कुछ भी,
भर–भर पिलाया मुझे जाम हाय मैं सदके जावा।
बेगमपुर का है सत्गुरू जिसने किया है वादा,
सबमें दिखाया भगवान हाय मैं सदके जावा।

301

सत्गुरू मिले मेरे सारे दुःख बिसरे।
अतंर के पट खुल गयो रे।।
ज्ञान की ज्योति जली घट भीतर,
कोटि करम सब जल गयो रे....................
पाँच चोर लुटे थे दिन राती,
आस से आप ही टल गयो रे ....
बिन दीपक भयो उजियारो,
तिमिर कहाँ जाने नस गयो रे ....
त्रिवेणी से धार बहत है,
अष्ट कमल दल खिल गयो रे............................
कोटि भानु मेरी भयो उचियारो,

और ही रंग बदल गयो रे ....
अढ़सठ तीरथ है घट भीतर,
आप से आप ही मिल गयो रे ....
गगन मंडल से वर्षा होई,
अमीय कुण्ड रस भर गयो रे.................................

302

संत जगत में आते हैं,जग तारन के लिए।
आधि, व्याधि, उपाधि, अविद्या टारन के लिए।।
1. संत की महिमा वेद न जाने,
गुरू ग्रन्थ कहलाते हैं।
नारद भी वीणा को लेकर
गीत संतो का गातें है।।
धरम रखने जग में आए हैं, तारन के लिए,
आधि व्याधि...................................
2.प्रेम किया प्रहलाद प्रभु से,
भव सागर से पार हुआ।
नरसिंह रूप धरे नारायण,
पृथ्वी पर अवतार लिया।
राम–गुरू में भेद न जानो, तारन के लिए..............
3. सूरत से एक मूरत बनकर,
संत जगत में आतें हैं।
सेवा, श्रद्धा, कीर्तन करके,

चारों पदार्थ पातें हैं।
रावण रूपी मन की ममता मारन के लिए..................

303

सत्य यथार्थ बात न मनियो, जहाँ तहाँ ठोकर खाना है।
विकल होय मन मानत नाहीं, ऐसा मूढ़ नादाना है।।
1. सुन्दर फूल देख सेंमल का,
सुग्गा मन ललचाना है।
बुड्डी फोड़ धुआँ जब निकला,
मन ही मन पछताना है।
सत्य यथार्थ बात न मनियों,
जहाँ तहाँ ठोकर खाना है।।
2. जेठ मास की तपे दुपहरी,
लआँ लगे घबराय है।
कहत कबीर सुनो भई साधो,
प्रभु के ढिग ही जाना है
सत्य यथार्थ बात न मनियों,
जहाँ तहाँ ठोकर खाना है।
विकल होयं मन मानत नाहीं,
ऐसा मूढ़ नादाना है।।

304

सारे नामों में गुरू नाम बड़ा प्यारा है।
राजमाता के भगवान बड़ा प्यारा है।।

भक्त वत्सल मेरा भगवान बड़ा प्यारा है।
राम के नाम की मदिरा पियो पीने वालो।।
गुरू के प्रेम का ये जाम बड़ा प्यारा है।
पार हो जायेगें हम नाम गुरू का लेके।।
सच तो ये है कि गुरू नाम बड़ा प्यारा है।
किसलिए जाऊ भला काशी या मथुरा नगरी।।
मेरे गुरूदेव का ये धाम बड़ा प्यारा है।
राधा कहती है हँस हँस के सभी सखियों से।।
मुरली वाला मेरा धनश्याम बड़ा प्यारा है।

305

सोई बड़े भाग जो सत्गुरू पाये।
सत्गुरू पाये आतमा मे जाये।।
बुरा न सुनता बुरा न देखता।
बुरा न सोचता बुरा न कहता।।
सबको वो ही भाय सोई ....
जिसके दिल में द्वेष नहीं है।
ऊँच नीच का भेद नहीं है।।
सोई दर्शन पाये-सोई....................
सुख दुख को सम करके जानो।
प्रेम ही सबसे ऊँचा मानो।।
धीरज दिल में धारे सोई....................
तन मन धन की ममता मिटाये।

ममता मिटाये आत्मा मे जाये।।
सोई दर्शन पाये–सोई.......................

306

सत्गुरू पूरे देव मिले,
फिर दूजा देव बनावा क्यों।
आतम् रस वाले आतम् मिल गये,
वन–वन खोजन जावा क्यों।।
1. मैं सत्गुरू की सत्गुरू मेरे,
वो और नहीं मैं और नहीं।
जब ऐसा निश्चय जान लिया,
फिर और से प्रीत लगावा क्यों
2. सत्गुरू ने पूरण ज्ञान दिया,
भव तरने का सामान दिया।
फिर पोथी पुस्तक में पन्नों में,
बेमतलब ध्यान लगावा क्यों।
3. सत्गुरू शब्द घट भीतर में,
सत्य शब्द प्रकाश हुआ।
मन मन्दिर ज्योति बिराज रही,
फिर दीपक और जलावा क्यों।

307

सफल हुआ है उन्हीं का जीवन,
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।

उन्हीं की पूजा हुई है पूरण,
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।
1. न पाया तुझको अमीर बन के,
न पाया तुझको गरीब बन के।
उन्हीं को तेरा हुआ है दर्शन,
जो तेरे.................................
2. जहां भी जिसने तुम्हें पुकारा,
दिया है तुने उसे सहारा।
कटे है उनके दुःखों के बंधन,
जो तेरे.......................................
3. होशियार बन कें तुम्हीं को खोया,
अन्जान बनके दिन रात रोया।
अपने को खोकर तुम्ही को पाया,
जो तेरे..

308

सूरज की गर्मी से जलते हुए तन को मिल जाये,
तरूवर की छाया।
ऐसा ही सुख मेरे मन को मिला है,
मै जब से शरण तेरी आया मेरे राम।।
भटका हुआ ये मन था मेरा मिल न रहा था सहारा,
लहरो से लड़ती हुई नाव को जैसे मिल न रहा था किनारा,
उस लड़खड़ाती हुई नाव को जैसे किसी ने किनारा दिखाया।

शीतल बने आग चंदन के जैसे राघव कृपा जो हो तेरी,
उजली पूनम की हो जाये रातें जो थी अमावस अधेरी।
युग–युग से प्यासी मरू भूमि ने जैसे सावन का संदेश पाया,
जिस राह की मंजिल तेरा मिलन हो उस पर कदम मै बढ़ाऊ।
फूलों में कांटों में पतझड़ बहारो में मै न कभी डगमगाऊ,
पानी के प्यासे को तकदीर ने जैसे जी भर के अमृत पिलाया।

309

सत्गुरू हो तोरी तिरछी नजरिया।।
1. साँवरी सूरत मोहिंनी मूरत,
हिया में बस गई तोरी सूरतिया।
सत्गुरू हो तोरी ....
2. तुम जो रूठे दुनिया रूठी,
भारी पड़ गई अब तो उमरिया।
सत्गुरू हो तोरी...
3. सत्गुरू हो मोरी बिगड़ी बना दो,
भई बदनाम मैं तो सारी नगरिया।
सत्गुरू हो तोरी..

310

सत्गुरू रहते है सब घट अंदर,
कौन कहता है दिखते नहीं है।
जिनकी आँखो में परदा पड़ा है,
ऐसे लोगो को दिखते नहीं है।।

सोच लो दिल लगाने से पहले,
दुनिया बदनाम कर देगी तुमको।
प्रेम को चाहे जितना छिपाओ ,
ये छिपाने से छिपता नही है।।
लोग कहते है कांटों से बचना,
मैने फूलो से दामन बचाया।
इस कदर हमने खाये है धोखे,
अब किसी पर भरोसा नही है।।
ये मोहब्बत नहीं है तो क्या है,
ये हकीकत नहीं और क्या है।
ध्यान देते है उन पर गुरूवर,
जिसने अनुभव के सजदे दिये है।।
चाँद से न देना तुम मिसाले,
निगाहे भ्रम नहीं तो और क्या है।
चाँद मे दाग देखे है सबने,
मेरे साहिबा मे धब्बा नहीं हैं।।
रात दिन मै तुम्हे देखती हूँ,
प्यास नैनो की बुझती नहीं है।
ऐसा महसूस होता है मुझको,
जैसे बरसों से देखा नही है।।

311

सुख सम्पत्ति सब दीन्हा हो सत्गुरू अपना बनाई के मालो माल कर।

दीन्हा हो सत्गुरू अपना बनाई के।।

इतना बड़ा एहसान किया है।

1. तन मन धन लेकर ज्ञान दिया है।।

खाली झोली थी भर दीन्हा हो सत्गुरू अपना........................

2. हर रंग में हरि को दर्शाया।

ईश्वर का दीदार कराया।

सागर गागर में भर दीन्हा हो सत्गुरू अपना.................

3. भूला हुआ था राह दिखाया।

हर मुश्किल आसान बनाया।।

पर्वत राई कर दीन्हा हो सत्गुरू अपना...............................

4. नित इस मुख से हरि गुण गाऊँ।

चरण कमल पर शीश झुकाऊँ।।

दुःख दरिद्र हर लीन्हा हो सत्गुरू अपना.......................

312

सत्गुरू प्यारे ने हमको बचाया है।

हँसने लगी जिन्दगी मन मुस्काया है।।

दिव्य दृष्टि देकर के अंधेरा मिटाया है।

नजरे नूरानी से स्वरूप लखाया है।।

गिर गये थे हमतो गुरू ने उठाया है।

अवगुण नहीं देखे गले से लगाया है।।

अनमोल खजाना देकर बादशाह बनाया है।

विषयों के कीचड़ में गिरने से बचाया है।।

मुरझाया मन का कमल गुरू ने खिलाया है।

भूल गये थे हँसना गुरू ने हँसाया है।

संसार सागर से गुरू ने तराया है।।

मन पर जन्मों से गफलत का पर्दा था।

दुई का पर्दा हटा कर नींद से जगाया है।।

कैसे भूलूँ रहमते तन मन चमकाया है।

313

सच्चिदानन्द है तू ब्रह्मानन्द है तू जीव माना।

बन गया क्यों देह में दीवाना।।

अपने अज्ञान में तू भरमाया।

शेर होके तू हो मै मे आया।।

मेरा घर बार है मेरा परिवार है कूड़ा खजाना।

बन गया ....

होके अविनाशी जन्मा मरा है।

रस्सी को साँप ज्ञान के डरा है।।

यही भ्रम भूल है तुझको नित शूल है।

सपने को सच है माना।।

बन गया ....

तेरी माया ही तुझको रिझाये।

जाल रच रच के तुझको दिखाये।।

खेल नित खेलता कष्ट नित झेलता।
बन अभागा बन गया.....................
देह मानुष की अविनाशी पाई।।
कर ले भक्ति की अब तो कमाई।
शुद्ध दर्पण बना रूप लख तू अपना पुराना।।
बन गया ....

314

सुमिरन कर ले रे मना।
बीती जाये उमरिया हरि नाम बिना।।
पंछी पंख बिना हस्ति दन्त बिन नारी पुरूष बिन।
सुमिरन ....
जैसे पुत्र पिता बिन हीना वैसे ही प्राणी हरी नाम बिना।
देह नैन बिन, रैन चन्द्र बिन धरती मेह बिन।।
रेमना, सुमिरन ....
जैसे पंडित वेद बिन हीनष से ही प्राणी हरिनाम बिना।
धेनु धीर बिन कूप नीर बिन मन्दिर दीप बिना।।
रे मन ....
जैसे तरूवर फल बिन हीना, वैसे ही प्राणी हरि नाम बिना।
काम क्रोध मद लोभ निवारो माया छोडो संत जना।।
नानक कहत सुनो भगवन्ता या जग में नहि काहू अपना।
रे मन ....

315

सवाली सबके आगे हाथ फैलाने से क्या होगा,
प्रभु से माँग दर दर ठोकरें खाने से क्या होगा।
वही दाता वही भरता है झोली हर भिखारी की,
बनाता है वही तकदीर अपने हर पुजारी की,
उसी की याद कर नादान धबराने से क्या होगा।
हसीनों की नजर दिल का मुकददर लूट लेती है।।
तुसाफिर को धधकती रेत अकसर लूट लेती है।
जहाँ धोखा ही धोखा है वहाँ जाने से क्या होगा।।
जिसे तू ढूँढता है वह तेरे दिल में हाजिर है।
उसे तू देख सकता है वह तेरे दिल में है।।
कहीं जाने से क्या होगा कही आने से क्या होगा।

316

हे जगत पिता हे जग दाता,
हम आपसे प्रीती कर बैठे।
एक दिल के सिवा कुछ और न था,
वो दिल भी तुम्हारा कर बैठे।।
तस्वीर तेरी को जब देखा,
बेहोश हुए मदहोश हुए।
देखा जब मोहिनी मूरत को,
चरणों में झुका कर सर बैठे।। हे..........
दिल लेकर मिल न सको मुझको,

तो निज चरणों के पास बुलाओ।
जब पकड़ा आपके दामन को,
तेरा ही सहारा कर बैठे।। हे................
हम तो रंग गए तेरे रंग में,
रंगनें वाले सुन अरज मेरी।
जब छोड़ा दुनिया के प्यारों को,
तेरे प्यार का हिल्ला कर बैठे।। हे..........
पलकों में छुपा लूँ गुरूदेव तुम्हें,
तन, मन, धन सब कुरबान करूँ।
ना कुछ खोया था सब पाया है,
तेरी प्रीत से झोली भर बैठे।।
हे..................

317

हर घड़ी ये करामात होती नहीं।
रोज रहमत की बरसात होती नहीं।।
बरस जाती है यूँ तो कई बदलियाँ,
स्वाती बूंदों की बरसात होती नहीं।
इसका जलाल देखिये और नूर देखिये,
नजरें मिला के नजर का सुरूर देखिये
अंदाज बयाँ देखियें इस मेहरबान का,
झगड़ा मिटा के रख दिया धर्मों ईमान का।
जो एकता सिखाता है ये वो ही पीर है,

सबको गले लगाता है ये वो ही पीर है।।
यूँ दूर से न देखिये आ जाइये करीब,
आ जाइये बन जायेगा बिगड़ा हुआ नसीब।
बात बन जायेगी बात मानो अगर,
कि खत्म बातों से वो बात होती नहीं।
बुझते चिराग जलते हैं जलते चिराग से।
हर बात सोचते हो ये सोचो दिमाग से।।
अन्धे को अन्ध रास्ता दिखायेगा किस तरह?
बन्दी को बन्दी मुक्त करायेगा किस तरह?
तालीम क्या मिलेगी जो उस्ताद ही नहीं।
क्या पास होगा जिसको सबक याद ही नहीं।।
न पार लगा कोई मल्लाह के बिना।
सब डूब गये बीच में अल्लाह के बिना।।
साथ ले लो इसे साथ रहता है ये।
जबकि परछाई भी साथ होती नहीं।।
इसके सिवा जहाँ में कोई दूसरा नहीं।
ये आसरा है और कोई आसरा नहीं।।
हस्ती को इसकी देख लो हस्ती को मिटा के।
जो मांगना है माँग लो दामन को फैला के।।
बरबाद न हो जाये ये शाम, सबेरे में जिन्दगी।
मिल जायेगा खुदा गर कर लो बन्दगी।।
लोगों मुझे ही देख लो हीरा बना दिया।

गोदावरी भगवान ने जीना सिखा दिया।।
बहुत देखे है दुनिया में रहबर मगर।
हर किसी पे ये सौगात होतीं नहीं।।

318

हर, हाल में प्रभु का शुकराना कीज़िये।
चाहे सुख दे चाहे दुःख दे हँस–हँस के लीजिए।।
दुनिया चला रहा है हिम्मत तो उसकी देखो।
सबको खिला रहा है कृपा तो उसकी देखो।।
न शिकवा किसी से न शिकायत किसी से,
हर हाल ....
मानुष जन्म दिया है उपकार कर दिया है।
सत्संग मुझं दिया है आनन्द भर दिया है।।
ऐसे प्रभु का पल–पल गुणगान कीजिए।
हर हाल ....
मारूखा अगर रखे तो इसमें भलाई।
अगर देदे हलवा पूड़ी तो भी भलाई।।
कुछ भी अगर न मिले तो व्रत ही कीजिये।
हर हाल ....
अपने तो कई करम हैं क्यों दोष दे रहा है।
इल्जाम प्रभु को देकर क्यों पाप ले रहा है।।
सोते बैठते ही चर्चा ही कीजिये।
हर हाल ....

पल में जो मौत आये पिछले हैं कई कर्म।
जो तड़पा के मारे कोई दुष्कर्म है।।
जैसे भी रखे तो वाह वाही कीजिए।
हर हाल ....
सुख आये तो न फूलों इसमें सदा न रहना।
दुःख आये ता न तड़पो इसने भी लौट जाना।।
सुख दुःख है एक नियामत।
हँस–हँस के लीजिये।।

319

हम निज आनन्द में मस्त सदा संसार बिचारा क्या जाने?
कोई गुरु मुख इसको जान सके मन मुख विचारा क्या जाने?
नीह अन्तर जग का राम यहाँ, निरन्तर से अनुराग यहाँ।
है भीतर जग का त्याग यहाँ इसे स्वार्थ बिचारा क्या जाने।।
यहाँ अहं ब्रह्म फुंकार उठी, कोई भाव हमारा क्या जाने।
यहाँ किसी वस्तु की चाह नहीं, यहाँ काँटों की परवाह नहीं।।
यहाँ आनन्द की कुछ थाह नहीं, कोई काम कटारा क्या जाने।
यहाँ मीठा सागर बहता है, मझधार में प्रेमी रहता है।।
हँस–हँस के यही कहता है, जग स्वाद हमारा क्या जाने।
वहाँ हार में रहती जीत सदा, फटकार में रहती प्रीत सदा।।
प्रीति की यही है रीत सदा, ईर्ष्या बिचारा क्या जाने।
यहाँ प्रेम भी है एक त्याग भरा, आनन्द सिन्धु–सागर भरा।।

इस प्रेम में नहीं कुछ दाग जरा, जग दर्द का मारा क्या जाने।
यहाँ चारों ओर मधुरता है, यहाँ आनन्द का झरना बहता है।।
प्रेमी पर निर्भर करता है, जग खारा हमको क्या जाने।।

320

हरी को बिसारो ना हरी ना बिसारेंगे।
घिर-घिर आये विपदा हरि दुख टालेंगे।।
1. हरि है हजार हाथ हरि है अनाथ-नाथ,
मेरी भी नईया हरि पार उतारेंगे।
हरी को-----------
2. मोर मुकुट वाले हैं भक्तों के रखवाले हैं,
मेरी भी नैया हरि पार उतारेंगे।
हरी को-----------
3. भक्तों के पालक हैं दुष्टों के घातक है,
हरि-हरि बोल प्यारें हरि ही उबारेंगे।
हरी को-----------

321

हैं धन्य जगत में वो प्रेमी जिसने प्यार प्रभु का पाया हैं।
प्रीतम की प्रीति के पीछे जग सारे को ठुकराया हैं।।
1. दुनिया की मान बढ़ाई की परवाह नहीं करते हैं प्रेमी।
दिल जान की बाजी लगा करके सतगुरू को अपना बनाया हैं।।

हैं धन्य ....
2. रहती हैं सदा दिल में ये लगन कब रीझेंगे स्वामी मेरे।
हो मगन सदा इस धुन में ही सारा संसार भुलाया हैं।।
हैं धन्य-----------
3. दिल की तख्ती को साफ किया जो जन्म-जन्म से थी काली।
श्रद्धा-विश्वास अटल रखके घट में ही दर्शन पाया है।।
हैं धन्य-------------
4. रग-रग में इश्क की आग लगी सुख चैन भुलाए हैं सारे।
गुरू वचनों में होकर सदके मैंने सत्गुरू को पाया है।।
हैं धन्य--------------

322

हम सब मिल के आए दाता तेरे दरबार।
भर दे झोली प्रभुजी तेरे पूर्ण भंडार।।
हम सब---------
1. होवे जब संध्याकाल निर्मल होके तत्काल,
अपना मस्तक झुका के करके तेरा ख्याल।
तेरे दर पे आके बैठे सारा परिवार,
भरदे झोली..................
2. लेके दिल में फरियाद करके हम तुमको याद,
जब हो मुश्किल की घड़ियाँ माँगे तुमसे इकदात।

सबसे बढ़के हो जाए जग में तेरा आधार,

भर दे झोली-----------

3. चाहे दिन हो विपरीत होवे तुमसे ही प्रीत,

सच्ची श्रद्धा से गाएं तेरी भक्ति के गीत।

होवे सबका प्रभुजी तेरे चरणों में प्यार,

भर दे झोली------

4. तू हैं सब जग का माली करता सबकी रखवाली,

हम सब हैं रंग-रंग के पौधे तू है हम सबका माली।

बगच बगीचा है ये तेरा सुंदर संसार,

भर दे झोली--------

323

हरि नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली-गली,

लूट लो जिसको जी चाहे मैं शोर मचाऊँ गली-गली। (2)

धर जोगी का भेस आज मैं अलख जगाऊँ गली-गली।। (2)

1. जिस-जिस ने ये मोती लूटे वो सब माला माल हुए,

दुनिया के जो बने पुजारी आखिर वो कमाल हुए।

सोना-चाँदी माया वाली मैं समझाऊँ गली-गली।। हरी............

2. दुनिया के सुख-दुःख तब तक जब तक हैं ज्ञान नहीं,

ईश्वर को जो भूल गया है वह सच्चा इन्सान नहीं।

रोज भंग का माला फेरी ध्यान सिखाऊँ गली-गली।। हरि...........

किस प्रकार से हरि भक्तों ने इस ईश्वर को पाया है,

और ईश्वर ने कैसे अपने भक्तों को अपनाया है।

तुलसी नरसी मीरा का इतिहास सुनाऊँ गली-गली।। हरि...........

अर्जुन को जब मोह ने घेरा तब हरि ने उपदेश दिया,

ज्ञान की ज्योति जगाई ऐसी सारा संशय दूर किया।

गीता उपनिषद् का ज्ञान सुनाऊँ गली-गली।। हरि..................

324

होवे सच्चा प्यार क्यों न मिले कन्हइया।

जुड़े तार से तार क्यों न मिले कन्हइया।।

जो तू भजन करे दिन-राती।

श्याम सुन्दर बन जाये साखी।।

शरण में हो एक बार, क्यों न मिले.............

दुनिया से तू मन को हटा ले।

गुरू चरणों में ध्यान लगा ले।।

मन से तज अहंकार, क्यों न मिले ....

पिता ने प्रहलाद सताया और।

अग्नि के खम्भ लगाया।।

नरसिंह लियो अवतार, क्यों न मिले................

वन में बैठी भिलनी माई।

राम नाम से लगन लगाई।।

आ गये अवध कुमार, क्यों न मिले.....................

325

हर वक्त हँसी हर वक्त खुशी,
हर वक्त अमीरी है बाबा।
जब आशिक मस्त फकीर बना,
फिर क्या दिल गीरी है बाबा।।
दिन को सूरज की महफिल है,
रात को तारों की बारात बाबा
हर रोज मेरे लिए होली है,
हर रात मेरी दिवाली है।।
हर रोज मेरे लिये शादी है,
हर रोज मुबारक वादी है।
हर रोज मेरी गुलजारी है,
ये ज्ञान की इक फुलवारी है।
हम आशिक उसी सनम के है,
जो दिलबर सबसे आला है।
दिल उसका ही दीवाना है,
मन उसका ही मस्ताना है।।

326

हम प्रेम नगर में रहते हैं।
जो बन आए सो सहते हैं।।
और मुख से कुछ नहीं कहते हैं,
यहाँ शादी गमी की रीत नहीं।

यह देश ही एक निराला है,
नहीं कंठी है नहीं माला है।
सब घरों का एक ही ताला है,
कोई मन्दिर और मस्जिद नहीं।
यहाँ शहनशाह का वासा है,
पग–पग पर खेल तमाशा है।
निकले सब कर्मा का फांसा है,
कोई हार नहीं कोई जीत नहीं।
यहाँ मन को मार भगाया है,
नहीं दुनिया है नहीं काया है।
अपना ही आप समाया है,
कोई मीत नहीं अमीत नहीं।
जब जीव ईश का भेद मिटा,
दुनिया के झगड़े खत्म हुए।
तब औरों से कोई प्रीत नहीं,
तेरा मेरा की रीत नहीं।

327

हे गुरू, हे दयालु,
मेरे साहिब आप हैं।
आप माने या न मानें,
मेरे खातिब आप हैं। हे गुरू................................
श्वाँस लेती हूँ तो यूँ महसूस होता है मुझे,

जैसे मेरे दिल की हर धड़कन में शामिल आप है,
हे गुरू..
गम नहीं जो लाख तूफानों से टकराना पड़े,
मैं वो कश्ती हूँ कि, जिस कश्ती के साहिल आप है,
हे गुरू..
जन्म नहीं मरण नहीं मैं तो आतम रूप हूँ,
सच का यह रूप तूने दिखलाया, तू बेमिसाल है,
हे गुरू..

328

होंगे किसी के लाखो मेरा सहारा तुम हो।
तुम बिन गुजर है मुश्किल मेरा गुजारा तुम हो।।
मझधार में थी नइया तुमने ही है सम्भाला।
करके जतन तुम्ही ने तूफान से निकाला।।
माझी तुम्हीं हो मेरे पतवार मेरे तुम हो।
भटकू न अब कभी मैं मुझको नजर वो दे दो।।
सब्रोशुकर भी दे दो अपना ये दर भी दे दो।
रहे गुरू की याद हरदम सब कुछ हमारा तुम हो।।
महसूस यूँ हुआ जो दिल मे कमल खिले है।
मुश्किल हुई है आसा खुसियों के सिलसिले है।।
मेरी नजर भी तुम हो मेरा नजारा तुम हो।

329

हरि नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली-गली,
लूट लो जिसको जी चाहे मैं शोर मचाऊँ गली-गली। (2)
धर जोगी का भेस आज मैं अलख जगाऊँ गली-गली।। (2)
1. जिस-जिस ने ये मोती लूटे वो सब माला माल हुए,
दुनिया के जो बने पुजारी आखिर वो कमाल हुए।
सोना-चाँदी माया वाली मैं समझाऊँ गली-गली।। हरी............
2. दुनिया के सुख-दुःख तब तक जब तक हैं ज्ञान नहीं,
ईश्वर को जो भूल गया है वह सच्चा इन्सान नहीं।
रोज भंग का माला फेरी ध्यान सिखाऊँ गली-गली।। हरि...........
किस प्रकार से हरि भक्तों ने इस ईश्वर को पाया है,
और ईश्वर ने कैसे अपने भक्तों को अपनाया है।
तुलसी नरसी मीरा का इतिहास सुनाऊँ गली-गली।। हरि...........
अर्जुन को जब मोह ने घेरा तब हरि ने उपदेश दिया,
ज्ञान की ज्योति जगाई ऐसी सारा संशय दूर किया।
गीता उपनिषद् का ज्ञान सुनाऊँ गली-गली।। हरि................

330

हर श्वांस मे हो सुमिरन तेरा।
यू ही बीत जाएगा जीवन मेरा।।
तेरी पूजा करते बीते सांझ सवेरा।

यूं ही बीत जायेगा जीवन मेरा।।
नैना की खिड़की से हर पल तुझको मै निहारूँ।
मन में बिठाऊँ तेरी आरती उतारूँ।।
डाले रहूँ मै तेरे चरणो मे डेरा।
यूं ही बीत जायेगा......................
जो भी तेरा प्यारा हो मेरे दिल का तारा हो।
तेरे सिर का ताज मेरी अँखियो का तारा हो।।
सब मे निहारूँ तेरा रूप सुनहरा।
यूं ही बीत जायेगा........................
प्यार हो सत्कार हो एतबार हो तुम्हारा।।
आनन्द भी हो साथ मेरी याद का इशारा।
सब मे निहारू तेरा रूप सुनहरा।।
यूं ही बीत जायेगा......................
प्रभु मै तेरे दर पे काटू जिन्दगानी।
मेरे सतगुरू कर दे मुझपे जरा सी मेहरबानी।।
हो आसमां पर तेरा डेरा।
यूं ही बीत जायेगा........................

331

हम अपनी धुन में गाते हैं,
मैं ही तुम हो तुम ही मैं हूँ।
ये खुद की बात बताते हैं,
मैं ही तुम हो तुम ही मैं हूँ।

घट के पट बन्द रहें जब तक,
हम तक भूले भटके थे।
मिट गया अंधेरा तब समझो,
मैं ही ....
काशी, प्रयाग, मथुरा, भटके,
जंगल जंगल ढूंढा डटकें।
जब सत्गुरू का आदेश हुआ,
मैं ही तुम...........................
साकार सगुण कोई माने,
निराकार निर्गुण कोई जानें।
हमको इससे क्या मतलब है,
मैं ही तुम..........................
अलगर्ज कोई भी गर्ज नहीं,
ये गर्ज तो आखिर खतम हुआ।
सत्गुरू ये दया बताते है,
मै ही तुम..........................

332

हमारे गुरू मिले ब्रह्मज्ञानी।
पाई अमर निशानी।।
काग पलट गुरू हँसा कीन्ही, दीन्ही नाम निशानी,
हँसा पहुँचे सुख सागर में मुक्ति भरे जहाँ पानी।
हमारे गुरू ....

जल में कुंभ कुंभ मे जल है बाहर भीतर पानी,
बिक्षो जल कुंभ जल माहीं समाया ये गति बिरले जानी।
हमारे गुरू ....
अनुभव का ज्ञान उजलता की वाणी ये है अकथ कहानीं,
कहत कबीर गूंगे की सेना जिन जानी तिन मानी।
हमारे गुरू ....

333

हुआ तेरी उल्फल में मन मतवाला,
होश गवांई पीके प्रेम पियाला।
प्यार की शमा जब से दिल में जली है,
हर एक बला मेरें सिर से टली है।
हुआ मारफत का दिल में उजाला,
होश गंवाई..
चरणों में तेरे है संसार मेरा,
तू ही है सत्‌गुरू प्राणाधार मेरा।
तेरे प्यार का छाया नशा है निराला,
होश गवांई..
सर्वस्व अपना मैं तुझपे लुटाऊं,
तेरी ही चाहत के सदा गीत गाऊं।
जपता रहूं तेरे नाम की माला,
होश गंवाई..
जर्जर है नैय्या और दूर किनारा,

तेरे दास का बस तेरा हीं सहारा।
डूबते जीवों का तू है रखवाला,
होश गवांई..

334

हे मेरें प्यारे गुरूजी हे मरे अपने गुरूजी।
तुझपे दिल कुर्बान।।
तू ही मेरीं आरजू तू हीं मेरीं आबरू।
तू ही मेरीं जान।।
तेरे फारम से जो आये उन हवाओ को सलाम।
चूम लूँ हर उस जुबा को जिस पे आये तेरा नाम।।
सबसे अच्छीं सुबह तेरी सबसे अच्छी तेरी शाम।
तुझपे दिल कुर्बान।।
गुरू का ज्ञान बनके कभीं सीने से लग जाता है तू।
और कभी आतम का निश्चय बन के छा जाता है तू।।
कितना अच्छठा संत्सग तेरा कितना अच्छा तेरा ज्ञान।
तुझपे दिल कुर्बान।।

335

हमारे गुरू ऐसा गहना दिया।
गहना दिया मोहे पहना दिया।।
टूटे न फूटे होय न मैला।
दिन-दिन उजला किया हमारे...................

हीरे लगे है पन्ने लगे है।
लालों से जड़ है दिया हमारे......................
गहना पहन मैं ऐसी मगन भई।
राम–नाम ले लिया हमारे.........................
इस गहने को बिरला ही जाने।
हृदय में धर दिया हमारे.........................
कहत कबीर सुनो भई साधो।
जन्म सुफल कर दिया हमारे......................

336

हृदय में बारम्बार मिले हर पल तेरा दीदार मिले।
हे नाथ तुम्हारी कृपा से ये प्रेम लगन लागी मन में।।
ये प्यास तेरे दर्शन की सत्कर्मो से जागी मन में।
बलिहारी है उन चरणों की जो सत्गुरू बन इकबार मिले।।
तेरे नाम की ज्योति लेकर के, तेरी एक राह पर चलता हूँ।
कोई लेले लाभ या न ले मै अपने आप मे बढ़ता हूँ।।
मैं साज हूँ तेरे साजों का तेरे सुर में मेरे साज मिले।
जब सब कुछ मालिक तेरा है अपमान मान भी है तेरा।।
मैं प्रेम से सब स्वीकार करूँ हे दाता जब तू है मेरा।
तेरी रजा में मै राजी हूँ चाहे जीत मिले या हार मिले।।
जब से पाई है शरण तेरी मैने सारे रंजो गम दूर हुए।
हे सतचित आनन्द दर्शन कर ये नयन मेरे एक नूर हुए।।
कोई गैर नहीं सब तू ही है, तू ही बनकर भगवान मिले।।

337

हम लाये है ब्रह्माकार वृति गुरू द्वार से।
इस वृति को रखना मेरे मनवा सम्भल के।।
देखो यह वृत्ति ब्रहम से पलटा नही खाये।
दे छोड अमृत रस विषय जहर नहीं खाये।
शम दम दया विवेक को रखना संम्भाल के।।
न समझ इसे वृति यह तो है महान धन।
मिल जाये इसी से तुझे पूर्ण परमानन्द।।
मैत्री, करूणा मुदिता संग करना विहार रे।
माना कि सच्चिदानन्द स्वरूप है तेरा।।
पाए बिना इसी के तो कटेगा नही फेरा।
अब आ गई है मंजिल जरा हो जा होशियार रे।।

338

हम अपनी झाँकी देख चुके।
फिर दूसरी झाँकी क्या देखे।।
जब अमर निशानी आ चमकी।
फिर दुनिया फानी क्या देखे।।
सड़को में पले या महलो में पले।
पर चाहे यहाँ कुछ मिले न मिले।।
दीदार जो शहनशाह का हुआ।
तस्वीर गुलामों की क्या देखे।।
जब समझ गये फिर उलझे क्यों।

जो खोया था वह पा ही लिया।।
जब दिल की गली में रौनक हैं।
फिर बाजार में जाकर क्या देखे।।
हसरत भरी लोगों की खुशी।
पल पल में रंग बदलती है।।
हम आत्म सुख में चूर हुए।
फिर रूप बनावट क्या देखे।
इन्सान सभी की आँखों में।।
अपनी ही सूरत दिखती है।
मतलब तो है सबका एक ही है।।
फिर भेद की दृष्टि क्यों देखे।

339

हे गोविन्द राखे शरण अब तो जीवन हारे।
नीर पीवत हेतु गयो सिन्धु के किनारे।।
सिन्धु बीच बसत ग्राह चरण धर पधारे।
चार पहर युद्ध भयो ले गयो मझधारे।।
नाक कान डूबन लगे कृष्ण को पुकारे।
द्वारिका से शब्द सुनि गरूड़ चढ़ पधारे।।
ग्राह को हरि मार के गजराज को उबारे।
सूर श्याम मगन भये नन्द के दुलारे।।
तेरो मेरो भाव है नन्द के दुलारे।

340

हम आये हैं शरण में गुरूदेव आपकी।
हमको शरण में राखो मेहरबानी आपकी।।
हमने सुनी है आपकी चर्चा गली गली।
गोदावरी भगवान है बलियों के भी बली।।
सुनकर ये चर्चा शरण आये है आपकी
हमको शरण ....
जो कुछ सुनी थी महिमा वह पाई है आप में।
जो गुण गुरू में होते है वो सब है आप में।।
अब आप मेरे स्वामी मै दासी हूँ आप की।
हमको शरण ....
मन के ही कारावास में हम कैद थे सभी।
आजाद मन से हो नहीं सकते थे कभी।।
आजादी आप ने है दी बलिहारी आपकी।
हमको शरण ....
ब्रह्मा है विष्णु आप है शंकर भी आप है।
सब जय मना रहे है प्रभु आज आपकी।।
हमको शरण ....

341

हे प्रभु! हे प्रभु! हमको तेरी कसम,
तेरी राहों पर जाँ तक लुटा जायेंगे।
फूल क्या चीज है, तेरे कदमों में हम,

भेंट अपने सरों की चढ़ा जायेंगे।।
सह चुकें हैं सितम हम बहुत माया के,
अब करेंगे हर एक वार का सामना।
झुक सकेगा न सर अब भरोसे का सर
चाहे हो खूनी तलवार का सामना।।
सर पे बाँधे कफन हम तो हँसते हुए
मौत को भी गले से लगा जायेंगे।।
हे प्रभु............................
कोई गुजरात से कोई पंजाब से,
कोई यू.पी. से कोई बंगाल से।
तेरी पूजा की थाली में लायें है हम,
फूल हर रंग के आज हर डाल के।।
नाम कुछ भी सही पर लगन एक है,
ज्योति से ज्योति दिल की लगा जायेंगे।।
हे प्रभु...................................
जल संतों की अर्थी उठे धूम से,
ज्ञान वालों तुम आँसू बहाना नहीं।
पर विषय भोग की आग में जब घिरो,
उस घड़ी तुम उन्हें भूल जाना नहीं।
लौट के आ सके, जो जहाँ में तो क्या,
याद बन के दिलों में वो छा जायेंगे।।
हे प्रभु.............................

342

हम तेरी अदा पर फिदा हो गये,
दोनों दुनिया सभी अलविदा हो गये।।
1. अब न जन्नत की ख्वाहिश न दो जग का डर,
दिल की औकात क्या हम खुद ही खो गये।
2. अब खुदा की इबादत की आदत गई,
हम ही तुम हो गये तुम ही हम हो गये।
3. बेवफा तुमसा कोई न देखा सुना,
फिर भी लौटे न वो तेरे दर जो गये।
4. बेवफा की वफाई है सच्ची वफा,
राज वो जानते जो तेरे हो गये।

343

हमसा जहाँ में कहाँ किसका नसीब है।
हम सब अपने गुरु के करीब है।।
1. प्यारे गुरु से जिसने दिल को लगाया।
जन्नत का सुख उसने चरणों में पाया।
सत्गुरू हमारा देखो पीरों का पीर है।
2. गुरू ने ही हमको यहाँ प्रेम सिखाया।
प्रेम से ही जग में रहना सिखाया।।
गुरू ने कहा है प्रेम सबसे पुनीत है।
3. सारे जहाँ से प्यारा गुरू है हमारा।
हम सबके ही प्राणों का प्यारा।।

गुरू से न प्यारा कोई दुनिया में मीत है।
4. आओ गुरू के प्यारो मिलकर आओ।
प्यार से गुरू जी की महिमा गाओं।।
गुरू महिमा से प्यारा कोई न गीत है।

344

ज्ञान मिला भगवान मिला,
जीवन में अचानक सब कुछ मिला।
देह नहीं तू आत्मा सतगुरू से पहला,
सबका मिला ....
सत्संग एक सौगात है एक अजब इत्तफाक हैं।
संत समागम हरि कथा दुर्लभ दोनों बात हैं।।
हरि ओम्-2-2
सत्संग आलीशान है पूरा गुरू भगवान हैं।
भेद मिटाये गम भुलाए करता आप समान हैं।।
हरि ओम्-2-2
ज्ञान की एक बरसात है और संतों का साथ है।
मानुष जन्म है गुरू अंग-अंग है सबका पाया साथ है।।
हरि ओम्-2-2
सत्गुरू प्यारे की सदा याद करो कुर्बानियाँ।
गुरू ही सत्य है गुरू ही नित्य है बाकी सब है निशानियाँ।।
हरि ओम्-2-2

345

ज्ञान मिल गया है अब तो मुस्कुराइये।
प्रेमियों को साथ लेके भजन गाइये।।
देखिये ये क्या हसीन जिन्दगी,
मिल गई है करके उसकी बन्दगी।
अब समय अपना न यूँ गँवाइये,
प्रेमियों ....
होठों पे सदा ही तेरा नाम हो,
दिल में तेरे सदा प्रभु का धाम हो।
रोज सत्संग की बगिया सजाइये,
प्रेमियों ....
तुमको तेरा कभी भी न भान हो,
दिन उसी की हो उसीकी शाम हो।
नींद में भी धुन उसकी लगाइये,
प्रेमियों ....
एक क्षण भी तू उसे न भूलना,
माया में प्रेमी अब न डोलना।
अब तो जगत के रिश्ते मिटाइये,
प्रेमियों ....
ये जगत तो एक तेरा सराय है,
आ जा तू तुझे गुरू बुलाए है।
आइये आइये आ भी जाइये,

346

श्री लखनऊ धाम की धरती पर,

मेरा सतगुरू भगवान रहता हैं।

वो नाम प्रभु का लेता है और नाम प्रभु का देता हैं।।

1. वो पीर फकीर नवी सच्चा, ईश्वर से सीधा नाता हैं,

कोई भँवर नहीं मझधार नहीं वो सीधी राह बताता हैं।

बेपरवाह घर और माल से वो बस भाव का भूखा रहता हैं।।

2. एक नजर से चुकता कर देता, वो जनम-जनम का खाता है,

जो शरण में उसकी आता है, कुछ और ही होकर जाता हैं।

एक नजर करम पाकर उसकी, पत्थर भी किनारा पाता हैं।।

3. बिन जिह्वा के बिन होठों के, कोई अद्भुत नाम जपाता है,

उनके मुख से जो शब्द सुने, भीतर अनहद सुन पाता है।

अपना बल समरथ देकर वो सहज समाधी देता है।।

4. तन पर सुंदर वस्त्र है और मुखड़ा भोला भाला है,

कुदरत ने उसकी आँखों में एक मयखाना-सा खोला है।

जो दर्शन का रस पीता है वो पुनर्जन्म नहीं पाता है।।

5. संतो के भी भगवन्त हैं, नहीं कोई भरम भुलावा है,

मैने खुद अपनी आँखों से यह सारा नजारा देखा है।

निश्चल और निर्मल मन में वो सदा हाजिर-नाजिर रहता है।।